SHRIMATI RENUKA CHOWDHU-RY; I am concluding, Sir. Regarding the present Ram Janam Bhoomi-Babri Masjid controversy and conflict, nobody can disagree that we are Indians first. I had made a sincere request and recommendation to the then Defence Minister, Mr. K. C. Pant when Mr. Rajiv Gandhi was the Prime Minister that India after independene has not built any monument in memory of the unknown soldier. Subsequently the Indian Army has been overused. We had the Operation Blue-star. We had the IPKF services who have fought with one hand tied behind them. They went in the guest of peace and laid down their lives. No recognition has been given. Let us now declare this property as a tribute to the unknown Indian solider as a symbol of secularism. Let the Hindus and the Muslims who are fighting over this piece of geography of my country unite and come forward for this soldier who is fighting for this India and tricolour. These are just a few suggestions. Last but not the least to concentrate on nation building it has to start from the school level. We should teach our children that they are Indians first and Indians last. Thank you,

.. STATEMENT BY MINISTER—

Clarification Re. arrival of Minister of State for Foreign Affairs from Iraq-.

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA): Mr, Vice-Chairman, Sir, the Iraqi Minister of State for Foreign Affairs, Mr. Mohammad Saeed Al-Sahhaf, was scheduled to land at Delhi Intemational Airport at 6. 30 p. m. by a special place. This information was given to us by the Iraqi Embassy in Delhi.

[THE DEPUTY CHAIRMAN, in the Chair.]

At 5. 30 p. m. when Deputy Minister in the Ministry of External Affairs accompanied by senior officials of the Ministry was leaving for the airport, we got the message that the plane had already landed. At the time of landing one Deputy Secretary of the Ministry of External Affairs and two representatives of the Protocol Division were present at the airport. The Deputy Minister, Shri Digvijay Singh, who was supposed to receive Mr. Mohammad Sa'eed Al-Sahliaf, rushed to the hotel and received the Iraqi Minister there. The Iraqi side well understood the situation and everything is going on normally.

SHRI H. HANUMANTHAPPA (Karnataka); When the scheduled time of the plane was 6. 30 p. m. how did it arrive at 5. 30 p. m. ? How did it land one hour early? Is there any explanation on this from the Government?

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLAi,. Madam, this has happened because of the security reasons. Therefore, they have changed the time of landing. The tail ___

SHRI H. HANUMANTHAPPA: By keeping the Government in darkness?

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: There is no problem with the Government or the Iraqi Ambassador or the Iraqi delegation. In fifteen minutes (from now we are going to start - our deliberations and everything is absolutely normal. There is no cause of worry (for the hon. Members.

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE COMMUNAL SITUATION IN THE COUNTRY *(jcontd.)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now we will continue with the communal situation. Shri Ram Naresh Yadtv.

[THE VICE-CHAIRMAN, **(SHRl** M. A. BABY1 in the Chair 1

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश) : महोदय आज सांप्रदायिकता के संबंध मे

जो चर्चा हो रही है वह इस बात का सबूत है कि सचमुच में यह सदन के लिये ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिये चिंता का विषय बना हुआ है। जब कोई प्रश्न पूरे देश के लिये चिंता का विषय बन जाता है तो यह आवश्यक ही जाता है कि ऐसे प्रश्न पर बहुत गंभीरता के साथ हम लोग विचार करें और गंभीरता के साथ जब विचार करने की बात आती है तो मैं यह भी कहना चाहता हूं कि हमें इस प्रश्न को दलगत भावनाओं से ऊपर उठकर राष्ट्रीय समस्या समझ करके गंभीरता के साथ विचार करना चाहिये। ताकि देश के अन्दर जो इस सांप्रदायिकता से उत्पन्न सारी समस्यायें हैं, उनका निराकरण हो सके। देश के ऊपर समय-समय पर जो चुनौतियां दिखायी पड़ती हैं, उनका भी जमकर के सारे दल मुकाबला कर सकें। ऐसी स्थिति में जबकि देश में सांप्रदायिक दंगे और तनाव दिखायी पड़ते हैं पूरे देश में तो यह और भी चिंता का विषय है क्यों कि देश के 11 सूबों में यह आंच इतनी तेजी से फैली है कि उससे बहुत से लोग मरे हैं, झुलसे हैं,। साथ ही बहुत-सी संपत्ति का भी नुकसान हुआ है। अरबों रुपये की क्षति हुई है। जब इस स्थिति पर नजर डालते हैं तो उत्तर प्रदेश भी हमारे सामने आता है। महोदय, उत्तर प्रदेश में अलीगढ़, कानपुर, एटा, बुलंदशहर, आगरा, मेरठ, खुर्जा, कानपुर, बिजनौर, मुजफ्फरनगर आदि ऐसे स्थान हैं, ऐसे जिले हैं जहां पर कि यह लपट बहुत तेजी के साथ फैली थी। विशेष रूप से पिछले दिनों जो इस तरह की घटनायें हुई, उनमें उत्तर प्रदेश में ही करीब डेढ सौ से ऊपर लोगों की जानें गई थीं। ये तो सरकारी फिगर्स हैं, लेकिन वास्तव में मृत्यु इससे कई गुणा अधिक हुई है। हम यहां पर न रहकर इसके आगे बढ़ते हैं तो अभी हाल में ही अलीगढ़ में फिर हो गया, गुंजद्वारा में हो गया, लखनऊ में हो गया। इस तरह से यह मामला रुका नहीं, जैसे लगता है कि यह एक ऐसा कैंसर रोग हो गया है जिससे निपटने में बहुत ही मुश्किल दिखायी पड़ रही है।

महोदय, यह मामला उत्तर प्रदेश तक ही सीमित नहीं है बल्कि ये बिहार में भी हुआ, मध्य प्रदेश में भी, इंदौर, जबलपुर और रायपुर आदि में हो गया। दिल्ली में भी करीब 10 व्यक्ति मारे गये। राजस्थान में भी अजमेर नागौर, डांकपाली, जयपुर, जोधपुर, धौलपुर, खिलवारागोठ, कोटा, सीकर, उदयपुर और चितौड़गढ़ आदि स्थानों में भी इसकी आंच तेजी से फैली थी और वहां भी काफी लोग मरे। गुजरात में, अहमदाबाद में 40 लोग मारे गये। महाराष्ट्र में, कर्नाटक में 43 लोग देवगिरि, कोणार्क जिलों में 43 लोग मारे गये आंध्र प्रदेश में भी हैदराबाद और रंगारेड्डी डिस्ट्रिक्ट में यह घटना घटी। वेस्ट बंगाल में भी कुछ जिलों में घटनायें घटी। इस तरह से हम देखते हैं तो यह एक ऐसा क्रम दिखायी पड़ रहा है जिसको देखने के बाद ऐसा लगता है कि इंसान, इंसान नहीं रह जाता है। वह कितना पागल हो जाता है, भावावेश और भावनाओं में बह जाता है बल्कि पागल, शैतान हो जाता है। उसके बाद चाहे बन्दूक चलती हों, चाहे बम चलते हों, चाहे चाकू चलते हों या चाहे तलवारें चलती हों—एक भाई, दूसरे भाई का गला काटने, उसकी हत्या करने के लिये तैयार हो जाता है।

महोदय, ऐसी स्थिति में जबकि यह समस्या इतना विकराल रूप धारण कर चुकी है और जब ये सारी चीजें होती हैं तो प्रदेश और देश की प्रगति या उसका विकास रूक जाता है। आर्थिक प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है और यह मार्ग अवरूद्ध हो जाने से नुकसान किसका होता है? गरीब तबके के लोगों का, हाथ से काम करने वाले लोगों का, जो आर्टिजेंस लोग हैं या जो रोज कमाकर खाते हैं, उन लोगों का बहुत नुकसान होता है और ऐसे लोग मारे जाते हैं। इसलिये विकास में भी अवरोध आता है और हिंसा जो होती है, वह भी एक खतरनाक चीज होती है।

महोदय, ऐसे समय में एक बात कहना चहता हूं कि हमारे यहां का इतिहास

[श्री राम नरेश यादव]

ऐसा रहा है कि चाहे जो लोग इस देश के रहने वाले हैं या जो बाहर से आये हैं– चाहे हूण आये, सक आये, सिदियन आये, मुगल, पठान जितने भी लोग आये, लेकिन भारत का जो धर्म था उसमें इतनी उदारता और सदाशयता थी कि सबको इसने आत्मसात कर लिया। तो 3.00 P.M. जब आत्मसात कर लिया तो आज भी सारे के सारे, चाहे हमारे क्रिश्चियन हों, चाहे हमारे मुस्लिम संप्रदाय के भाई हों और चाहे दूसरे धर्म और संप्रदाय के मानने वाले लोग हों, सभी इस देश के नागरिक बन चुके हैं। हमारे यहां तो एकता का इतना जबर्दस्त प्रमाण मिलता है। हमारे वित्त मंत्री जी बैठे हुये हैं, अहलुवालिया जी भी अभी मौजूद थे, बिहार में बोधगया के महंत को दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह ने अपनी जमीन जागीर के रूप में दे दी थी और वह जमीन आज भी उनके पास हैं। अकबर ने भी दरभंगा के राजा को जागीर में जमीन दी थी। कश्मीर के सुल्तान जेनुल आबदीन जब प्रायः अमरनाथ और शारदा देवी का भ्रमण करने जाते थे तो वहां के तीर्थ यात्रियों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुये वहां उन्होंने विश्रामालय-धर्मशालाए बनवा दी थीं और इस तरह से जो तीर्थ यात्रियों के लिये धर्मशालायें बनवाई, वे भी इसका उदाहरण हैं। मियां पीर उर्फ बाला पीर ने हरमंदिर साहब का शिलान्यास किया था। यह सब ऐसे उदाहरण हैं जिनसे लगता है कि सचमुच में इस देश की धरती में, इस देश की मिट्टी में जो मानवता का भाव छिपा है, वह भाव कहीं पर एक दूसरे में टकराहट पैदा करने का नहीं होगा, दूसरे के साथ हिंसा के रूप में परिणत करने का नहीं, बल्कि भाई को भाई से मिलाने का भाव था। और धर्म, धर्म तो चाहे हमारा हिन्दू धर्म हो, चाहे मुस्लिम धर्म हो, चाहे कोई और हो, धर्म तो आपस में किसी को लड़ना सिखाता नहीं है, धर्म तो हमेशा सत्य और प्रेम का संदेश देता है।

मैं एक बात और आपसे कहना चाहता हूं कि इस देश के अन्दर और भी बहुत से उदाहरण पड़े हैं। राजस्थान में "गोगामेड़ी" एक ऐसी जगह है, जहां पर एक तरफ हिन्दू पुजारी बैठता है, दूसरी तरफ मुस्लिम पुजारी बैठता है लेकिन वहां पर कोई ऐसी बात नहीं आई। मैं कहना चाहता हूं कि इस तरह की स्थिति है। तो आज भी ऐसे समय में हम लोगों को बहुत गंभीरता के साथ सोचना चाहिये। और हमारी आजादी के आन्दोलन का इतिहास भी इससे भरा पड़ा है। आखिर 1857 में जो पहली लड़ाई लड़ी गई, उसमें बहादुर शाह जफर को किन-किन लोगों ने नेता मान लिया था और बादशाह स्वीकार किया था? और बादशाह स्वीकार करके, उनके नेतृत्व में अंग्रेजों को भगाने के लिये जो प्रथम स्वाधीनता संग्राम लड़ा गया था, वह भी हमारे सामने इतिहास के खुले पन्नों की तरह है और इस पर हमें ध्यान देने की जरूरत है और उससे नसीहत लेने की जरूरत है। सन् 1942 के मूवमेंट में भी और जब स्वाधीनता का जो आन्दोलन आया, उस आन्दोलन में भी जिस तरह से स्व० पं० जवाहर लाल नेहरू, अबुल कलाम आजाद, जाकिर हुसैन, पटेल, इन सारे लोगों ने मिलकर के और सारे लोग जो फांसी के तख्ते पर झूले थे उनमें भी तो सारे धर्म के मानने वाले थे–हमारे सिख भी थे, मुसलमान भी थे और हिन्दू भी थे, वहां पर तो कहीं पर न कोई धर्म था, न कोई सम्प्रदाय था और वे सब एक थे, हिन्दुस्तानी थे और हिन्दुस्तान की मिट्टी से उन सारे लोगों का लगाव था।

महोदय, हमारे सामने गणेश शंकर विद्यार्थी का इतिहास भी है। कानपुर में सन 1931 में जिन्होंने कि उस साम्प्रदायिकता की जलती हुई आग में अपने को भी स्वाहा कर दिया था और स्वाहा करने के बाद जब गांधी जी को सूचना मिली थी तो गांधी जी के जो उद्‌गार थे, उनको मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। गांधी जी ने कहा था "हमें तो गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे व्यक्ति चाहिए। मुझ जब उनकी याद आती है तो मुझे ईर्ष्या होती है। इस देश में दूसरा गणेश शंकर विद्यार्थी क्यों नहीं

पैदा होता"। ये उनके उद्गार इसलिए थे क्योंकि उन्होंने साम्प्रदायिकता समाप्त करने के लिए जिस तरह से अपनी कुर्बानी दी थी, वह भी हमारे सामने उदाहरण है और साथ ही साथ मैं इस समय जब यहां पर साम्प्रदायिकता पर बात कर रहा हूं तो मैं बधाई देना चाहता हूं कि ऐसे भी मौके आए हैं जहां पर कस्बों में, मोहल्लों में हिन्दू भाइयों ने, एक सम्प्रदाय के मानने वालों ने दूसरे सम्प्रदाय के लोगों की रक्षा की है उन्हें घरों में शरण दी है और बचाया है। ऐसे मौके पर मैं बुलंदशहर में डिबाई की एक महिला को बधाई देना चाहता हूं। दूसरे सम्प्रदाय के लोगों ने जब घरों में आग लगाने की, लोगों को लूटने की कोशिश की, हत्या करने की कोशिश की तो उस महिला ने सामने खड़े होकर कह दिया कि जब तक मैं जीवित हूं तब तक किसी भी तरह से उनके घर में, जो माइनारिटीज के लोग हैं, न तो कोई आग लगा सकता है और न कोई लूट-पाट कर सकता है और उसने अपने प्राणों की बलि दे दी। ऐसे भी उदाहरण हैं। बिजनौर भी मैं गया था, अलीगढ़ भी गया था, जहां पर लोगों ने कहा था कि यहां पर हिन्दुओं ने हमारी रक्षा की है, वहां पर मुसलमान सम्प्रदाय के लोगों ने हमारी रक्षा की है। इस तरह से ऐसी भी लोग रहे हैं। लेकिन आज स्थिति क्यों ऐसी हो गयी है कि राम और रहीम के नाम पर लोगों को बांटने की कोशिश क्यों हो रही है? क्यों टुकड़े करने की कोशिश हो रही है जबकि एक तरफ़ कश्मीर का मामला है, पंजाब का मामला इतनी सारी समस्यायें हैं, हम उनको नहीं हल कर पा रहे हैं। लेकिन केवल राम और रहीम के नाम पर बांटने की जो सारी कोशिश हो रही है, जो दो लोग हमेशा इस देश में रहते आये हैं उनके दिलों को जो तोडने की सारी कोशिश हो रही है उनमें एक विश्वास की भावना पैदा करनी चाहिए। उससे हटकर हम उनको दूसरे ढंग से देखते हैं तो सचमुच मे इस तरह की स्थिति देश में पैदा होनी स्वाभाविक है और यही तो कारण था जिसके आधार पर राम जन्म भूमि बाबरी मस्जिद का विवाद भी शुरु हो गया। इस संकीर्ण मानसिकता के आधार पर देश को जलाने का काम नहीं होना चाहिये और जब देश को जलाने का काम, राजनीति की रोटी सेंकने का काम, धर्म को राजनीति से जोड़ने का काम होगा तो यह स्थिति उत्पन्न होती है और यही कारण है कि चाहे रथ यात्रा हुई हो, चाहे अस्थि कलश यात्रा हुई हो और जो सारी चीजें इस तरह की गयी हों उनका परिणाम यह हुआ है कि पूरे देश के पैमाने पर यह हिंसा की, यह साम्प्रदायिकता की आग में लोगों को जलाने का काम हुआ है। मैं कहना चाहता हूं उन भाईयों से कि जो लोग हिंदू राष्ट्र का नारा देते हैं... (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री एम० ए० बेबी) : प्लीज कांक्लूड।

श्री राम नरेश यादव : मैं कहना चाहता हूं भाईयों से, उन लोगों से जो हिंदू राष्ट्र का नारा लगाने की बात करते हैं आखिर यह हमारे दूसरे सम्प्रदाय के लोग कहां रहें? किस देश में रहें? भारत और पाकिस्तान बनने के बाद यह लोग यहीं के नागरिक हो गये और मैं कहना चाहता हू कि क्या हमारे मुस्लिम भाईयों का कम योगदान रहा आजादी के इतिहास में, क्या देश के बनाने में उनका कम योगदान था, नहीं था। अगर हिंदू राष्ट्र का नारा करके एक बार फ़िर इस देश को टुकड़े करने की जो साजिश लोग कर रहेहैं उसे इस देश के सारे लोग नहीं होने देंगे। यह आज देश की जनता जानना चाहती है और इसलिये मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि यह जो सारे कैसेट चाहे ऋतम्भरा के कैसेट हो, चाहे यह उमा भारती के कैसेट हों उन कैसेटों के बारे में आपने क्या कार्यवाही की? लगता यह है जहां कहीं भी जब गंजडुंडवारा में उमा भारती गयी थी, वहां उन्होंने भाषण दिया और भाषण के बाद भी वहां पर फ़िर आग जल गयी। अलीगढ़ मे गयी तो वहां भी आग जली। यह आखिर किसलिये हो रहा है? क्या

[श्री राम नरेश यादव]

खून-खून नहीं है, जो धरती पर खून है वह जिंदा इंसान का खून नहीं हैं। खून में तो ऐसा नहीं होता चाहे वह किसी धर्म या सम्प्रदाय के मानने वाले क्यों न हों। इसलिये आज ऐसी स्थिति में गंभीरता के साथ विचार करना पड़ेगा और माननीय गृह मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि आप इन कैसिटों पर पाबंदी लगाने का काम करिये और जो धर्म को राजनीति से जोड़कर एक तरफ़ तो रिप्रेजेंटेशन में आप लिखेंगे कि हमारा विश्वास सैक्युलरिज्म में है, हमारे संविधान मे है लेकिन यहां पर आप करेंगे उल्टा ही और उल्टा आचरण करके उन लोगों के मन में एक आशंका व्यक्त करने का काम करेंगे, भरने का काम करेंगे। आखिर होगा क्या? परिणति क्या होगी? देश कहां जायेगा? और फ़िर हमारा सैक्युलरिज्म कहां रहेगा? आप सैक्युलरिज्म में विश्वास करते हैं, सर्वधर्म संभाव में यकीन करते हैं तो जैसे कि गिरजाघरों मे लोगों को पूजा करने की इजाजत है, मंदिरों में इजाजत है, मस्जिदों में जा करके आज पूजा करने की इजाजत है इस आधार पर दूसरे की आस्था और भावना को सम्मान करना पड़ेगा। मजहब किसी की धार्मिक भावना को, साम्प्रदायिक भावना को ठेस पहुंचाने की बात नहीं करता और यही कारण हैं कि भावना को ठेस पहुंचाने का काम करेंगे तो फ़िर गंजडुंडवारा में दंगा हो जायेगा, अलीगढ़ में हो जायेगा, फ़िर इसके बाद जो आपके करनैल गंज में जैसा पहले हुआ था वहां हो जायेगा। यह सारी घटनायें होती रहेंगी, यह हल होने वाली नहीं हैं। इसीलिये इस प्रश्न पर गंभीरता के साथ हमारे उन साथियों को विचार करना पड़ेगा जो हिंदू राष्ट्र का नारा दे रहे हैं। हिंदू राष्ट्र का नारा दे करके इस देश की जनता की जिंदगी के साथ, इस देश के नागरिकों के साथ, इस देश के मॉनोरिटी के साथ खिलवाड़ मत कीजिये नहीं तो आने वाला समाज कभी आपको क्षमा नहीं करेगा। यह भी हम आपके माध्यम से कहना चाहते हैं और माननीय मंत्री जी से कहना चाहते हैं कि आपने कैसिटों पर पाबंदी लगाने के लिये क्या कार्यवाही की? जब अलीगढ़ मे तथा इन सारे जगहों पर फ़िर से झगड़े हो रहे हैं, फ़िर से शुरूआत हो रही है, लोगों के खून बह रहे हैं, अरबों रुपये की संपत्ति का नुकसान हो रहा है तो इस पर प्रशासन क्या करता रहा? सरकार ने कौन से कदम उठाये हैं और अगर सरकार ने कदम नहीं उठाये, सरकार की असावधानी सरकार की लापरवाही रही है तो मैं कहना चाहता हूं कि अगर सरकार सजग रहती, कड़े कदम उठाती तो स्थिति और होती। मैं जानता हूं करनैलगंज का आरोप आया था। इनके ही जो एम. पी. और विधायक दोनों जिम्मेदार थे लेकिन उनके खिलाफ़ कार्यवाही नहीं की गयी। अलीगढ़ में भी गया था जब वहां पर हमारे मायनोरिटी के लोगों ने भी कहा हमारे दूसरे सम्प्रदाय के लोगों ने भी कहा एक दल के नेता विधायक भी हैं, पार्टी के अध्यक्ष भी हैं लेकिन इस सरकार की हिम्मत नहीं पड़ रही है उनके खिलाफ़ कार्यवाही करने की, गिरफ्तार करने की। अस्थि कलश ले जाने की बात होती है। क्यों उन जगहों पर ले जाये जाते हैं? क्यों यह दिखाने के लिये जिस भावना को जोड़ करके आप इस तरह की बातें कर पैदा करना चाहते हैं? क्यों नहीं उन पर पाबंदी लगायी जाती, यह क्यों नहीं हिम्मत आती है? अतः पोलिटिकल विल की जरुरत होगी। अगर पोलिटिकल विल नहीं रहेगी तो देश हमारा टूट जायेगा और आज तोड़ने की सारी साजिश कुछ इस देश के अंदर रहने वाले लोग कर रहे हैं। देश के अंदर रहने वाले कुछ लोग आज तोडने की साजिश कर रहे हैं। इसलिए उस दिशा में गंभीरता के साथ सरकार को ध्यान देना होगा। अभी हमारी एक माननीय सदस्या कह रही थीं कि मुख्यमंत्रियों के बदलने से कुछ नहीं होता। मैं एक बात स्पष्ट करना चाहता हूं कि जहां पर मामला इतना खतरनाक हो गया हो, जहां प्रशासन फेल हो रहा हो, सरकार की तरफ से कोई ऐसा कदम नहीं उठाया जा रहा हो जिससे जनता को लगे कि कुछ ठोस कार्यवाही की जा रही है तो ऐसे समय में तो सोचना ही पडेगा और कांग्रेस पार्टी ने

भी जब देखा कि आंध्र की स्थिति भयंकर हो रही है, कर्नाटक की स्थिति भयंकर हो रही है तो उसने मुख्य मंत्रियों को बदलकर तथा मुख्य मंत्रियो ने नैतिक जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर स्तीफा देकर एक नमूना पेश किया कि आइए, हम देश के अंदर एक मनोवैज्ञानिक वातावरण पैदा करके दिखाए कि ऐसे मौके पर जो सरकार, जो मुख्यमंत्री इन दंगो पर नियंत्रण करने में असफल रहे उनको हटाया जाएगा। उनको हटाया गया और दूसरे मुख्यमंत्री बनाए गए। आज उसकी नकल हमारे दूसरे सूबों में भी करने का समय आ गया है। उत्तर प्रदेश में भी जब हालत इतनी खराब हो रही हैं तो उसके मुख्यमंत्री को भी नैतिकता के नाते आगे बढकर उस कदम को उठाने का फैसला लेना चाहिए एवं इस्तीफा देने का रास्ता अख्तियार करना चाहिए।

साथ ही साथ और जो चीजें हैं, एक बात जरूर हैं कि मामला बहुत खतरनाक मोड पर पहुंच गया है। किसी की मस्जिद को तोडकर मस्जिद को नुकसान पहुंचाकर जो 400-500 वर्षो से बनी हुई है, उसकी जगह पर मंदिर बनाने की बात किसी भी कीमत पर बरदाश्त नहीं की जाएगी। हम इस बात को जानते हैं कि सारे हिंदू सेंटीमेंटल नहीं हैं और सारी माइनोरिटीज के लोगों में भी वह फंडामेंटलज्म नहीं है और अगर इस तरह की स्थिति रही तो जैसे जर्मनी में फासिज्म का उदय हुआ था वैसे ही इस देश के अन्दर ये ताकतें फासिज्म को पैदा करके, इस देश की एकता और अखंडता को खतरा पहुंचाने का काम कर सकती हैं। इसलिए इस मसले को बैठ करके हल करने की दिशा में प्रयास करना चाहिए। यह ठीक हैं कि इसे हल करने की दिशा में इस सरकार की ओर से कुछ कदम उठे हैं लेकिन वे पर्याप्त नहीं हैं. आगे और भी प्रयास करने की जरूरत है। अगर इस तरह से नहीं होता हैं तो एक सुझाव और भी आया है जैसा कि राजीव गांधी जी ने कांग्रेस के प्रेजीडेंट की हैसियत से यह प्रस्ताव रखा है कि जैसे 26 जनवरी, 1950 को हमारा संविधान लागू हुआ. उस समय जो देश के अंदर हमारे उपासना स्थल रहे जैसे गिरजाघर, मंदिर, मस्जिद, वहीं स्थिति बहाल रखनी चाहिए और इस बारे में सरकार को गम्भीरता के साथ संविधान में संशोधन करने के बारे में सोचना चाहिए और मैं चाहूंगा कि मंत्री जी जो यहां बैठे हैं, वह सदन को बताएं कि सचमुच में क्या-क्या कदम सरकार की तरफ से उठाए गए. क्या अहतियाती कार्यवाही राज्य सरकारों ने की हैं और राज्य सरकारों को क्या क्या निर्देश दिए गए और राज्य सरकारों ने उन निर्देशों का पालन किया हैं या नहीं।

आज समस्या बहुत ही खतरनाक मोड पर पहुंच चुकी हैं और सरकार को उस दिशा में गम्भीरता के साथ सोचना चाहिए और दलीय भावना से ऊपर उठकर इसे राष्ट्रीय समस्या समझकर इस प्रश्न का समाधान निकालने का प्रयास करना चाहिए। अगर ऐसे समाधान नहीं होता है तो निश्चित रूप से अदालत के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं हो सकता। सडकों पर आकर हिंसा करके इस मामले का हल नहीं ढूंढा जा सकता. फिर तो यह मामला बढता जाएगा और यह सिलसिला जारी रहेगा। इससे यह स्थिति हल होने वाली नहीं हैं।

मैं चाहूंगा कि गृह मंत्री जी इस बात को बताने का प्रयास करें कि सचमुच में जिस तरह से यह दंगा फैला हैं उससे निपटने के लिए, उन टूटे हुए दिलों को जोड़ने के लिए, जिन पर घाव हुए हैं उन पर मरहम लगाने के लिए किस प्रकार की कोशिश हुई है। इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं और आपको धन्यवाद देता हूं।

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : मान्यवर मैं राम नरेश यादव जी की बात का समर्थन करता हूं। जैसा उन्होंने कहा कि नैतिकता के आधार पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री को इस्तीफा दे देना चाहिए

[श्री संघ प्रिय गौतम]

तो मैं यह कहूंगा कि अगर वे इस्तीफा नहीं देते तो नैतिकता के आधार पर इनको सपोर्ट वापस ले लेनी चाहिए।

श्री राम नरेश यादव : जो आप चाहते हैं, आपकी बात मानने वाला नहीं है। हम उत्तर प्रदेश को साम्प्रदायिकता की आग में नहीं झुलसने देंगे।

DR. NAGEN SAIKIA (Assam): Mr. Vice-Chairman, the situation in the country is very alarming. Communal forces are raising their ugly head in the country and it is high time that this highest forum of the country took some measures to stop the communal riots that are taking place in many parts of the country. Curfew has to be clamped in many places and military and paramilitary forces are to be deployed in so many places. In this way, we are passing through a critical time in the history of our country. The name and fame of India have been tarnished by the events that have been taking place in our country in the last decade of this centuary.

SHRI CHATURANAN M1SHRA (Bihar): Sir, I have a suggestion to make. Since this short discussion has been converted into a long discussion, other parties and people also should get the chance to speak.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): Naturally.

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: Sir, smaller persons like me should also be given time... *(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): No smaller person is recognised here!... *(Interruptions)...*

SHRI SHABBIR AHMAD SALARIA (lammu and Kashmir): Those people have already spoken. We should be given time now ________ ('Interruptions),....

DR. NAGEN SAIKIA: Sir, my time should not be taken away because of these interruptions.

PROF. SOURENDRA BHATTACHARJEE: Sir, I have raised my hand. several times.... *(Interruptions)....*

DR. NAGEN SAIKIA; Sir, is it a free-for-all now? Everybody is speak% in-g... *(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY); All of you, Please listen to Dr. Saikia. Let him now complete.

DR. NAGEN SAIKIA: I will take only two or three minutes, Sir.

It is very sad that some forces ar«— trying to divide the people of this country on the basis of religion and to make the people think that they are Hindus or Muslims or Christians. I think we should identify those forces, those ugly forces, which have been playing up communalism throughout the country and we should identify those anti-social elements also which are taking advantage of these events. It is high time that we tried to identify the root causes of this and remove them in order to have a better time in the future.

The common people of this country, --are not communal at all. Wherever you go and whenever you meet the common Hindus or Muslims or Christians or Jains, you will see that nobody is communal. Religion is completely a private thing and it should not be politicised. Today, I am a Hindu and tomorrow I can take to Islam and become a Muslim. But 1 remain, and continue to be, an Indian. But, in our country, some forces are burning the human being along with human values in the name of religion^. Is it the teaching of the Hindu scriptures? The Hindu scriptures say, "Amritasaya Putro". Now, we have become the sons of the devil, not to speak of becoming the sons of Amrit. This must be stopped.

Sir, let me be very frank. It is the BJP, the VHP and the Bajrang Dal which are responsible for this situation that has been created in this country. Here, I would like to refer to the military operation that is going in my State. Ironically, its name also is "Bajrang" and it is called "Operation Bajrang" which name smells of religion. It is also not good on the part of the Government to give such names which smell religious or communal to some extent.

Sir, let me be frank. At the time of the elections, the Congress (I) also played a nasty role. Let me cite an example. In the case of Mizoram when election was held the manifesto of Congress(i) had religious overtones—referring to Christianity.

So, Sir, it is high time that secular forces of the country are motivated and united to fight back the evil forces and to save the life and property of the people of this country.

One of my esteemed colleagues suggested that the National Integration Council be called at an early date. 1 think it should be done as soon as possible to find out some ways and $mean_s$ to solve this problem.

Moreover, the old building should be preserved under the laws as a historical monument and both Muslims and Hindus should be allowed to have their temples and mosques in other places. Nearby there is enough land.

Sir, my last appeal would be that an appeal from this House should go to the people and to the leaders of different religions so that we can unitedly arrive at an acceptable solution.

Thank you, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BA18Y): Now, Shri Ish Dutt Yadav.

श्री ईश दत्त यादव (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, जिस विषय पर इस सदन में चर्चा हो रही है वह अत्यन्त ही गम्भीर विषय है। एक बहुत बड़ा राष्ट्रीय प्रश्न है। इस विषय का संबंध देश की एकता और अखण्डता से लगा हुआ है। देश के अंदर जो दंगे हुए, फसाद हुए मैं उनके आंकड़ों में नहीं जाना चाहता। एक साल पहले कितने दंगे हुए उन आंकड़ों का भी जिक्र नहीं करना चाहता क्योंकि समय कम है। पिछले एक वर्ष जनता दल की सरकार श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में रही है। मैं भी उस दल का एक सदस्य रहा हूं। जो कुछ हुआ उसके लिए हम सब लोग जिम्मेदार हैं। न केवल जिम्मेदार हैं बल्कि उसके लिए दुखी हैं। एक वर्ष के अंदर श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के शासनकाल में इस देश के अंदर साम्प्रदायिकता का तनाव बढ़ा। जो तनाव बढ़ा उसका यह परिणाम हुआ कि देश के अंदर जगह-जगह घटनाएं हुईं, दंगे हुए और लोग जान से मारे गये, सम्पत्ति का नुकसान हुआ और देश के अंदर भयंकर तनाव बढ़ा। मैं इस संबंध में दो को ही दोषी मानता हूं : एक तो इस देश के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को और दूसरे उन लोगों को जो राम रथ लेकर चले थे—हिन्दू राष्ट्र बनाने की कल्पना को लेकर। घटनाएं इसके पहले जो हुई हों और देश के अंदर उसके अलग-अलग कारण रहे हैं लेकिन एक वर्ष के अन्दर इस देश के अंदर जो तनाव बढ़ा उसका मुख्य कारण रामजन्म भूमि बाबरी मस्जिद का मसला रहा है। जब राम मन्दिर बनाने की लोगों ने तैयारी की थी तो हमारी सरकार ने विश्वनाथ प्रताप सिंह ने चार महीने का समय लिया था। जो मेरी जानकारी है, चार महीने के अन्दर कोई वार्ता नहीं हुई। फिर दोबारा चार महीने का समय लिया गया और इस तरह से कुल आठ महीने का समय बीत गया। लेकिन आठ महीने में कभी वार्ता नही हुई और अगर कोई वार्ता हुई तो वह राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के समाधान के लिए सही तरीके से नहीं हुई और इसलिए कह रहा हूं कि सही तरीके से नहीं हुई क्योंकि भूतपूर्व प्रधान मंत्री जी

[श्री ईश दत्त यादव]

को यह भय था कि अगर निर्भीक होकर देश के हित में या राष्ट्र के हित में बात करेंगे तो भारतीय जनता पार्टी के लोग अपना समर्थन वापस ले लेंगे और उनकी सरकार नहीं रहेगी। यह भय या निराशा उनके मन के अन्दर थी जिसके कारण सही ढंग से वार्ता के जरिये राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के सवाल को हल नहीं किया जा सका।

मान्यवर, एक कमेटी बनाई गई। आप जानते हैं कि यह उत्तर प्रदेश की समस्या है, राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद का सवाल उत्तर प्रदेश का है। लेकिन जो कमेटी बनाई गई उसमें वहां के मुख्य मंत्री श्री मुलायम सिंह यादव को नहीं रखा गया जो वहां के ला एण्ड आर्डर के लिए जिम्मेदार थे और जो सारी परिस्थितियों से वाकिफ थे। श्री मुलायम सिंह यादव को उस कमेटी में नहीं रखा गया। बैठकें भी किस तरीके से की गईं, यह भी देख लीजिये। विश्व हिन्दू परिषद से अलग से वार्ता की गई, बी०जे०पी० के लोगों से अलग से वार्ता की गई.... (**व्यवधान**) और बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के लोगों से अलग से वार्ता की गई। एक साथ बैठा करके बात करने की कोशिश हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री ने नहीं की। अगर कोशिश की गई होती तो समस्या का हल निकल गया होता। मैं अपने प्रधान मंत्री माननीय श्री चन्द्रशेखर जी को बधाई देना चाहता हूं और उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री मुलायम सिंह जी को बधाई देना चाहता हूं कि इन लोगों ने प्रयास किया और एक साथ तीनों को बैठा करके बैठक की और 6 तारीख को जो कार सेवा होने वाली थी वह शांतिमय ढंग से हुई, उसमें कोई हिंसा नहीं हुई। 6 तारीख से पहले अगर बैठ करके बात नहीं करते तो शायद 30 अक्तूबर और 2 नवम्बर वाली घटनाओं की पुनरावृत्ति होने की आशंका थी। इसलिए इस सिलसिले में एक चीज कहना चाहता हूं। आडवाणी जी ने पिछले 7 नवम्बर को लोक सभा में कहा था, जिस दिन श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह विश्वास मत प्राप्त कर रहे थे उस दिन आडवाणी जी ने कहा था कि प्रधान मंत्री जी, आपने कहा था कि आडवाणी जी रथ यात्रा चालू रखिये, कार सेवा करने के लिए अयोध्या पहुंचिये और हो सका तो मैं भी कार सेवा में आपका साथ दूंगा। मैंने एक समाचार पत्र में पढ़ा था, मैं उसकी सत्यता नहीं जानता कि वह सही समाचार था या नहीं था, लेकिन श्री वी पी० सिंह जी ने आडवाणी जी को कहा था कि वहां मस्जिद है ही कहां। आप कार सेवा के लिए जाइये, अगर कोई जर्जर इमारत या मस्जिद है तो उसकी एक ईंट उखाड़कर के आपको दे दूंगा। आप मंदिर बनवा लें। यह समाचार पत्र की बात है, मेरी व्यक्तिगत जानकारी नहीं है। उसी समाचार पत्र में यह भी कहा गया था कि बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के लोगों से उन्होंने कहा कि मैं किसी भी कीमत पर आडवाणी जी को अयोध्या जाने नहीं दूंगा और न ही मंदिर बनने दूंगा। इस तरह से दो तरफा पालिसी श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने चलाई जिसके कारण यह मामला हल नहीं हो सका और एक साल के अन्दर राम जन्म भूमि बाबरी मस्जिद के सवाल को लेकर इस देश के अन्दर तनाव बढ़ा। मैं कोई लम्बा भाषण नहीं करना चाहता हूं, आपने मुझे कम समय दिया है, लेकिन माननीय आडवाणी जी के बारे में निवेदन करना चाहता हूं कि माननीय आडवाणी जी की मंशा या उनकी पार्टी के लोगों की मंशा मंदिर बनवाने की कतई नहीं है। यह उन्होंने रथ यात्रा नहीं, राज यात्रा निकाली थी। राज कायम करने के लिये निकले थे। मान्यवर, मैं बिहार की स्थिति जानता हूं। जब बिहार से आडवाणी जी की रथ यात्रा शुरू हुई थी और वे उत्तर प्रदेश की सीमा की ओर बढ़ रहे थे तो उनके साथ 5 हजार से लेकर 7 हजार हथियारबंद लोग चल रहे थे। तीर-धनुष, हत्था-कट्टा, बम और आग्नेय अस्त्रों के साथ चल रहे थे। मान्यवर, अगर यह लोग चार मुट्ठी सीमेंट लेकर चलते, बालू लेकर चलते, ईंटें लेकर चलते, सरिया लेकर चलते तो मैं समझता कि ये राम जन्म भूमि पर राम के मंदिर का निर्माण करने जा रहे हैं। लेकिन ये तो जैसे युद्ध करने के लिये जा रहे थे। मान्यवर, मैं

बताना चाहता हूं कि ये अपने रथ पर बी० जे पी० का चुनाव चिह्न लेकर चले थे। ये चले थे राम का मंदिर बनाने के लिये अपनी पार्टी का चुनाव चिन्ह लेकर और हथियार बंद लोगों को साथ लेकर। मैं उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री को धन्यवाद दूंगा जिन्होंने देश के मुसलमान भाइयों और विशेषकर उत्तर प्रदेश के मुसलमान भाइयों में यह साहस पैदा किया कि चाहे आडवाणी हो या चाहे कोई हो, तुम्हारी मस्जिद पर कोई आंच नहीं आयेगी। वरना मुसलमान भाइयों ने, मैंने अखबार में पढ़ा था कि उन्होंने भी हिफाजती दस्ता बना लिया था। अगर आडवाणी जी की रथ यात्रा वहां पहुंच जाती और हिफाजती दस्ता बन जाता तो दोनों तरफ से धर्मयुद्ध हो जाता। अयोध्या के अंदर अगर यह होता तो मान्यवर इस देश के गली-कूचों में और पूरे देश के अंदर ही नहीं बल्कि इसकी आंच दूसरे देशों में भी पड़ती जहां हिन्दू और मुसलमान रहते हैं।

इस चीज को मुलायम सिंह यादव ने बचा लिया मुसलमान भाइयों के अंदर हिम्मत पैदा करके। **(समय की घंटी)** मान्यवर, आपने घंटी बजा ली, मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा। इस सिलसिले में मैं कहना चाहता हूं कि मुलायम सिंह यादव, जो उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री हैं वह चाहते थे कि शांतिमय ढंग से सब कुछ हो और 30 तारीख को कोई घटना न हो और शांतिमय ढंग से समस्या का निराकरण कर लिया जाय। लेकिन मान्यवर, हमारे गृह राज्य मंत्री जी यहां बैठे हैं। ये जानते होंगे और यह इनकी जानकारी में होगा कि भूतपूर्व प्रधान मंत्री वी पी सिंह ने यहां से आर्डर भेजा था कि जिन बदमाशों को उन्होंने गिरफ्तार किया है, जो 30 तारीख को दंगा कराना चाहते थे, उनको रिहा किया जाए। उन्होंने आदेश भेजा। इतना ही नहीं, यहां से सेना का एक जहाज भेजा गया, हेलीकाप्टर भेजा गया और अयोध्या के अंदर जो हार्डकोर लोग बैठे हुए थे, जो 30 तारीख को दंगा कराना चाहते थे, बावजूद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रोकने के, उन 14 लोगों को हेलीकोप्टर से दिल्ली बुलाया गया और उनको स्टेट गेस्ट की हैसियत दी गई और फिर उसी हेलीकोप्टर से उनको अयोध्या के अंदर उतारा गया और इसी के कारण 30 अक्तूबर और पहली तारीख को अयोध्या के अंदर ये घटना घट गई। मान्यवर, वहां पर यह जो घटना घटी यह बहुत दुखद है, बहुत शर्मनाक है। वहां पर जो भी मरे हैं वे भारत मां के सपूत मरे हैं, यह स्पष्ट है। लेकिन मान्यवर, दो तरह की बातें जो इस देश में चल रही थीं इसकी ज्वाला देश भर में भभकती रही। केवल अयोध्या के अंदर नहीं बल्कि देश के कोने कोने में, अभी माननीय रामनरेश यादव जी कह रहे थे कि अस्थि कलश घुमाया जा रहा था। मान्यवर, मैंने स्वतः ही देखा है। मैं मध्यप्रदेश में गया था। हमारे मध्यप्रदेश के माननीय संसद सदस्य बतायेंगे, मैंने वहां पर कई अधिकारियों से बात की, लोगों से बात की। जिस दिन मैं वहां गया था तो वहां प. अस्थि कलश घुमाया जा रहा था। उनसे बात करने पर मालूम हुआ कि मध्यप्रदेश के एक भी आदमी की अयोध्या में मौत नहीं हुई है। लेकिन अस्थि कलश घुमाया जा रहा था ताकि देश के अंदर, मध्यप्रदेश के अंदर साम्प्रदायिक दंगे हो जायें। मान्यवर, 30 तारीख के पहले अयोध्या जाने के लिये इटावा बार्डर पर मध्यप्रदेश की सरकारी मशीनरी लगी हुई थी और मध्य प्रदेश से लोगों को जबर्दस्ती.... **(समय की घंटी)** मैं समाप्त कर रहा हूं। मुझे तीन मिनट का समय दीजिये।

जबर्दस्ती अयोध्या के अंदर हथियारबंद लोगों को भेजने की कोशिश की जा रही थी ताकि अयोध्या के अंदर दंगा हो जाय और केवल अयोध्या के अंदर ही दंगे न हों बल्कि देश के कोने कोने में दंगे हों ऐसा वे चाहते थे। बी०जे०पी० का हिन्दू राज का जो सपना है वह कभी पूरा होने वाला नहीं है लेकिन इसको पूरा करने के लिये वह इस तरह से प्रयास कर रहे थे.... (समय की घंटी)

महोदय, मैं केवल दो मिनट का समय लूंगा। मान्यवर, आज भी लोकसभा के एक सदस्य हैं, मैं उनका नाम नहीं लूंगा उनका कैसेट जगह जगह बजाया जा रहा है और हिन्दू तथा मुसलमानों के बीच में नफरत पैदा करने की कोशिश की जा

[श्री ईश दत्त यादव]

रही है । मेरी जानकारी है कि कई लाख की संख्या में इन लोगों ने, हमारे माननीय सदस्य गौतम जी की पार्टी के लोगों ने इस कैसेट को बनाया है और इस कैसेट को देश की गली गली में बांटा जाता है ताकि देश के अंदर साम्प्रदायिक दंगे हों । मैं चाहूंगा, मैं गृह राज्य मंत्री और सरकार से चाहूंगा कि जहां भी ये कैसेट मिलें उनको जब्त कर लिया जाय और उनके खिलाफ कानूनी कार्यवाही होनी चाहिये । ... **(व्यवधान)** ...

मान्यवर, मैं अंत में कहना चाहूंगा, हमारे माननीय यादव जी ने कहा कि इनकी पार्टी की राय है कि उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री को बदल दिया जाय । ये लोग हमारे सहयोगी दल हैं । हमारी सरकार इनके सहयोग से है । मैं विनम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहूंगा कि उत्तर प्रदेश के अंदर मुलायम सिंह ने जो शांति और व्यवस्था को कायम करने के लिये काम किया है और जो तनाव को रोकने के लिये काम किया है, राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद झगड़े को रोकने का काम किया है उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं । किसी राजनैतिक द्वेष के कारण से, किसी व्यक्तिगत कारण से किसी मुख्य मंत्री को बदलने से आपकी समस्या का हल नहीं होगा । वह मुख्य मंत्री तो आप जैसे समस्या का हल चाहते हैं वैसे ही इस समस्या का हल चाहता है और उस समस्या को हल करने के लिये हर संभव कोशिश कर रहा है । मैं उनको हृदय से बधाई देना चाहता हूं ।

महोदय, मैं अंत में माननीय गृह राज्य मंत्री और अपनी सरकार को अपनी ओर से कुछ सुझाव देना चाहता हूं । महोदय, देश के अंदर साम्प्रदायिक तनाव को घटाने के लिये हिंदू और मुसलमान इस देश में भाई भाई की तरह रहें, मान्यवर मजहब कभी नफरत पैदा नहीं करता है, मजहब तो भाईचारे की भावना को पैदा करता है । चाहे वह कोई भी मजहब हो। लेकिन कुछ ऐसे लोग हैं जो मजहब के नाम पर देश को खंडित करना चाहते हैं । मैं सरकार से चाहूंगा कि ऐसे लोगों के ऊपर सरकार को कड़ी निगरानी रखनी चाहिये । इसके साथ ही केन्द्र से लेकर जिला स्तर तक सद्भावना समितियां बनाई जानी चाहियें । मान्यवर, मैं गृह राज्य मंत्री और सरकार से कहना चाहूंगा कि वे पुलिस की दक्षता को बढ़ाने की कोशिश करें । अगर रायट्स को रोकने के लिये कोई विशेष दस्ता भी बनाना पड़े तो बनायें और उनको इस काम के लिये प्रशिक्षित किया जाय ।

मान्यवर, हमारे प्रधानमंत्री चंद्रशेखर जी और हमारी सरकार इसके लिये प्रतिबद्ध है और मैं प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद और बधाई देना चाहता हूं । जिस दिन से वे गद्दी पर विराजमान हुए हैं उस समय से साम्प्रदायिक तनाव देश में घटने लगा है और झगड़े कम हुए हैं । . . . **(व्यवधान)** . . .

मान्यवर, मैं आखिर में, मैं उपेन्द्र जी से रिक्वेस्ट करूंगा कि वे मेरी बात सुने । महोदय, मैं अंत में चार पंक्तियां कहना चाहूंगा जो कि पद्य में हैं उसके बाद मैं अपनी बात समाप्त करूंगा । मान्यवर, इन लोगों ने, गौतम जी की पार्टी के लोगों ने राम को कमजोर बना दिया है, उन्होंने राम की महिमा को घटा दिया है । इनके राम थोड़े से क्षेत्र में, एक संकुचित क्षेत्र में हैं जब कि मान्यता है कि भगवान रोम रोम में व्याप्त हैं । इन्होंने अपने राम को एक जगह पर लाकर संकुचित कर दिया है और राम को कमजोर मान लिया । ये राम की रक्षा के लिये धनुष बाण लेकर चल दिये थे रथ पर बैठकर । आज तक राम के सहारे हम चल रहे थे, देश चल रहा था । जिसकी आस्था थी वह राम का नाम लेकर बैतरणी पार कर रहा था । आज वे राम संकट में फंसे हैं और यह उन के राम को उबारने के लिये गये थे । इन्हीं के लिये मैं ये चार पंक्तियां निवेदन करना चाहूंगा :

रोम रोम में रमे हैं विश्व व्यापी राम,
राम का महत्व एक वृत्त में न डालिये,
रामजन्म भूमि तो राम ही संभाल लेंगे,
हो सके तो आप मातृभूमि को संभालिए।

SHRI E. BALANANDAN (Kerala): The issue under discussion is serious. Many hon. Members yesterday and today have narrated many problems. The time at my disposal is very little and, therefore, J wish to put forth certain essential points. Yesterday, the Home Minister has placed before us certain figures, i. e. 890 people dead and 3882 wounded. These figures do not reflect the fact. The unofficial estimate is somewhere double the figure he has given, but then these figures will not give us the exact gravity of the situation. I myself travelled twice to Aligarh and then I went to Bulandshahr, Khurja and Jehangirpuri. I found certain things which 1 do not want to narrate here. Only one point I wish to state and that is, the Hindu-Muslim divide is complete. In the last four-five months incessant, continuous propaganda had been carried on throughout the coun try in the name of the Ram Janam-bhoomi Temple issue. I do not want to narrate the campaign. what was the campaign? The main campaign was not to erect only a temple in Ayodhya and demolish the mosque there. According to BJP it was only a beginning. They wanted to liberate 3000 temples which are to be built. According to them, during the Moghul period those temples were demolished. Previously they were temples and were demolished by the Moghuls and mosques were erected there. So, they said that it was the duty of the Hindus, whosoever was having pride iO Hinduism, to rise and to see that all these 3000 mosques were demolished and in their place temples were erected. This is the main thing. Do not think that this is the issue only of the Ram Janambhoomi Temple. They were vocal in their writings, in their speeches. Their view is clear from the audiovisual (cassettes and all that they were publihing. Therefore, the issue is not so simple

When I went to Aligarh, I visited the old city, where 32 houses were burnt. Among them mosques were also there, and at a distance of 100' yards I found another basti of Hari-jans whose six to seven houses were also burnt. On the first day of my visit to Aligarh the army men stopped me and two-three of my friends who were with me. They said, "No, nobody can go. " Then I was asked to see the District Magistrate. I went to the District Magistrate's office, but he was not there. Then I came back and talked to the policemen. Meam-while the District Magistrate was coming. I stopped his car and told him that I was Balanandan, a Member of Parliament and he was another M. P. coming with me. Both of us wanted to talk to him. But the Magistrate said, "I have no time. " That Magistrate has been removed from there. Another Magistrate is there now. But this was the officialdom. In spite of all this, privately I went to meet the people. By whom was the riot in Aligarh started? It was not a Hindu-Muslim riot. It can be said that the PAC's killing the people of Aligarh provoked the riots. This was the position there. I don't want to go further on that.

Then, I went to Khurja and Jahan-girpur. One story I may say, with your permission. It is a small town. There, some people came from the villages, shouting *"Ramki jai"*. Two or three Muslim families were there. Hearing the noise, they became shaky. Two people ran away and those were killed on that day. The other 22 people simply went into a small room and locked themselves in. These people came there and found the room locked. Then they brought gunny bags and other things and put light to the door itself. Smoke went inside and, due to suffocation, 10 people died inside—women, children, old men, etc. The police were there, just

[Shri E. Balanandan] near by. They were looking on; they did not do anything. After some time they came and opened the door and took out the people one by one. Thty found 10 dead and 12 unconcious. This was the situation. So, this was the duty the police were performing under the great raj of Mr. Mulayam Singh Yadav today. Yesterday that was not the position. However, the position is this that the Muslims in general, in these areas, feel that they are not being protected. Whatever criticism one may raise against the V. P. Singh raj—many critisisms can be made—one good thing was there: It can firmly be said that formerly the Muslims were having confidence that the Administration would try to protect them. There may be incapacity; that is another point. Then, under the administration °f Mr. Mulayam Singh Yadav as well as the administration everywhere, the feeling among the Muslims was that there was an Administration to protect them. That has been shaken after the day Shri Chandra Shekhar, my friend, took over the *gaddi* of the Government here.

My friend here was criticizing that Mr. V. P. Singh did not take any steps for seven months and so on. May be correct. After the *Rath Yatra* started, Mr. V. P. Singh was talking with Mr. Advani and others to find out a solution. But who wanted a solution? They wanted war. As *I* told you, they wanted one thing: First you start with Ayodhya, demolish the mosque, erect a temple and then go on erecting temples, demolishing 3, 000 mosques in the country. This was the slogan. With this slogan, can you go and make a compromise? Mr. Chandra Shekhar is trying his best, and] wish him success. But the point here is, a square issue came up. Mr. V. P. Singh pleaded with Mr. Advani's party, "AH right, at least you change the date. On the 30th itself you need not demolish it; let us have another date". "No. " "Can you leave it to court decision?" "No. Here and now I must do it; on the 30t itself I must demolish the mosque. " That was the condition that was put.

SHRI SANGH PR1YA GAUTAM; That is not so.

SHRI E. BALANANDAN: I am giving my information. You can correct when you get your time.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY); Don't interrupt him; let him con linue.

SHRI E. BALANANDAN: Therefore, I plead with you, Sir, you may be more informed but I may not be ill-informed. But the nation knows that one point came to the fore and, that was, whether we should allow a mosque to be demolished by a political or religious group and allow them to erect a temple there, physically, in spite of the law, in spite of the ban, etc. Then where will India be? India is a country wherein we are having Muslims, Hindus and so many other communities. They are all protected by law. Today our BJP friends say that the question of Ram temple is not negotiable; it cannot be left to the decision of any court because the question of Ram temple cannot be decided by any court. With your permission, | Sir, I must quote from an agreement which I has been entered into on September 27, 1989 between the Government of Uttar Pradesh and tht leaders of the Vishwa Hindu Parishad. One para, I shall read, Sir, with your permission, that is para (f):

> "The VHP undertakes to abide by the directive of the Lucknow Bench of the Allahabad High Court given on 14-8-89 to the effect that the parties to -the suit shall maintain the *stctus quo* and shall not change the nature of the property in question and ensure that peace and communal harmony are maintained. "

This is the agreement signed. My friend might remember that when *shilanyas* was allowed, this agreement was signed. Has this agreement got no sanctity? The Visb-va Hindu Parishad is an organisation which always goes before people with the name of God and Ram. If Ram had agreed to do something, will *he* change that agreement by himself? Mr. Ashok Singhal is a big leader. He has signed it here. He ha9 sard that the nature of the property would not be changed unless he would get a court verdict. Now they say that they

cannot go to the court. Why can they not go to the court? This is one issue, Sir.

Another issue, many friends have said that they would want to have a Hindu Rashtra here. They also say that the original sin is the partition of India. What do they want to do about it? My friend who was Speaking said that the original sin was done in 1947 when the country was divided.

They say that Muslim women are giving birth to more children, that the ratio of Muslim boys and girl's being born in the country is a little more than that of the average Hindus. Also they say that Pakistan is threatening us and that more money is being Spent by the Government of India. For that the Muslims should be penalised is the theory. Pakistan has been established at our freedom. What are we going to do about that? Forty-three years have passed. As one of my friends spoke here, he was born in free India. He did not see the division of the country etc. He is a citizen of India. So also all the Muslims are like that.

My friends are taking the name of Hindus. I am a Hindu, *pucca* Hindu. My father's name is Ram. My mother's name is Ishwari. You know both. Therefore, I am a *pucca* Hindu. But these people monopolise all the Hindus. How? Some people might be there with them, not all the Hindus. *(Interruptions)* You cannot talk in the name of Hindus. If you can talk like that, I can also talk like that. I am very much a Hindu like you.

The question today is: Do you respect the law of the land? We have a constitution. By this constitution nobody is allowed to kill anybody else. Kumari Uma Bharati, the leader, is making speeches. Sir, I request all theSe friends, for the time being let us forget her You hear her speech. Every Muslim or any other man who loves the country, will shudder to hear the speech She is making. The BJP is conducting a struggle for propagating that video-audio cassette. They are staging *asatyagrah* in ' Delhi for freedom. What freedom do they want? The freedom to propagate these things. Thet is, to divide the country into two and three.,. They are continuing the *satyagrah.* My friend talked about the *satyagrah.*

You know what is going on there in Ayodhya today. Twenty buses have been provided by the Government of Uttar Pradesh. The *karsevaks* are taken there as State guests. They come *in* the buses. The buses are stopped in between. These peo ple get down, go into the coffee shops and eat. They will say, "You will get the money from Mr. Mulayam Singh. " Therefore, nobody opens his shop. That is the situa tion. They are being taken by the Gov ernment to do the job and go away. This is how this is being done. Mr. Chandra Shekhar's Government and Mr. Mulayam Singh's Government are encouraging this thing. So, what I am saying is that this is a very serious Situation, Governments may come and Governments may go, Prime Ministers may come and- go, but once India is divided, we would not be able to unite it. Tin's is the point that has to be considered. I respect my Congress party friends, but their conduct at the crucial hour on November 7 was wrong. The question posed was about only one thing. Of course, hundreds of questions were there, but the main question that was posed there at that time was if we are going to allow the physical demolition of a mosque against the law of the land and divide the country into pieces. That was the question at that time. But somebody thought it was an opportune time to get into the *Gaddi* of the Government. Somebody also thought that this fel!ow had put us down. So, that was an opportune time to seek vengeance. I am sorry to say that this was a wrong step. All right, this is what has happened. You know what has happened in Hyderabad. English papers are all right, but Hindi papers are allowing venom to spread throughout the country. The national dailies no doubt have given correct position. Anybody who reads papers will be weeping on reading the description of the situation. Therefore, to be precise and short, I am suggesting three things for consideration of the Government. One, is that there is a National Integration Council. Different political parties are here. The BIP might be having its views. They can hold their views because that is their freedom. But their freedom should not curtail the freedom of others. That is the ABC of things in a

[Shri E. Balanandan]

democracy. In democracy, if I have a democratic right to worship, you should allow others also their right to worship. This freedom is not granted by them. Therefore, I suggest that the Government of India should call immediately the National Integration Council so that they can have a dialogue there. All the political parties would put their heads together and find a solution for this communal situation which ft, engulfing the country. It is not only engulfing the eleven States; even in my State, Kerala, where it is not easy to have a communal frenzy, this has happened and two people lost their life. Even in a district in West Bengal this has happened. Therefore, it is a conflagration developing throughout the country. Therefore, we have to put a stop to it. As suggested by somebody, those mosques or temples, which were there in 1947, when we achieved freedom or in 1950, when the Constitution was adopted, should be protected. That *status quo* should be maintained. This Parliament and this Government should come forward with a law to protect those religious worship places to be protected under the law.

One more Suggestion I would like to make. I find that PAC is not a fit Government apparatus to deal with the communal situation. They were not doing the iob entrusted to them. Therefore, some other machinery should be formed in the police force. In hat police force there should be adequate represenatation of the minorities. It is a correct thing. When you Say Muslims have committed so many mistakes, somebody correctly pointed out that while the population of Muslims is 12 per cent of the total population, their representation in thes Government is only one per *cent.*

To be short, a new police force is to be created. The National Integration Council is to be convened and some law be promulgated for protection of mosques and temples, which were there in 1947 or in 1950. With these words I conclude.

4. 00 p. M.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI *M.* A. BABY); Before I call Dr. Ratna-kar Pandey, I would like to make it clear that already the time that has been allotted for this discussion has been exhausted. But considering the importance of this matter, we are taking a lenient view. Some mere Melmbers from the small parties who could not speak would also be given an opportunity to speak. Therefore the Members from whose parties their leaders have already spoken—many more names are still there—« should confine themselves to the new points. Otherwise, it will be difficult for the Chair to accommodate everybody. The Minister also wants to reply today. So this is my submission. So try to be brief.

श्री शमीम हाशमी (बिहार): ऑनरेबल डिप्टी चेयरमैन साहब, आज हिन्दुस्तान जल रहा है और शोलों में घिरा हुआ है। सारे हिन्दुस्तान की, 85 करोड़ की चिंता है और 15 करोड़ की जान पर बनी हुई है। इतने अहम टाइम में लोग क्या कहते हैं, इसमें "पय" समय को नहीं काटा जाए। आप चाहें तो एक दिन के लिए और बढ़ा दीजिए।

THE VICE-CHAIRMAN: Actually the allotted time is over but more time is being given.

डा० रत्नाकर पाण्डेय : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, नव वर्ष की मंगल कामना सदन की ओर से आपको प्रदान करते हुए मैं चाहूंगा कि आपके सभापतित्व में जब देश का सर्वोच्च सदन साम्प्रदायिकता पर विचार कर रहा है तो निश्चित रूप से यह साम्प्रदायिकता की जो विषबेल चारों तरफ अपनी जहरीली छाया फैला रही है, वह समाप्त होगी और हर्षमय, हरे-भरे, सुखद, सुवासित वातावरण का निर्माण होगा।

साम्प्रदायिकता जीवन का अनिवार्य अंग हैं। दक्षिण भारत के संतों ने जिन सम्प्रदायों का सृजन किया, चाहे रामानुजाचार्य हों, चाहे वल्लभाचार्य हों, चाहे विट्ठल आचार्य हों, उन सबने जो सिद्धान्त बना दिया---द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैतवाद, बहुत कुछ बनाया, उस दर्शन के परिप्रेक्ष्य

में मैं जाऊंगा तो आप कहेंगे कि बहुत अधिक समय आप ले रहे हैं। इसलिए जो भी दर्शन भारत के संतों ने बताए, उनका गान उत्तर भारत के कवियों ने किया और उसमें चाहे हिन्दी के कवि रहे हों, चाहे तुलसी और सूर रहे हों, चाहे मीरा और जायसी रहे हों, चाहे कन्नड़ के कवि रहे हों, चाहे गुजराती के कवि रहे हों, चाहे मराठी के कवि रहे हों, सबने उनका गान किया। यह देश युगों से दक्षिण और उत्तर, हिन्दू और मुसलमान में बंटा नहीं रहा है। हिन्दी का निर्माण किसने किया? खुसरो ने किया और मृदंग को काटकर तबले का निर्माण उसने किया। खुसरो मुसलमान था जन्म से, लेकिन उसने कहा था कि :--

गोरी सोए सेज पर, मुंह पर डारे केस

चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहूं देस ।।

हमारे रसखान ने कहा था कि:--

मानुस हों तो वहें रसखान, ...

जो मुसलमान और हिंदू नहीं, इस देश की विविधिता में एकता का जो स्वर था, वह न हिन्दू का था, न मुसलमान का था, न क्रिश्चियन का था, न उत्तर का था, न दक्षिण का था, वह भारत का था भारत की पहचान थी और कोटि-कोटि स्वरों से जो स्वर उभरते थे उन्हीं का परिणाम था कि शक आए, सिथियन आए, हूण आए, मंगोल आए, मुसलमान आए, लोदी आए, जो भी आए इस देश में, सब इस देश के वासी बनकर रहे और यहां की प्रकृति और वातावरण में अपने को ढाल लिया। हमारे देश में कम्यूनल फोर्सिस हैं, वह हिन्दुओं में भी हैं, मुसलमानों में भी हैं और इसमें भिन्न-भिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्वार्थ लोगों के निहित हैं और उन स्वार्थों के कारण ही जो कुत्सित प्रयत्न धर्म के माध्यम से, सम्प्रदाय के माध्यम से राजनीति में हासिल करने की कोशिश की जाती है तो साम्प्रदायिकता वहीं भड़क उठती है।

अभी 11-12 महीने पहले इस देश में विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधान मंत्री हुये। उस समय उन्होंने नहीं देखा कि मैं एक ओर तो प्रोग्रेसिव कम्युनिस्टों का समर्थन ले रहा हूं और दूसरी ओर उन रिएक्शनरी फोर्सेज का समर्थन ले रहा हूं, प्रधान मंत्री होने के लिये जो साम्प्रदायिकता में विश्वास करते हैं, इंसान को हिंदू और मुसलमान में बांट करके देखते हैं, तो कभी गंगा जल को लेकर के चलेंगे और उस पर चंदा उतारेंगे। कभी राम को आज लेकर के चल रहे हैं, कभी गौ माता को लेकर के चलेंगे। इलैक्शन बीत जायेगा, समस्या हल हो जायेगी, वह भूल जायेंगे। वाजपेयी जी इस सदन में इस समय नहीं हैं लेकिन जब आडवाणी जी रथ यात्रा लेकर के चले अयोध्या की ओर तो उन्होंने कहा था कि वानर सेना को लेकर आप अयोध्या तो जा रहे हैं लेकिन क्या आप इस वानर सेना पर पूरी तरह नियंत्रण रख पायेंगे क्योंकि यह वानर सेना लंका की ओर नहीं जा रही है अयोध्या की ओर जा रही है और उसका परिणाम क्या हुआ? रामचरित्र मानस में तुलसी दास जी ने लिखा है जब राम अयोध्या को छोड़ करके गये थे माननीय उपसभाध्यक्ष जी, तब अयोध्या कितनी खिन्न थी, कितनी दुखी थी। आज वहां जो पीड़ा दिखायी पड़ रही है अयोध्या में कुछ उसी तरह की पीड़ा उस समय रही होगी। अतः उसका वर्णन करते हु कवि तुलसी दास जी ने लिखा है अयोध्या कांड में:

"लागति अवध भयावनि भारी।
मानहुं कालराति अंधियारी ।।
घोर जंतुसम पुर नर-नारी ।
डरपहिं एकहि एक निहारी ।।
घर मसान परिजन जनु भूता ।
सुत हित मीत मनहुं जमदूता ।।
बागन्ह बिटप बेलि कुंभिलाहीं ।
सरित सरोवर देखि न जाहीं ।।
नृप बूझे बुध सचिव समाजू
कहहु बिचारि उचित का आजू ।।
समुझि अवध असमंजस दोऊ ।
चलिऊ कि रहिऊ न कह कुछ कोऊ

[डा॰ रत्नाकर पाण्डेय]

और वही स्थिति आज अयोध्या की बना दी है सम्प्रदाय के उन्माद में। इस ग्यारह महीने के बाद विश्वनाथ प्रताप सिंह से समर्थन वापिस ले लिया और सोचा कि मेरे हाथ की कठपुतली बनकर वे यह रहें। विश्वनाथ प्रताप सिंह जी ने भी जैसा प्रतिष्ठित अखबार वालों ने लिखा और संसद में भी जैसा उस दिन, जिस दिन उन्होंने प्रधान मंत्रित्व छोड़ा था, लोगों ने बताया कि उन्होंने आश्वासन दिया था कि वहां तो मस्जिद है ही नहीं, वहां ईंटें हटादी जायेंगी। बड़े मुस्कराकर बात करते हैं, उस बात का कुछ अर्थ निकलता है या नहीं निकलता है उसी मुद्रा में उन्होंने बात की हो बी॰जे॰पी॰ के नेताओं से और बी॰जे॰पी॰ के नेताओं ने जब उनसे समर्थन वापिस लिया तो—"एक दिल के टुकड़े हजार हुये कोई यहां गिरा कोई वहां गिरा।" अब छटपटा रहे हैं, रो रहे हैं और साम्प्रदायिकता के आधार पर उनकी सरकार चल रही थी और मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि जब नये प्रधान मंत्री चन्द्रशेखर जी हुये तो प्रधान मंत्री की शपथ लेने के बाद वह सबसे पहले माननीय अडवाणी जी के यहां गये। वे सबसे पहले 6 सौ से 8 सौ करोड़ रुपये के बीच में चंदा जुटाने वाले आदरणीय अशोक सिंहल के यहां गये। क्यों? क्योंकि जब मैंने आपको समर्थन दिया है तो व्यवहारिकता की दृष्टि से इतने दिन तक तो आप नहीं गये अडवाणी जी के यहां, इतने दिन नहीं गये आप सिंहल के यहां। क्या जरूरत थी आपको जाने के लिये जब साम्प्रदायिक तत्व के विरोध में हम आपके साथ सीने से सीना लगा करके खड़े हैं और कांग्रेस आपके साथ खड़ी है तो एक रु॰ में तीन अठन्नी भर जाने का काम चन्द्रशेखर जी भी बंद करें। यह नहीं चलने पायेगा। हम अगर यह महसूस करते हैं कि सांप्रदायिक ताकतें इस देश को तोड़ना चाहती हैं, इस देश में हिंदू-मुसलमान के नाम पर खून-खराबा हो रहा है तो मैं प्रधानमंत्री जी से यह उम्मीद करूंगा कि वे सांम्प्रदायिक शक्तियों को बढ़ावा न दें। प्रधानमंत्री तो सारे देश का प्रतिनिधि होता है। महोदय, इसी संदर्भ में मैंने प्रधानमंत्री जी को एक पत्र लिखा था, छोटा सा पत्र है जिसे मैं सदन के रिकार्ड में लाना चाहता हूं। यह पत्र मैंने 24 नवंबर, 1990 को लिखा था:—

"मान्यवर चन्द्रशेखर जी,

सादर प्रणाम। प्रधानमंत्री होने के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। मेरी कामना है कि ईश्वर आपको सफलता दे। पिछले प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह और उनकी सरकार ने... "

Dada, let me express myself.

SHRI A. G. KULKARNI (Maharashtra): No, no. I only want to request you, don't set another convention You see, private letters.. *(Interruptions).*

DR. RATNAKAR PANDEY: This is not a private letter. This is a letter to the VHP. This is not my personal thing and the Prime Minister has answered what he is doing. I am going to record it. I am not a child. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): No you can tell the substance of the letter instead of reading the letter. The hon. Member is right in saying that it cannot be quoted as such. You can just place the essence of what you have written. *(Interruptions).*

डा॰ रत्नाकर पाण्डेय: विश्वनाथ प्रताप सिंह और उनकी सरकार ने कई सांप्रदायिक दलों जैसे भारतीय जनता पार्टी, विश्व हिंदू परिषद तथा बजरंग दल आदि के साथ मिलकर इस देश में घोर सांप्रदायिकता की भीषण आग फैलाई है जिनमें सारा देश जल रहा है। विश्व हिंदू परिषद ने राम मंदिर के नाम पर 600 करोड़ से अधिक रुपया चंदे का जुटाया है। पिछली सरकार के समय इनकम टैक्स कमिश्नर श्री गुप्ता ने विश्व हिंदू परिषद को इसका हिसाब-किताब देने के लिए नोटिस जारी किया था परंतु विश्वनाथ प्रताप सिंह के आदेश से उसे

निरस्त कर दिया गया और उक्त कमिश्नर श्री गुप्ता का स्थानांतरण करके उन्हें तरह-तरह से धमकी दी गई और उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी। मैंने यह मामला संसद में भी उठाया था पर सरकार निरुत्तर थी। इसका तत्काल विश्व हिंदू परिषद द्वारा जमा की गई 600 करोड़ की संपत्ति को राष्ट्रीय संपत्ति घोषित करें"...

(व्यवधान)

SHRI S, JAIPAL REDDY (Andhra . 'Pradesh): Sir, I am on a point of order.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): What is your point of order?

, SHRI S. JAIPAL REDDY; As has already been pointed out by you, Sir, he is reading from a document. Therefore, that document must be placed on the Table of the House and he can read only from a Government order. Obviously, it is not a Government order. So I don't think that what he read should be allowed to go on record

DR. RATNAKAR PANDEY: Try to listen to the full contents.

श्री सैयद सिब्ते रजी (उत्तर प्रदेश) : जो हमारे दोस्त ने कहा, वह इसके लिए नहीं है। —I think, he is consulting papers. While he is consulting his papers, he is trying to convey something. I think, he has not violated any convention of the House by consulting his papers. *(Interruptions).*

DR. RATNAKAR PANDEY; I do'nt want to take lessons from you, Mr. Reddy. *(Interruptions).*

SHRI S. JAIPAL REDDY: Mr. Pandey <is- beyond my teaching, I know that. But ; the point is, I have raised a point of order.

DR. RATNAKAR PANDEY; There is no point of order. Please don't interrupt me. *(Interruptions).*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M, A. BABY): Pandey Ji, one minute. Let me deal with the point of order raised by the hon. Member. The hon. Member is right that from a letter, one Should not quote. But Mr. Reddy, please consider what Pandey Ji has spoken as part of his speech so that we will not be setting any wrong precedent also. Kulkarni Ji has also raised that issue—the technical side of the whole thing—and we are not breaking that convention that Members should not quote from personal documents.

SHRI S. JAIPAL REDDY; Mr. Vice-Chairman, what I suggest is, he could sum up the whole thing as a part of his speech. *(Interruptions).*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): Jaipal Reddy Ji, this is now Pandey Ji is summing up. *(Interruptions).*

SHRI S, JAIPAL REDDY: How can a Member quote his own letter on the floor of the House?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRl M. A. BABY); No, no; the Member is summing up by reading it.

SHRI S. JAIPAL REDDY: May I take it that without reading he is unable to sum up?

DR, RATNAKAR PANDEY; I don't want to create the morning scene, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRl M. A. BABY): Pandeyji, kindly conclude now. So much time has been talen by you.

DR. RATNAKAR ■ PANDEY; ' I am : coming to the main points, Sir.

AN HON. MEMBER: This is the prob-em, Sir. Pandeyji should have come to he main points without reading the letter.

डा० रत्नाकर पाण्डेय : देश की जनता से करोड़ों रुपया जो इकट्ठा किया गया यह कब-कब, कहां-कहां इकट्ठा किया गया और किन-किन मदों पर यह पैसा खर्च किया गया ? शेष धनराशि कितनी बची है, इसका क्या उपयोग किया जाएगा ?

[डा॰ रत्नाकर पाण्डेय]

विश्व हिन्दू परिषद इस भारी धनराशि को सांप्रदायिकता पर आधारित हिंसक राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति पर बेतहाशा खर्च कर रहा है। आपसे अनुरोध है कि इस खर्चे पर तत्काल रोक लगाएं और देश को सांप्रदायिकता से बचाने के लिए कारगर कार्यवाही करें। इस मामले की जांच सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश से कराई जाए।

श्रीमन्, मेरे पत्र का उत्तर जो मैंने 24 नवंबर को लिखा था, 27 नवंबर को मुझे मिला... **(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): Pandeyji, you have taken more time than Shri Ram Naresh Yadav.

DR. RATNAKAR PANDEY: No, no; Sir, I have spoken for 15 minutes. The first speaker had taken 40 monutes.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): Don't quote from the letters. You kindly tell the contents.

डा॰ रत्नाकर पाण्डेय: उन्होंने अपने पत्र में लिखा है कि विश्व हिन्दू परिषद के बारे में जो सवाल आपने उठाया है, उसके बारे में थोड़ी जानकारी मुझे भी है। यह प्रधान मंत्री का पत्र है, भारत के प्रधान मंत्री ने मेरे पत्र के जवाब में लिखा है। इस बारे में क्या किया जा सकता है, इसको देखने के लिए मैं वित्त मंत्री से कहूंगा। यह माननीय प्रधान मंत्री जी का कथन है। मैं जानना चाहूंगा कि नवंबर से अब तक आपकी सरकार ने क्या कार्यवाही की है? रुपए के बल पर खूनखराबा मचाया जा रहा है। 600 करोड़ रुपए जो जनता से मांगे गए उसका उपयोग सांप्रदायिक दलों की चुनावी ताकत को मजबूत करने में लगाया जा रहा है। मैं यह डंके की चोट पर कहना चाहता हूं... **(व्यवधान)**

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Sir, I am on a point of order. I am listening to one figure again and again. Sometimes he says 600 crores, sometimes 300 crores. I want to know the source of this figure.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): He is just taking a similar figure.

DR. RATNAKAR PANDEY: I want to know what the Government is doing about this amount. If you are speak'. ng on behalf of the Vishwa Hindu Parishad kindly telt me what the real amount is.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Sir, my concern is that this responsible House cannot be misled by an hon. Member. Now I would like to know the authenticity of the records. He is quoting the figures without any basis... *(Interruptions)*... Members have been misled to the point as if what he said has been admitted by the Prime Minister. It is not so. That is why the point of order raised by my hon. friend, Mr. Reddy, is very relevant. The man has been using the liberty of this House to utter absolute untruths,. (/n-*terruptions)*.. What is the source of this figure? There people are speaking absolutely irresponsibly. I am not as irresponsible as you people are... *(Interruptions)*...

SHRI PARVATHANENI UPENDRA (Andhra Pradesh): Notwithstanding the procedural aspects, what Shri Ratnakar Pandey has said is a very serious matter. This is about an organisation which has collected hundreds of crores in the name of a temple and about which the Prime Mnister himself has admitted in his letter and he has some knowledge about it. We expect that the Minister of State for Home Affairs or the Prime Minister would come forward and tell us what information they have in their possession.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): There is no doubt that this is a serious matter. Dr. Jain is also concerned about this matter. Therefore, I hope when the Minister of State for Home Affairs replies there would be a clarification on this point And if necessary, if the Government thinks that the Prime Minister should himself make a statement', I hope: the Government would do so.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: I think the Prime Minister is going to intervene. Let the Prime Mtrristei; explain it.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: My *request is whatever* information the Prime Minister or the Minister of State for Home Affairs gathers, that information should be supplied to the House and till then let I this topic be stopped. Dr. Ratnakar Pandey \ is citing whatever figures come to his mind. What nonsense is he talknig ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): I hope the Government is taking due note of the matter.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: On a point of order. I want to make a personal explanation. He is making a personal attack on me...

DR. RATNAKAR PANDEY: When he was speaking I was not disturbing him. Why is he interrupting me ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): You please conclude now.

डा० रत्नाकर पाण्डेय : मैं समझता हूं माननीय सदस्य के कैसेट को विश्व हिन्द परिषद् ने खरीदा है इसीलिए इसकी प्ली ले रहे हैं। उस कैसेट की कल भी दिन भर चर्चा होती रही है। **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री एम० ए० बेबी) : आप कृपया कंक्लूड कीजिए, आपने बहुत समय ले लिया।

डा० रत्नाकर पाण्डेय : हमारा सारा टाइम माननीय सदस्य ने ले लिया। **(व्यवधान)** मैं यह जानना चाहता हूं इस देश के बहुत से संत विदेशों में घूम कर भारत की मर्यादा का, आध्यत्मिकता का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं और विभिन्न विदेशीमुद्रा का व्यापार कर रहे हैं तो ऐसे लोगों में चन्द्रा स्वामी का नाम जग जाहिर है। वह अपने को वर्तमान प्रधान मंत्री का गुरू मानते हैं जिसकी कंटर डिक्शन प्रधान मंत्री जी को कल लोकसभा में करनी पड़ी कि चन्द्रास्वामी मेरे गुरू नहीं है। पिछली सरकार ने विदेशी मुद्रा कानून के तहत आरोप लगाया था... **(व्यवधान)**

श्री अरविन्द गणेश कुलकर्णी : यह वही चन्द्रास्वामी है जिसके खिलाफ फेरा का आरोप लगाया गया था? यदि वह है तो वह गुंडा है, क्रिमिनल है। **(व्यवधान)**

डा० रत्नाकर पाण्डेय : हां, वही है। उन्हीं के बारे में मैं बोल रहा हूं। **(व्यवधान)** एक तो मैंने विश्व हिन्दू परिषद के चंदे के बारे में कहा और दूसरे चन्द्रास्वामी के बारे में कहा ... **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री एम० ए० बेबी) : आपने ज्यादा समय ले लिया, आप बैठ जाइये।

DR. RATNAKAR PANDEY: I am coming to that...

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: On a point of order.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI" M. A. BABY): Ratnakarji, please don't go to other subjects. You have taken more time. Please confine yourself co the topic of communalism.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: Pandeyji, you are supporting such a mafia. What can we do ?

(Interruptions)

DR. RATNAKAR PANDEY: I want to say the Congress has nothing... *(Interruptions)*

SHRI A. G. KULKARNI: The Congress has nothing to do with Chandraswamy or Subramanian Swamy.

DR. RATNAKAR PANDEY: I want to say...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): Please don't prolong your speech. Please conclude now.

DR. JINENDRA KUMAR IAIN: On a point of order...

DR. RATNAKAR PANDEY: What is this? On every sentence he is objecting...

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: On a point' of order...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI *id.* A. BABY): You can speak when your turn comes. When you speak, you can pick up these points.

SHRI A. G. KULKARNI: I think he lias personal knowledge of Chandraswamy.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): Let us not bring In any names in the speeches.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Is it not an established convention of the House that one who is not a member of the House, who is not present here, is not called names? He has called him goonda and what not.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY); There were occasions when such references have been made umpteen times... *(Interruptions)...*

SHRI MENTAY PADMANABHAM (Andhra Pradesh): Mr. Chandraswamy is not a person, he is a Gcdman!.. *(Interruptions}..*

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: If Mr. Kulkarni had called him like that outside the House, he would have been taken to the court.. *(Interruptions)...* I don't think that calling somebody a goonda is done in this House.. *(Interruptions).*

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: He claims to be a Godman!... *(Interruptions)*,..

SHRI A. G. KULKARNI: Sir, Dr. Jain says that this is never done in this House. For his experience, I would say that he is still in the Montessori class in Parliament... *(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): Mr. Pandey, you conclude now.

डा० रत्नाकर पाण्डेय : उपसभाध्यक्ष जी, मैंने चन्द्रास्वामी का नाम लिया तो सदन के कई कौनों से माननीय सदस्य उठ कर खड़े हो गये। मैं कहना चाहता हूं कि चन्द्रास्वामी अन्तर्राष्ट्रीय फ्राड है। उसके ऊपर फैरा में केस चल रहा है और जब पिछली सरकार थी तो वह देश निकाला था और उसके सहायक किसी अग्रवाल को बंद कर दिया गया था और जब से यह सरकार आई है वह सबसे बड़ा हिन्दुओं का संत बन कर जो सम्प्रदायिकता की आग लगी है अयोध्या में, उसको सुलझाने के लिए घूम रहा है। मैं माननीय गृह मंत्री जी से इस सदन के माध्यम से मांग करूंगा कि उसको फैरा के अन्तर्गत गिरफ्तार करें। उस पर जो आरोप हैं उसके तहत उसका पूरा ट्रायल करें। यह बड़ा नाजुक मसला है। जिस सम्प्रदायिकता की आग में जल करके इस देश को तोड़ने की कोशिश की जा रही है, उससे सतर्क रहने की जरूरत है। सम्प्रदायिक दल कोई भी हों, हिन्दू साम्प्रदायिकता हो या मुस्लिम साम्प्रदायिकता हो, जो पैट्रो डालर नेशन्स से कुछ संस्थाओं को रुपया आ रहा है और जो घरों में रखा जा रहा है और जो इस देश में लांचरों और प्रक्षेपास्त्रों से आक्रमण हो रहा है, जो लोग इस देश को मस्जिद और मंदिर के झगड़े पैदा करके तोड़ना चाहते हैं, वे राष्ट्रद्रोही हैं, उनके साथ कोई समझौता या किसी तरह के झुकने का कोई प्रश्न नहीं होना चाहिए। बातचीत से सारी समस्या हल हो, इसमें हमारा विश्वास है। लेकिन जहां तक राष्ट्रीयता का प्रश्न है, हमारे देश के संविधान का सवाल है, जहां तक हमारे हिन्दुओं और मुसलमानों का एक साथ मिल करके रहने का प्रश्न है उसका उदाहरण मगहर में है जहां पर कबीर का मंदिर भी है और मस्जिद भी है। एक ही बिल्डिंग में दोनों बने हुए हैं। अयोध्या की समस्या में कोई आउटसाइडर नहीं होना चाहिए। अयोध्या के लोग स्वयं इस समस्या को हल करें। बाहर के लोग, चाहे वे किसी भी दल के हों, कहीं के हों, उनको फैजाबाद और अयोध्या न जाने दिया जाय और इस समस्या का समाधान निकाला जाय। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि राजनीति की रोटी साम्प्रदायिकता की आग में सेंकने की आदत इस देश में कुछ तत्वों को लग गई है, जो कभी गाय के नाम पर,

कभी गंगा जल के नाम पर अपनी राजनीति चलाने की कोशिश करते रहते हैं। इन शब्दों के साथ मैं कहना चाहता हूं कि मैंने सभापति जी से आग्रह किया था कि मुझे बोलने का मौका दिया जाय। बीस मिनट तो इंट्रप्शन्स में चले गये, मैं 10-12 मिनट ही बोल पाया। मेरी सारी चीजें रह गई। फिर भी मैं जानता हूं कि इस देश के अन्दर शक्ति है... **(व्यवधान)**।

कुमारी आलिया (उत्तर प्रदेश) : अभी रत्नाकर पाण्डेय जी ने कहा कि अयोध्या के मसले को फैजाबाद के लोग सुलझा सकते हैं, उसका मैं समर्थन करती हूं। यह सुझाव उन्होंने दिया है, मैं इसके लिए उनका शुक्रिया अदा करती हूं।

डा० रत्नाकर पाण्डेय : यह बात मैं इसलिये कह रहा हूं कि जहां जहां भी कांग्रेस की सरकारें हैं, चाहे वह आन्ध्र प्रदेश हो, चाहे कर्नाटक हो, हमारे नेता श्री राजीव गांधी जी ने ... **(व्यवधान)** हमने एक ही झटके में वहां के मुख्य मंत्रियों को बदल दिया। लेकिन श्री मुलायम सिंह यादव इतने प्रबल हो गये हैं कि प्रधान मंत्री श्री चन्द्रशेखर जी चाहते हैं कि उनको हटाया जाय, लेकिन श्री मुलायम सिंह यादव कहते हैं कि हम चुनाव पर चले जाएंगे। माननीय उपसभाध्यक्ष जी, इस तरह से नहीं चलता है मुलायम सिंह डिक्टेट करें पूरे देश को और प्रधानमंत्री को। यह इस देश में नहीं चलने दिया जाएगा। मुलायम सिंह से भी उतनी ही घृणा आज है जितनी विश्वनाथ प्रताप सिंह से है। जहां भी दोनों जा रहे हैं, मैं हिंसक राजनीति में विश्वास नहीं करता हूं, किसी भी दल के नेता पर ढेला फेंका जाए उस पर आक्रमण किया जाए, मैं इसकी निंदा करता हूं। जहां भी यह लोग जा रहे हैं चाहे मुलायम सिंह हो चाहे विश्वनाथ प्रताप सिंह हो पूरे भारत में उनका स्वागत जिस तरह से जनता कर रही है, जितना आक्रोशमय, घृणामय और जितनी साम्प्रदायिकता का उपयोग इन्होंने अपनी सत्ता बचाने के लिए किया है, मैं उसकी निंदा करता हूं। चन्द्रशेखर जी को चाहिये कि देश में, उत्तर प्रदेश में सुबुद्ध लोगों की कमी नहीं है, निर्भीक हो कर के मुलायम सिंह यादव को झटके के साथ निकाल बाहर करें और ऐसे व्यक्ति को लाएं जो शान्ति स्थापित कर सके। जैसे विश्वनाथ प्रताप सिंह के हटने के बाद चन्द्रशेखर जी आए हैं इससे स्थिरता आई है उस तरह की स्थिरता जब तक प्रदेश में नहीं आएगी तब तक कुछ नहीं हो पाएगा। **(समय की घंटी)** माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं एक अन्तिम सेंटेंस कह रहा हूं। मैं बनारस का रहने वाला हूं। राम नरेश यादव जी ने बताया कि 14-15 जिलों में दंगे हुए, बनारस में भी कर्फ्यु लगा रहा। मैं अभी पिछले रविवार को बनारस में था। मुझे बताया गया कि राम नामी साफा बांधे कुछ लोग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की ओर गये और कहा कि उधर पीली कोठी की तरफ और ललापुरा की तरफ तो मुसलमानों ने मन्दिरों में आग लगा दी और वहां गायों को काट कर फेंक रहे हैं। हमारे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्रों ने उनको दौड़ा दिया तथा कहा कि तुम वहां जाओ पीली कोठी और जैतपुरा की तरफ, इधर मत आओ। तब वह उधर आग भड़काने के लिए गये। उधर मुसलमानों ने उनको कहा कि तुम वहां जाओ जहां मस्जिदों के कंगूरे तोड़े गये हैं। अफवाहें फैला कर आप इस देश में करना क्या चाहते हैं? जो बी० जे० पी० के साम्प्रदायिक तत्व है या जो पेट्रो डालर्स नेशंस के पैसे पर साम्प्रदायिकता के उन्माद में मुस्लिम यूनाइटेड फ्रंट जैसी संस्था बना कर मुफ्ती मोहम्मद सईद जैसे लोग इस देश में करना क्या चाहते हैं? यह बैन होना चाहिये। सारे साम्प्रदायिक दल चाहे हिन्दुओं के हों या मुसलमानों के या किसी अन्य के उन्हें बैन करो। इस देश की राष्ट्रीयता के साथ, 84 करोड़ जनता के साथ साम्प्रदायिकता का सौदा करने की किसी को छूट न दो तब जा कर चन्द्रशेखर जी के प्रधानमंत्री बनने का हमारा समर्थन सार्थक होगा क्योंकि साम्प्रदायिकता में हमारा विश्वास नहीं है,

[डा० रत्नाकर पाण्डेय]

धर्मनिरपेक्षता में हमारा विश्वास है। अंत में मैं यह शेर कहना चाहूंगा–

जिस तरफ जाते हैं होती है क़यामत बरपा,

एक फ़ितना है जो कदमों से लगा रखा हैं।

[The Vice-Chairman$_3$ (Dr. Nagen Saikia) in the Chair]

PROF. SOURENDRA BHATTACHA-RJEE; Mr. Vice-Chairman, before pro> ceeding on the subject matter I would have to refer to a certain point which hurt me very much. The Vice-Chairman was gracious to announce that even though the allotted time is over we have decided to be liberal in accommodating some smaller parties. Now, I do not know whether there are second-class and first-class citizens here. Members are Members. 'Others' have been allotted 25 minutes of time in this discussion. Up till now not a single Member from that group has spoken. If the time is exhausted, it has been exhausted by the comparatively big parties. Earlier 'others' were spread over the discussion. That was the practice. The change in the practice is something which causes great hardship, great harassment to the Members of the so-called smaller groups, categorized as they are.

Now, I can recall the pre-partition riots—riots of 1946, riots of 1947— which accounted for a large number of lives, as you know, and the partition of the country. Even since then, through our national leadership declared that we are not accepting the religious basis for the partition of the country and that India would continue to be a secular State, we know in this secular country, since independence, in all these 43 years, we witnessed riots and riots. The total number of riots is more than 10, 000. The number of persons killed is a matter for research. But never before T witnessed the national divide to this extent as witnessed in the last year of the past decade or the first year of the present decade. And it seems to us—to my Party— it reminds us of the partition days when thousands of people were butchered all over the country and over the dead bodies, the country was partitioned. When Mr. Pramod Mahajan said that the country was partitioned by such parties, he forgets to tell—its BJP and Mr. Pramod Mahajan might not have been born then—the previous incarnation, the Jan Sangh or the Hindu Mahasabha and their leaders fully supported partition of the country. It is not possible to excuse them from this blame, if the blame is to be put. I can claim that my Party opposed it tooth and nail at that time. And naturally, as in the House so in the vast country, because of our smallness, there was not much impact, and the coustry was divided, not on the dead body of Mahatma Gandhi who announced, let India be divided over my dead body. But we saw in six months the dead body of Mahatma Gandhi in this very city of Delhi, who was killed by a fanatic, by an assassin in the name of what now goes by the name of Hindutva. It is a fact, a historical fact irrefutably established, which cannot be denied by anybody. But the point is, in our country, in spite of secularism, communalism persisted, riots persisted because of the ambivalence of the ruling power and sometimes the indulgence of the ruling power which has been the Congress since the beginning of our independence, uninterrupted till 1977. We know how many bodies were laid in communal riots. Whether it was Pandit Jawaharlal Nehru or Smt. Indira Gandhi or Rajiv Gandhi after that, except for tne interlude of 1977 to 1979, the ambivalence, the ambivalence of allowing the Silanyas in the disputed land in Ayodhya, that ambivalence is there in the Congress because they are here representing the vested in-trests in the country. And it is these vested interests which stood in th» way of transforming the country from a medieval society to a modern and scientific society, and which used this card of communalism quite often Mr. Mahajan asked as to why we are ashamed to call ourselves a Hindu. We feel it is not the

religious denomination which should identify us; it is our work which should identify us. One may be a peasant; one may be an artisan; one may be a teacher, like that, and not a Hindu or a , Muslim, because religion is the belief of an individual.

The country is secular when religion is divorced from the State and the State is divorced from the religion. A religious fanatic like Allauddin Khilji was secular in the sense that he kept the mullahs away from the State craft. That is what secularism means, that is, not to surrender to the scruples and prejudices of all the religions. But that is what has been done,. that is our secularism. And if it creates a misunderstanjine, then the ambiguity should be removed.

The question of riot can be dealt with properly if we take care of the essential issue. But exchange of documents between the VHP and the Babri Masjid Action Committee, we feel, is no way to (find a solution. There is no way to find out whether the mosque existed before, Or the temple existed before. And if it is proved that a temple did exist, still this does not warrant destruction of the mosque. Mosque should remain there. It is not a matter of Ayodhya or the VHP or the BJP, or the BJP giving the power of attorney to VHP, and now we see that all over the country they will purify the religious places by demolishing the mosques wherever they think that the' mosque was built on demolishing a temple. This philosophy is being advanced, which is very dangerous and should be totally rejected. I am a teacher of history and a student of history. I never learnt and I never taught that Rama was not historial being. Rama, you know, is respected and revered by crores of people all over the country, and a Bengali poet says, Rama is solace to the soul. Now he has been made an instrument—Rama - has been made an instrument of riot. We must not allow this to happen. We believe in secularism and we must try to save the country from the clutches of these fanatics. That is the urgent task before JS in the face of this blood-bathing *all* over the country. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NA-GEN SAIKIA): We shall have to stick to the time because we have less time at our disposal. Now, Shrimati Satya Bahin.

श्रीमती सत्या बहिन (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपका धन्यवाद देती हूं कि आपने मुझे समय दिया। आज का जो विषय है वह वाकई बहुत चिंता का विषय है। जो बीता वर्ष था वह समय तो चला गया, साल भी बीत गया, लेकिन मैं समझती हूं कि पिछला साल हमारे भारत के इतिहास का सबसे बुरा, दुर्भाग्यशाली काला, और खूनी वर्ष रहा। मैं तो उस वर्ष को भूला वर्ष कहूंगी और उस वर्ष के खलनायक रहे, भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह।

महोदय, आज हम लोग सांप्रदायिक स्थिति पर यहां चर्चा कर रहे हैं। मैं यह नहीं कहती कि सांप्रदायिक दंगे पहले नहीं हुए थे। हमारे देश में पहले भी कई स्थानों में दंगे हुए हैं और आज जो दंगे हुए हैं, जिससे हमारा पूरा देश और मैं समझती हूं कि एक दर्जन राज्य इस दंगे की आग में आज जल रहे है। किन्तु पहले दंगों में और आज के दंगों में बड़ा फर्क है। पहले दंगे होते थे, तो किसी एक घटना के ऊपर हो जाते थे, अचानक हो जाते थे, कोई एक दुघटना, या अचानक कोई एक बात हो जाती थी, जिस पर दंगे हो जाते थे, लेकिन आज के जो दंगे हैं, आज के हालात में जो सांप्रदायिक माहौल देश में पैदा किया गया है, वह कार्यक्रम बना करके, योजनाबद्ध रूप से, षड्यंत्र के माध्यम से किया गया है और वह षड्यंत्र और उसका लक्ष्य चुनाव को लेकर है।

मैं स्पष्ट कहना चाहती हूं कि मैं एटा जिले को बिलांग करती हूं। मेरा जिला एटा उत्तर प्रदेश में है। वह एक ऐसा छोटा जिला है, पर हम सब लोग घमंड करते थे। हमारा जिला अमीर खुसरो का जिला है, जहां अमीर खुसरो पैदा हुए थे और हमारा जिला सांप्रदायिक

[श्रीमती सत्या बहिन]

सद्भावना के लिए पूरी दुनिया में मशहूर रहा है। अभी तक हमारे जिले में कभी दंगे नहीं हुए थे। वहां पर पिछले महीने की चार तारीख को भारतीय जनता पार्टी की तरफ से एक जुलूस निकला, जिसमें एक महिला ने; जो पीले वस्त्र पहने हुए थी, सिर मुंडाया हुआ था और जो शायद नको संसद भी है दूसरे सदन की उसने बड़े भड़कीले भाषण दिए। पूरे जिले भर में घूम-घूम कर अल्पसंख्यकों के खिलाफ इतने अपमानजनक शब्द कहे, जिसे कोई भी सभ्य नागरिक सुनना पसंद नहीं करता और उन भाषणों की, उन नारों की प्रतिक्रिया तो जरूर ही कहीं न कहीं होनी थी।

महोदय हमारे जिले में जो दंगे हुए चार तारीख को, वह वहीं से शुरू हुए। गंज गुरुद्वारा में वहां पर इतने दंगे शुरू हुए। मैं वहां पर गई। वहां का दर्दनाक माहौल देखने लायक नहीं था। चली दुकानों में लाखों करोड़ों का नुकसान हुआ है। दर्जनों लोगों-हिन्दू, मुसलमानों दोनों की जानें गई हैं। बल्कि मैं कहती हूं कि हमारे देश के नागरिक उसमें मरे हैं। एक पत्रकार गजेन्द्र सिंह राठौ रिपोर्टिंग के लिए जा रहा था, उसको मार दिया। एक महिला अपने बच्चे के लिए दवा लेने जा रही थी, उसको रिक्शा में से उतार कर मार दिया। तो इस तरह का माहौल पैदा किया जा रहा है। इस माहौल के लिए जिम्मेदार लोग आज देश के कर्णधार बनने के लिए जा रहे हैं।

इन लोगों को, मैं समझती हूं कि जब तक हम कार्यक्रम बना कर और अपने एक नीति नहीं बनायेंगे, तब तक इन दंगों पर काबू नहीं पाया जा सकेगा। इन दंगों को रोकने के लिए आज हमारी जो संवैधानिक आस्थायें और प्रक्रियाएं हैं, उन पर चलना होगा।

भारतीय जनता पार्टी के लाल कृष्ण आडवाणी जी ने जो रथ-यात्रा शुरू की थी, वह रथ-यात्रा नहीं बल्कि वोट की खातिर एक रक्त यात्रा थी, जो पूरे देश में घूम-घूम कर सांप्रदायिक माहौल पैदा किया, घृणा का माहौल पैदा किया गया और यह इसलिए क्योंकि इनके पास कोई कार्यक्रम नहीं था, कोई योजना या राजनीतिक दिशा सरकार के लिए या देश के लिए या समाज को देने के लिए उनके पास कोई संदेश नहीं था, इसलिए उन्होंने राम का नाम राजनीति से जोड़ा और यह गैर-कानूनी है।

श्री विठ्ठलराव माधवराव जाधव (महाराष्ट्र) : यह राम को बेचना चाहते हैं।

श्रीमती सत्या बहिन : राम का नाम लेकर यह हमारे हिंदू समाज को कलंकित करना चाहते हैं। अपने राजनीतिक उद्देश्य के लिए... **(व्यवधान)**

श्री विठ्ठलराव माधवराव जाधव : राम के नाम को बेच कर आप वोट लेना चाहते हैं।

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन : यह आपका कहना है, हमारा नहीं।... (व्यवधान)

श्री विठ्ठलराव माधवराव जाधव : यह आपका कहना है।... **(व्यवधान)** आप तो यह भी कहते हैं।... **(व्यवधान)**

श्रीमती सत्या बहिन : तो भगवान राम का नाम कलंकित करने का, पहले तो इनको कोई अधिकार नहीं। दूसरी बात यह है कि हमारे लोक प्रतिनिधित्व की जो धारायें हैं, उनका यह खुला उल्लंघन करते हैं। इस नाते वर्तमान समाजवादी जनता दल की सरकार को चाहिए... **(व्यवधान)**

श्री विठ्ठलराव माधवराव जाधव : आखिर इनका राम नाम सत है, इनका यही पर्याय होगा।... **(व्यवधान)**

श्री संघ प्रिय गौतम : राम तो इतने साल तक लड़े हैं, उन्हें क्यों बदनाम कर रहे हो ।... **(व्यवधान)** और अब तो राम बैलट पर बैठ गए हैं ।

श्री विठ्ठलराव माधवराव जाधव : आपका तो राम नाम सत होने वाला है, ...घबराइये मत । आप देखिए, सामने आने वाला है ।

उपसभाध्यक्ष (डा० नगेन सैकिया) : प्लीज, यादव जी ।

श्रीमती सत्या बहिन : इन्होंने हमारे देश की धर्म-निरपेक्षता को चुनौती दी है, देश के अस्तित्व को चुनौती दी है, देश के नागरिकों के अन्तर्मन को ललकारा है। आज जितनी भी धर्म निरपेक्ष पार्टियां हैं, जितने इस शांतिप्रिय देश के नागरिक हैं उन सब को एक होकर और सब दलों को एक होकर आवाज उठानी चाहिए कि भाजपा की राजनीतिक मान्यता समाप्त की जानी चाहिए ।

उपसभाध्यक्ष महोदय, जब अपराध होते हैं तो हिन्दुओं और मुसलमानों में नहीं होते हैं । न तो हिन्दू लड़ना चाहता है और न मुसलमान लड़ना चाहता है। जब कही दंगे होते हैं तो अपराधी लोग उसमें सक्रिय हो जाते हैं और वह अपराधी जिनसे जनता हमेशा नफ़रत करती है जिनको अपने बीच बैठाना पसंद नहीं करती, बोलना-चालना पसंद नही करती, उनको दंगों में वह अपना संरक्षक महसूस करने लगती हैं और वह इसमें लूट-मार और हत्याएं करके पूरा फ़ायदा उठाते हैं। महोदय, मैं इस संबंध में यह कहना चाहती हूं कि मीडिया का भी रोल कुछ अच्छा नहीं रहता । जो हमारी आचार संहिता बनी हुई है उसका उल्लंघन कर उन लोगों ने सांप्रदायिकता को पूरी तरह भड़काने का काम किया है । एटा जिले में जब 4 तारीख को दंगा हुआ था, अखबारों में बड़ी अतिरंजित खबरें दी गई । इस के बाद 7, 8 और 9 तारीख को अलीगढ़ मे दंगा भड़का । उसकी यह प्रतिक्रिया हुई कि गोमती एक्सप्रेस में से 11 आदमियों को उतार कर मार दिया गया और उन 11 आदमियों मे से एक आदमी जो रेलवे का गार्ड था जिसके दाढ़ी थी उसको भी मार दिया । उसको मुसलमान समझ कर मार दिया था यही नहीं उसको मारने वाले भी उसी के समुदाय के थे । उस समुदाय के नागरिक नहीं थे, तो कहती हूं कि जो इस दल के ट्रेंड कार्यकर्ता थे, बजरंग दल के लोग थे, जो मार-काट में विश्वास रखने वाले थे वह लोग थे । जब उसकी लाश कानपुर में पहुंची और उसकी शवयात्रा निकली तो वहां लोगों में यह भड़का दिया कि इसको मुसलमानों ने मारा । इसलिए वहां भी दंगे शुरू हो गए । इसके बाद अलीगढ़ में तीन-चार दिन तक प्रशासन नाम की कोई चीज नहीं रही । गलियों में नागरिकों की लाशें पड़ी रहीं और उन्हें कुत्ते खींच रहे थे । बदायूं में दंगा फ़िर शुरू हो गया । इसके बाद बुलन्दशहर में हो गया, और दूसरे शहरों में हो गया । यह जो रक्त यात्राएं हैं, यह अभी रुकने वाली नहीं हैं, क्योंकि अभी जब तक चुनाव नहीं होगा तब तक यह निरन्तर बनी रहेंगी अब अस्थि-कलश निकाले जा रहे हैं कहां से इतने अस्थि-कलश आए ? जो हर गांव में, हर कस्बे में, हर शहर में, घुमाए जा रहे हैं । ऐसा कभी नहीं हुआ । मैं यह बताना चाहती हूं कि इनकी भगवान राम में कितनी आस्था है और राम के प्रति आस्था रखने वालों ने भोले भाले लोगों को अयोध्या तक पहुंचाया और उनको तरह तरह के प्रलोभन दिए । हमारे माननीय सांसद् ने कहा जैसा कि हमारे पाण्डेय जी ने भी बताया मैं माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी का सम्मान करती हूं और उनकी प्रशंसा करना चाहती हूं कि उन्होंने [illegible] यात्रा से पहले आडवाणी जी को आगाह भी किया था लेकिन इससे पहले इसकी बुनियाद पड़ चुकी थी । पिछले दिनों जब विश्वनाथ प्रताप सिंह जी इसके खलनायक जब प्रधान मंत्री थे तो उन्होंने पूरी तरह से इस अयोध्या के मसले को मंदिर और मस्जिद के मसले को एक प्रधान मंत्री की हैसियत से कोई जिम्मेदारी नहीं समझी, केवल अपनी कुर्सी के लालच में वह समय को ही टालते रहे । समय को ही नहीं टालते रहे बल्कि हिन्दुओं को और

श्रीमती सत्या बहिन]

मुसलमानों को गुमराह करते रहे । किसी के कान में कुछ कहते थे और दूसरे के कान में कुछ और ही कहते थे । इस तरह से उन्होंने दोनों के लिए ऐसी गुमराह करने की नीति अपनाई । मैंने अरुण शौरी का लेख पढ़ा था । उसमें उन्होंने लिखा था कि विश्व हिन्दू परिषद के लोगों से तो वी०पी० सिंह ने कहा कि वहां पर मस्जिद नाम की कोई चीज ही नहीं है । जब कार सेवक आयेंगे एक एक ईट ले जायेंगे तो मस्जिद रह ही नहीं जायेगी और जब बाबरी मस्जिद वालों से बात की तो उनसे कह दिया कि मस्जिद को हम हाथ नहीं लगाने देंगे । तो ऐसी डबल पालिसी चलायी । ऐसे व्यक्ति को प्रधान मंत्री पद पर रहने का क्या अधिकार था जोकि अपने उत्तरदायित्व को नहीं निभा सकता ?

महोदय, आज समय आ गया है कि जितने धर्म-निरपेक्ष लोग हैं, बुद्धिजीवी हैं, पत्रकार हैं, लेखक हैं, कवि हैं--हम सब को मिलकर राष्ट्र के प्रति हमारा, एक नागरिक की हैसियत से जो उत्तरदायित्व है, उसको निभाने के लिए गांव गांव में इस फैले हुए जहर को समाप्त करने के लिए जन-संपर्क करना होगा, सबको मिलकर इस जहरीले वातावरण को फिर से स्वच्छ बनाना होगा । मान्यवर, इस देश की आजादी की लड़ाई हिंदू और मुसलमान दोनों ने लड़ी थी । यह देश किसी एक संप्रदाय की बपौती नहीं है । न किसी एक संप्रदाय को बहुमत होने के नाते दादगीरी करने का अधिकार, न देश देता है और न देश की जनता देती है । साथ ही, मैं कहना चाहती हूं कि मंदिर और मस्जिद विवाद को जो लोग हल नहीं होने देना चाहते, जो अपने राजनैतिक स्वार्थों के लिए इसे हल होने नहीं देना चाहते, उनको इससे बिल्कुल दूर रखकर त्रिपक्षीय वार्ता के द्वारा जल्दी से जल्दी हल किया जाना चाहिए । ये लोग मंदिर मस्जिद के मसले पर अदालत के भी फैसले को नहीं मानना चाहते और न वार्ता से हल करना चाहते । दूसरी बात यह है कि जो हमारी न्यायालय की प्रक्रिया है, उनको भी मंजूर नहीं करना चाहते ।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Please be brief.

श्रीमती सत्या बहिन : मान्यवर, अयोध्या का विवाद जोकि न्यायालय के अंदर विचाराधीन है, उसको जल्दी से जल्दी निपटाया जाना चाहिए । इससे जुड़े बाधाएं पैदा करने वाले जो राजनैतिक लोग हैं, उनकी राजनैतिक मान्यता खत्म कर अलग रखा जाना चाहिए ।

महोदय, आज इस सांप्रदायिक वातावरण में आज भी इंसानियत बाकी है । बहुत से हिंदुओं ने मुसलमानों को बचाया है और मुसलमानों ने हिंदुओं को बचाया है । मैं सरकार को कहना चाहती हूं कि ऐसे लोग जो एक दूसरे को बचाते हैं, जिलों जिलों में ऐसे लोगों की लिस्ट रखनी चाहिए । आज के इस दूषित वातावरण में ऐसे इंसानों का होना बहुत जरूरी है, बहुत मायने रखता है । ऐसे लोगों को चाहे प्रदेश सरकारों की तरफ से, चाहे केन्द्र सरकार की तरफ से प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए । उनको सम्मानित किया जाना चाहिए । यह सम्मान 26 जनवरी के दिन, जोकि हमारा राष्ट्रीय पर्व होता है, उस दिन किया जाना चाहिए क्योंकि इस देश की आजादी के लिए हिंदू और मुसलमान--दोनों ने कुर्बानी की है । इस पर सब का समान अधिकार है । यह देश महात्मा गांधी का देश है, नेहरू का देश है, मौलाना आजाद का देश है, सरदार भगतसिंह का देश है, डा० अंबेडकर का देश है । यह किसी एक व्यक्ति या एक समुदाय की बपौती नहीं है, न कभी उनकी ऐसी दादागिरी चलने दी जाएगी ।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद देती हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया ।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Now, Mr. Aurora.

SARDAR JAGJIT SINGH AURORA (Punjab): Thank you, Mr. Vice-Chairman. Before I start, I would like to thank the

honourable Member, Mr. Raj Mohan Gandhi, for permitting me to speak before him.

Sir, I have been listening to the speeches about the communal disharmony and the violence since yesterday and I find that we have been repeating this thing for the last four years that I have been a Member of Parliament here, every year and, possibly, every session. Now, I wonder whether we have really tried to analyze this problem or are wanting to analyze this problem.

Let us first accept that the communal virus came to us at the time of Independence. And did we really make an effort to ensure that we could be free of this communal virus? Unfortunately, when the elections came upon us we found that the communal virus paid dividends to the politicians, of any religion, hue or colour—I am not blaming one party or the other. Rather than thinking of ways and means of getting rid of this communal virus, we have been making use of it, and we have extejnded it to the castes, the ethnic minorities and everything 5. 00 P. M. else. Listening to the hon. Member, Mr_ Pramod Mahajan, one thing that struck me was that whatever he was saying he was totally sincere about it. That is what worried me more than anything else. It worried me because today you have a dichotomy between the majority community or the representatives of the majority community and the other communities which we call "minorities, " and the majority community feels that it is the injured party and not the minority communities. So, unless we are able to overcome this and try and establish mutual rapport and understanding, we will never get out of understanding, we will never get out of this communal violence.

Blaming one individual or the other, one party or the other and thereby getting a feeling of righteousness, I am afraid, is totally misplaced. Therefore, I feel that we have wasted a lot of time. Instead, we should get down to this factor. This communal virus is big danger. How are we going to |V?t put of it?

As long as the politicians feel that it is to their individual or sectarian advantage and that they must exploit it to remain in power or come back to power, nothing is going to happen. So, we really have got to think afresh.

There are other factors, apart from what has been mentioned, which also lead to this communal violence. Those are economic factors. There is no doubt in my mind that poverty is one of the main reasons. You can excite people who are poor, who have no stake in the country and who have possibly taken to criminality and lumpeni-sation. They are always ready to fish in troubled waters and be in a position to loot something or the other. They are with the so-called political or communal leaders. We know that a certain amount of Mafia exists in the country, whose job it is to gather the lumpens around them for protection and display personal strength or party's strength. These are some of the factors which must be taken note of.

I don't think that any religion teaches hatred against other religions. Communa-lism is not really religion. It is politicisa-tion of the religion for the benefit of certain selfish and corrupt elements.

The next thing I would like to mention is about corruption, I should say, corrupt and inefficient administration. This factor has created problems all over the country. You can see it in places like Kashmir, Punjab and Assam, and what damage has been caused by corrupt and inefficient administration. Today police is criminalised, and the Government is incapable of putting them on the right track. Therefore, when communal riots take place, the police takes sides. As a result, the minorities have stop-ed having any trust, any faith in the Gov-vernment. That is a very major factor. When the Government itself losses its credibility, how do you consider, the minorities or anybody else in distress will have faith in it? In fact, why do you speak of the minority? Even the majority does not have faith in the Government, that it has been evenhanded. So, this is another factor which we must upt right. If we cannot clean up Our administration, if we cannot get the

[Sardar Jagjit Singh Aurora]

police trained properly to be non-communal, not to take sides, I am afraid no amount of our specifying here is going io help us.

As the time is short, I would suggest some of the steps that we should take if we have the courage to take. I feel that all religious processions must be banned nothing to do with religion. This is just a by mutual agreement. Processions have show • of strength—how powerful we are in a certain state, in a certain village. Therefore, it is giving a warning to the other people that you have to behave or be underdog and accept it. This is a most important step.

Similarly, there must be a control on loud-speakers. When large congregations are held and fiery speeches are made and people are inspired to shout certain slogans, they hurt another community. That is another reason which causes riots.

Whatever may be the reasons against it, I feel a time has come when we must have a special riot force. You don't have to raise a new force. Certain units of the CRPF can be specially trained for this purpose. Quite rightly they must have representation from all communal and ethnic groups.

All religious places, specially the historical religious places must be provided security. Any attack on them by any community of persons must be very severely dealt with.

I would like to end up by making an appeal. If we are really sincere, if not stop, at least we must reduce the communal incidents. Let the politicians themseives do a certain amount of introspection and realise how much responsible they are for these happenings.

SHRI RAJ MOHAN GANDHI (Uttar Pradesh): One extraordinary feature in this time of unprecedented communal riots is . that the nation does not have a full-time Cabinet level Home Minister. Through you and through the House I urge upon the Government to have a full-time Cabinet level Home Minister.

SHRI HARVENDRA SINGH HANS-PAL (Punjab): Is Mr. Subodh Kant Sahai a part-time Minister?

SHRI RAJ MOHAN GANDHI: I feel Subodh Kant Sahai Ji will make an excellent full-time Cabinet Minister. I feel the country needs a full-time Cabinet level Home Minister. Subodh Kant Ji is also holding the portfolio of Information and Broadcasting.

Secondly, the bias in the police force is a grim matter to which sufficient attention is not being paid. It is a question of leader-. ship, of appointments and training; it is a matter that needs immediate attention.

I would like to refer to certain achievements of the devotees of the Hindu Rashtra, those who want to seize the land on which the mosque is located and to demolish it. As Appa Saheb Kulkarni said this morning, you have succeeded in damaging the prestige of India worldwide. Secondly, you have turned confident Hindus into an insecure community. You have tried to substitute for a world-spanning philosophy of a confident people a narrow-minded re-vanchist. philosophy, of an insecure people. You have injected into the Hindu psyche a persecution complex. You have forged in this nation of many separatisms, a new separatism, a deviation, a deviationist Hindu separatism from mainstream Hindu society. Instead of Hinduism being a moral force, a spiritual force, a social force, you have tried to turn Hinduism into a political force. Ravana abducted Sita. You have tried to abduct Rama.

May I ask all Hindus including those who have subscribed in a little or in a large measure to the philosophy of Hindu Rashtra ask themselves some questions. Before I put read these questions—I will take only a minute or two—I want to read two sentences from the hon. Member, Stori Pramod Mahajan's speech yesterday.. Said Pramodji:

4

"राम जन्मस्थान पर जहां पर सदियों से मंदिर था, द्वेश के आधार पर एक विदेशी आक्रामक ने उस मंदिर को तोड़ा और मस्जिद द्वेश के आधार पर जिसकी निर्मिती हुई, उसकी जगह प्रेम के आधार पर भगवान राम का जहां मंदिर है उसका पुनर्निर्माण करना, यह कोई राष्ट्रों का द्रोह नहीं है"
अर्थात प्रेम को बदला लेने की भावना से जोड़ दिया गया है।

So the questions for all of us Hindus are as follows: Do we love Rama or do we dislike Babur? Is it really the love of Hinduism in our hearts or a dislike of Muslims in our hearts? Is it the love of mandir or a dislike of masjid? I said that you have tried to abduct Rama but Lord Rama is not so easily kidnapped and just as Sita was liberated, Rama is going to be liberated from those who have tried to imprison him and confine him. Rama will be liberated from the advocates of a narrow-minded revanchist philosophy. Love will be liberated from the passion for revenge and God willing, India will be liberated from the clutches of communalism. I thank you, Mr. Vice-Chairman.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Shri Shamim Hashmi. Please conclude within fifteen minutes.

SHRI A. G. KULKARNI: Before he commences I want to know whether the clarifications on the statement regarding current fiscal situation will be there or it is going to meet the same fate which the statement on the industrial policy has met? The Leader of the House is here and he can tell us. It was listed in today's agenda. It is already 5. 15 P. M.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Yes, it is listed in today's agenda. After the discussion is over, **it** will be taken up.

SHRI A. G. KULKARNI: Today?

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): I do not think because we shall have **to** complete the discussion on the **communal situation.**

SHRI A. G. KULKARNI: The Prime Minister is also going to reply **to** the debate.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Yes, he is going to reply.

SHRI A. G. KULKARNI: When?

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): He will reply on the 4th January, at 12 o'clock.

SHRI A. G. KULKARNI: What about the clarifications?

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): We shall let you know after-wards.

SHRI A. G. KULKARNI: I am afraid it is going to meet the same fate as the statement on the industrial policy.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): I don't think so.

SHRI A. G. KULKARNI: Okay.

SHRI SANTOSH BAGRODIA (Rajasthan): Sir, I think, in all fairness, we should decide whether we want to take up the clarifications today or not. You cannot say, "I will let you know. " Supposing it goes on up to 8 o'clock, do you want us to sit up to 8 o'clock and then know our programme?

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): At first we shall have to complete this discussion. Then only we shall have to decide whether we have to sit beyond 6 o'clock and take up some other business.

SHRI SANTOSH BAGRODIA: Are we going from one speaker to another? Is this the way we are planning our programme here, Sir? You must tell us whether we are going to continue till 8 o'clock or 9 o'clock or 10 o'clock.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): The parties have already given their names. I have already requested Members to be brief enough so that we can complete the discussion today itself before 6 o'clock.

SHRI SANTOSH BAGRODIA: What is the decision? Will we go up to 7 o'clock or 8 o'clock? You have got to have some decision. It cannot be guess-work.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): There are about seven speakers. We shall decide it later on. If we have to sit beyond 6 o'clock, with the consensus of the House only we can take a decision and it will be done at 6 o'clock. Before that, let us complete this discussion.

SHRI SANTOSH BAGRODIA: We must know your decision. Is this your decision that you will tell us at 6 o'clock?

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): We shall have to complete the discussion first. Let us try to complete it as soon as possible. I request all the Members to be brief.

SHRI A. G. KULKARNI: The point is, on Monday, the Prime Minister will reply at 12 o'clock.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Tomorrow.

SHRI A. G. KULKARNI: OK. Then there is the clarification on excise. A new statement by the Leader of the House is to be made. Today it was demanded by Mr. Dhawanji and he has also agreed to make a statement. When is he going to make a statement? We have to prepare for if.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): The Business Advisory Committee will take a decision.

SHRI JAGESH DESAI: During the Session he will make a statement.

SHRI A. G. KULKARNI: During the Session ! Oh my God !

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Let us finish the discussion first.

SHRI SANTOSH BAGRODIA: Agreed. At 6 o'clock you will tell us what the final (lecision is.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA: Let us complete the discussion. Then if we have time in our hands, we can take up some other business.

SHRI P. SHIV SHANKER: Mr. Vice-, Chairman, it is better that we are clear in this matter. Tomorrow at 12 o'clock, the Prime Minister will be replying to the debate on the communal situation. So far as the Finance Minister is concerned, will he be in a position to complete it after the Private Members' work is over? If not, then it goes up to Monday. On Monday, immediately after the Question Hour ______ *{Interruption).*

SHRI YASHWANT SINHA: As far as I am concerned, I have repeatedly said in this House that I am ready for a discussion on the clarifications of my statement" at any time. There is absolutely no hesitation on my part to take it up at any time, even after 6 o'clock. I was the one Who said that it should not suffer the fate of the industrial policy resolution. I am, therefore, suggesting that after this dis^ cussion is over, if there is still time left and the sense of the House is that we should sit beyond 6 o'clock, then we should take up the clarification. As you said, Sir, you will take a decision or a view in the matter at 6 o'clock. *(Interruption).* The Vice-Chairman has said that he will take a decision about this matter at 6 o'clock whether we should sit beyond 6 o'clock or not. As far as I am concerned, we are prepared to sit beyond 6 o'clock. I am entirely in the hands of the Chair.

Secondly, tomorrow, after the Private Members' business is over at 5 o'clock, we will take whatever time is left for the clarifications. If we cannot finish it, then I am pleading with the House and with the Vice-Chairman that we must finish it by Monday. That is the plea I am making, a very humble plea that we must try and finish it by Monday, if not by tomorrow..

SHRI SUKOMAL SEN (West Bengal): What about prices?

SHRI YASHWANT SINHA: Prices will come in the next week.

SHRI A. G. KULKARNI: I will make a request. Today we are not prepared because we were told by the Secretariat that today it will be only communal situation discussion. So we did not even bring the papers for clarifications.

SHRI YASHWANT SINHA: We must take it up tomorrow after 5 o'clock.

SHRI SANTOSH BAGRODIA: Theu we will take up only communal situation today.

SHRI YASHWANT SINHA: Sir, I am quite willing. This is a very good suggestion which hon. Member Shri Bagrodia has made. Let us take it up at 5 o'clock tomorrow, the clarifications on my statement.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): All right. Tomorrow, at 5 o'clock, we will take up the clarifications on the Finance Minister's statement.

श्री शमीम हाशमी : वाइसचेयरमैन साहब, इस मुल्क में जो साम्प्रदायिकता का माहौल है इस पर कल से बहस चल रही है । मुखतलिफ किस्म के ख्यालात आये है एक-दो अपवाद को छोड़ कर सब ने गहरे कंसर्न का इजहार किया है। बहुत से फेक्ट्स आ चुके हैं, बहुत से मरने वाले लोगों के नाम आ चुके हैं । हम कोशिश करेंगें कि कम से कम वक्त में उन बातों का जिक्र न करें जिन बातों का जिक्र दो दिनों से चल रहा है । लेकिन हम तकरीर करने के लिए बुनियादी तौर पर खड़े हुए हैं । हमारी तकरीर मातम की शक्ल अख्तियार कर सकती है, सिनाकोबी की शक्ल अख्तियार कर सकती है, नोहाबी की बात कर सकते हैं, नालापाबन्द लें नहीं है । हम को बुनियादी तौर पर फरियाद करनी है । इस बात के लिए आज हम देख रहे हैं कि हमें ज्यादा सदमा इस बात का है कि तारीख में बहुत सी कोमों ने बडी तरक्की की है । कदीम हिन्दुस्तान में इंडस वैली की तहजीब, बेबीलोन की तहजीब, रोम और यूनान की तहजीब रही है । जिन लोगों ने ऊंचे-ऊंचे मकान बनाये थे, बड़े-बड़े भवन बनाये थे उन्होने ख्वाब में भी नहीं सोचा होगा कि आने वाले किसी जमाने में हम पुरातत्व विभाग के अध्ययन का विषय बनने वाले हैं । उन लोगोने अपने लिए बर्बादी के उसी रास्ते को मुख्तलिफ किया था जो इस सदी में आकर हम हिन्दुस्तानियों ने अपनी बर्बादी के लिए जिस रास्ते को मुन्तखिब किया है । हमें लगता है हम बर्बादी के उस रास्ते पर चल कर हम उसे तबाही की ओर ले जा रहे हैं जिस पर आने वाली नस्ल ताज्जुब करेगी कि कभी देश में एक आला जम्हूरियत में इस भवन में पढे लिखे लोगों ने बैठकर मुल्क के मुस्तकबिल के बारे में गौर किया । शायद उन्हे यकीन न आये कि जिस रास्ते पर हम चल रहे है वह हमें बर्बादी के कगार पर लाकर धकेल रहा है ।

दूसरी बात यह है कि जो फिरकेवाराना माहौल है वैसे तो यह तारीख कि देन है लेकिन हिन्दुस्तान में जो हम बात कर रहे हैं हमें उसके इलाज के पहले अपने गिरेबान में झाक कर देखना होगा उसकी वजह को जानना होगा । अभी कुछ दिन पहले अटल बिहारी वाजपेयी जी से हममें से कुछ मुसलमान एम पीज मिले थे कुछ बात कहना चाहते थे उन्होंने हमें यह कहा कि हाशमी साहब एक जमाना था कि हिन्दु महासभा और जनसंध के लोग इक्के-दुक्के हुआ करते थे कोई पूछने वाला नहीं होता था लेकिन आज फिरकेवाराना माहौल इस तरह अना हुआ है, आप अपनी बात मत कहीये, भी खामोश रहिए । वह कीचड में कमल जैसे आदमी हैं । जज्बाती आदमी हैं, जज्बात की रो में आकर सच्ची बात बता दी जिसका आने वाले दिनों में पता चलेगा कि अटल बिहारी जी ने सही निशानदेही हालात की है । लेकिन फिरकापरस्त ताकतें जो बडी कमजोर ताकते थीं उन ताकतों ने आज ताकत पकड ली है । आज जो लोग क्रेडिट ले रहे है वे गैर कांग्रेसी, सेक्यूलर जमायते, बी जे पी , जनसंघ, विश्व हिन्दू परिषद आर एस एस को तनकीद कर रहे हैं वे ही जिम्मेदार हैं । असल में उन लोगों ने नाग को दूध पिलाया है, दुबली-पतली देह को ताकतवर बनाया है । पीछे जब

[श्री शमीम हाश्मी]

नयी सियासत का इंतखाब हो रहा था गैरकांग्रेसवाद के नाम पर कम्यूनिस्ट पार्टी, सोशलिस्ट पार्टी और दूसरी गैर कांग्रेस सेक्यूलर पार्टी ने मिलकर बी०जे पी० जो पहले जनसंघ कहलाती थी, के साथ समझौता किया और हुकूमत बनायी। हुकूमत में कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट उनके साथ बैठे। इससे फिरकापरस्त ताकतों को सोसाइटी में मान्यता मिल गई उनका एक्सेप्टेंस हो गया। लोगों ने समझा ये राष्ट्रीय लोग हैं ये हुकूमत चला सकते हैं। कम्युनिस्ट, उनके साथ बैठ कर हुकूमत कर रहे हैं, सोशलिस्ट उनके साथ बैठकर हुकूमत कर रहे है। इस तरीके से ये लोग जो क्रेडिट ले रहे हैं इन्हीं लोगों ने इस मुल्क में फिरकावाराना ताकतें दी। जब 1967 में बिहार और उत्तर प्रदेश में और अन्य राज्यों में संविद की सरकारें गिरी तो तमाम सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट कहने लगे कि जनसंघ फिरकापरस्त हैं लेकिन 1969 और 1971 के राज्यों के मध्यावधि चुनावों में इन लोगों ने फिर जनसंघ के साथ बैठ करके सरकारें बनाई और तब कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट और दूसरे गैर कांग्रेसी जमायतें जनसंघ को सेकूलर कहने लगी। वे इस बात को भूल गये कि वे उसकी तनकीद करते थे। जब भी गैर-कांग्रेस सरकारें बनी और फिरकापरस्त ताकतें हुकूमत में आई, जनसंघ उनके साथ रहा, तो कहीं जमशेदपुर में, कहीं रांची में और हठिया में खुंखार फसाद हुए। हुकूमत टूटने के बाद सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट जनसंघ की तनकीद करने लगे। सन् 1977 के बाद तमाम अपोजिशन पार्टियां चाहे सोशलिस्ट हों या कम्युनिस्ट ग्रुप्स हों, इन लोगों ने फिर जनसंघ के साथ मिलकर सरकार बनाई और वह बिलकुल सेकूलर जमात हो गई। 1977 की सरकार टूटी तो बडे-बड किताब छापे गये और दोहरे सीटीजनशिप का मामला उठाया गया और जनसंघ को फिरकापरस्त जमात कहा गया। आज पुलिस फोर्स की निन्दा की जाती है। लेकिन आप भूल गये कि 1970 के 10 जनवरी से अलीगढ में पी०ए०सी० की बर्बरियत सामने आई तो वह मलियाना से होकर बिजनौर तक पहुंची। 1967 में संविद की सरकारें बनी तो सरकार में केडर बेस्ड लोग आये ऐसी पार्टी के लोग आये जिनके वर्कर थे जो परेड करते थे इन लोगों की पुलिस फोर्स में 30 से 40 परसेंट तक बहाली हुई। 1977 में यही हुआ। 30 से 40 परसेंट ट्रेन्ड लोगों की बहाली हुई। आज आपको शिकायत है कि मिडिया हमारे खिलाफ बोलता है। इलक्ट्रोनिक मिडिया पर आपको पता है कि 1977 से 1980 तक किस का कब्जा था? उन्होंने अपने तमाम लोगों को मिडिया में भर दिया, पुलिस फोर्स में भरा। पहले 1967 में और फिर 1977 से 1980 तक सब जगहों पर इनको भरा गया। आज आप मातम करते हैं। बात इतनी ही नहीं है, सब जगह उनको एडजस्ट किया गया। जब भी मुल्क में चुनाव का वक्त आता है तो सेकुलर कहने वाली पार्टियां भी गैर कांग्रेस जमातों के साथ हो जाती हैं और उनके साथ हो जाते हैं जिनकी हमारे कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट दोस्त निन्दा करते हैं क्या जनता दल की हिमायत करने वाले मुस्लिम नेताओं को यह मालूम नहीं था, जो मुस्लिम नेता आज बवेला कर रहे हैं, क्या इन मुस्लिम नेताओं को मालूम नहीं था, कम्युनिस्टों को मालूम नहीं था, क्या सोशलिस्टों को मालूम नहीं था कि सवा दो सौ सीटों पर लडने वाला जनता दल बी जे०पी० के बिना सरकार नहीं बना सकता है? क्या जनता दल के मुस्लिम नेताओं को और कम्युनिस्ट को यह पता नहीं था कि बी.जे पी० ने जय श्री राम के नाम पर वोट मांगे हैं? क्या उनको मालूम नहीं था कि आडवाणी जी जीतने के बाद मंदिर बनायेंगे या जामा मस्जिद में नमाज पढ़ने जायेंगे? आपका फरमान आया कि जहां जनता दल है वहां जनता दल को वोट दो और जहां जनता दल नहीं है वहां जो भी गैर कांग्रेसी दल है उसको वोट दो। आज आधे से ज्यादा बी.जे० पी० के लोग वहां से जीते हैं जहां एक लाख से ज्यादा मुस्लिम आबादी है। वहां से आधे से ज्यादा सीटें आई हैं। उन वोटों का 60 परसेंट भी कांग्रेस को मिला होता तो आज कांग्रेस की सरकार होती। आपको सोचना चाहिए कि बोये पेड़

बबूल का, आम कहां से खायें । आपने गुनाह किया है, गलती की है। क्या कम्युनिस्टों को मालूम नहीं था कि बी० जे०पी० एक सियासी पार्टी है, वह सन्यासी पार्टी नहीं है ? वे जीतने के बाद मंदिर नहीं बनाएंगे तो क्या बनाएंगे ? आपने चेक और बेलेन्स क्यों नहीं किया ? आज कम्युनिस्ट बोलते हैं। लेकिन जब जगमोहन की बहाली हो रही थी तो क्या कम्यूनिस्टों को मालूम नहीं था कि जगमोहन कौन है, * गवर्नर होकर गये । क्या जनता दल को मदद करने वाले मुस्लिम नेताओं को, सोशलिस्टों और कम्युनिस्टों को यह मालुम नहीं था कि अरूण शौरे जो प्राफेट की शान के खिलाफ गुस्ताखी करता है, मुस्लिम दुश्मनी के लिए मशहूर हैं, उसको पद्मश्री और पद्म भूषण पता नहीं क्या क्या, श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह दे रहे हैं ? क्या इस बात की भी उन लोगों ने कभी तसदीक की है ?

आतंकवादियों के साथ जैसा बर्ताव करो सही हैं, लेकिन जनता के साथ बर्ताव मां के सामने बेटे का बाप के सामने बेटी का, भाई के सामने बहन का, शौहर के सामने बीबी का जो रेप और बलात्कार हुआ, यह हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय अखबारों ने लिखा है । इसे हिन्दू पत्रकार लोगों ने लिखा है, मुसलमानों ने नहीं लिखा । यह बात यहां हाऊस में डिसकस हो चुकी हैं और इसे सब लोग जानते हैं । तो उस वक्त आपने तनकीद नहीं की बल्कि आपने इनाम दिया । इससे तुमने कश्मीर के तमाम लोगों को हिन्दुस्तान के खिलाफ कर दिया । जिसने वहां पर यह काम किया, * । लेकिन उस वक्त भी किसी सोशलिस्ट या किसी कम्युनिस्ट ने इस बारे में नहीं कहा, जनता दल से संबंध रखने वाले किसी भी मुसलमान ने नहीं कहा, किसी ने कुछ नहीं कहा । अगर ऐसा है तो आज यहां पर नाटकबाजी क्यों करते हो और क्यों मुसलमानों को धोखा देते हो । इस तरह से इस देश में मामला चलने वाला नहीं हैं । हम जानते हैं कि जयपुर में फसादात क्यों हुए; बहुत से नाम हैं मेरे पास लेकिन मैं उनको यहां पर गिनाना नहीं चाहता लेकिन गुजरात से लेकर राजस्थान तक जो खून की होली खेली गई, खून के दरिया बहाये गये उसको रोका जा सकता था । जब रथ चला तो उसे उस समय विश्वनाथ प्रताप सिंह ने क्यों नहीं रोका ? आज वे पिछड़े और मुसलमानों के अलबंरदार बनते हैं । उनको रोकना चाहिये था और कहना चाहिये था कि रथ नहीं चलेगा उस रथ के चक्के के नीचे मुसलमानों की हड्डियां पिसती रहीं । इस रथ के चक्के के नीचे मुसलमानों की इज्जत लूटती रही । इस रथ के चक्के के नीचे मासूम बच्चों की जानें जाती रही । जिन चीजों को बनाने में पूरी जिंदगी लग जाती है उनको हजारों की संख्या में जला डाला गया । मकानों को जला दिया, दुकानों को जला दिया । क्या विश्वनाथ प्रताप सिंह और जनता दल के लोग इसको रोक पाये ? सी पी०आई० और सी पी०एम० के लोग बड़े भारी सेकूलर बनते हैं । क्या उन्होंने उस वक्त ऐलान किया कि या तो रथ रोकों नहीं तो हम सपोर्ट वापस लेते हैं । लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया । आप इस तरह से कब तक हिन्दुस्तान के मुसलमानों को बेवकूफ बनाते रहोगे । यह नाटकबाजी बंद करो । यह बंद होना चाहिये । जब रथ दिल्ली के अंदर था तो मुलायम सिंह यादव और लालू प्रसाद यादव ने विश्वनाथ प्रताप सिंह से रेक्वेस्ट की, हाथ जोड़कर रेक्वेस्ट की कि रथ को रोको लेकिन आपने रथ नहीं रोका और आपने रथ को जाने दिया । आडवाणी जी ने पार्लियामेंट के अंदर कहा हैं कि वी० पी० सिंह ने उनसे कहा था कि आप सब्र करें हम खुद कार सेवा में शामिल होने जा रहे हैं । यह पार्लियामेंट के अंदर उन्होंने कहा और वी पी सिंह ने इसका कोई विरोध नहीं किया कि उन्होंने ऐसा कोई वायदा नहीं किया था । अरूण शौरी ने कहा कि वहां मस्जिद हैं ही नहीं वहां तो राम लला का मंदिर है । ये बातें तो हम यहां पर कह रहे हैं उसे हमारे देश की 85 करोड़ जनता सुन रही है वह

*Expunged as ordered by the Chair.

[श्री शमीम हाशमी]

इस बात का फैसला करे कि आखिरी क्षण में जो उस समय कांग्रेस की हुकूमत और विश्व हिन्दू परिषद् के बीच में रिटन अग्रीमेंट हुआ था कि लखनऊ बेंच जो इलाहाबाद हाई कोर्ट की है उसके फैसले को वे मानेंगे और फैसले का इंतजार करेंगे और जो फैसला होगा वे उनकी पाबन्दी करेंगे । यह अग्रीमेंट कांग्रेस ने किया था । लेकिन आपने उसको नहीं माना । जब गवर्नमेंट का फैसला मौजूद था, हुकूमत बदलने से गवर्नमेंट के फैसले नहीं बदल जाते हैं, जब फैसला मौजूद था तो किस बुनियाद पर आपने 4 महीने की सुलह की । आपने पिछले अग्रीमेंट को रद्दी की टोकरी में डाल दिया यह इसलिये कि अगर हकीकत सामने आ जायेगी तो यह गलतफहमी मुसलमानों के दिमागों से दूर हो जायेगी जो कि आपने कांग्रेस के खिलाफ प्रोपेगंडा करके पैदा की थी । कांग्रेस का उनके साथ सुलहनामा हो चुका था कि मस्जिद रहेगी और अदालत का जो भी फैसला होगा उसे विश्व हिन्दू परिषद मानेगी । विश्व हिन्दू परिषद के सिंघल इसको मान गये थे, दूसरे उनके जो लोग हैं वे इसको मान गये थे । यह श्री नारायण दत्त तिवारी जब वहां के चीफ मिनिस्टर थे तब हुआ था । लेकिन इसको नहीं माना और चार महीने का सुलह कर ली । इसका मतलब यह है कि अरुण शौरी सही कहते हैं कि चुनाव के पहले उनके साथ इनका समझौता हो गया था और इसी संदर्भ में इन्होंने उनको 4 महीने का टाइम दिया और कांग्रेस के साथ जो समझौता हुआ था उसको रद्दी की टोकरी में डाल दिया । लेकिन जब पानी सर से ऊपर हो गया तो आखिर में उनको यह सब करना पड़ा । मैं यहां पर आपसे कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान आजादी के बाद अमेरिका से पी एल० 480 के अन्दर अनाज मंगाता था लेकिन बाद में उसने अपना खेती का प्रोडक्शन बढ़ाकर अपने पांव पर खड़ा हो गया, फिर वह कंज्यूमर टेक्नोलोजी में सेल्फ सफीशियेंट हो गया, वाटर टेक्नोलोजी में वह सेल्फ सफीशियेंट हो गया । दोनों लड़ाइयां अपने हथियारों से लड़ ली । समुद्र की गहराइयों में जा कर अपनी पन-डुब्बी से गुड़गुड़ाहट की, आकाश की बुलंदियों के अन्दर राजीव गांधी ने अग्नि परीक्षा कर करके इस देश से मल्टीनेशनल पावर्स को खत्म कर दिया और मल्टीनेशनल ताकतों में हाहाकार पड़ गया कि यदि हिन्दुस्तान इस तरह से 84 करोड़ जनता के साथ तरक्की करता गया तो वह वर्ल्ड का सुपर पावर बन जायेगा । इसलिये मल्टीनेशनल ताकतों ने एक षडयंत्र रचा, साजिश रची हिन्दुस्तान को डिस्टेब्लाइज करने के लिये । मैं यह पूछना चाहता हूं कि 1952 के चुनाव में यह मंदिर मस्जिद का झगड़ा क्यों नहीं आया, 1984 के चुनाव में क्यों नहीं आया ? लेकिन इस दफा एक मास्टर प्लान तैयार किया गया । ऐसा मास्टर प्लान तैयार किया गया मदारी की तरह से एक तरफ झोले में सांप डाला और एक तरफ झोले में नेवला डाला । जितने मुस्लिम फिरकापरस्त थे उनको एक तरफ झोले में लपेटा गया जिन्होंने झूठ बोल कर के कांग्रेस का मुस्लिम वोट तोड़ा और दूसरी तरफ बी० जे० पी० की तरफ से कांग्रेस के हिन्दू वोट तोड़ने की कोशिश की गई । यह दोनों वोट मदारी के झोले की तरह से विश्वनाथ प्रताप सिंह के झोले के अन्दर चले गये, इन्हीं दोनों की वजह से इन्होंने राज किया । सोचिये, आज तक हिन्दुस्तान में ऐसा नहीं हुआ था । यह मल्टीनेशनल पावर्स का दिया हुआ एक नक्शा था इसमें इस दफा उनको काम-याबी हुई और आज हिन्दुस्तान इस एक साल के अन्दर इतना पीछे चला गया है कि कोई भी सेकुलर डेमाक्रेटिक पार्टी मजबूती के साथ भी अगर आयेगी तब भी जो नुकसान हुआ है उसको रिपेअर करने के लिये हिन्दुस्तान को पचास साल लग जायेंगे (समय की घंटी) जानेवाली, अभी तो मैंने शुरू किया है यह सारे लोग मल्टीनेशनल पावर्स के सीधे एजेंट हैं । इसके बहुत सारे सबूत हैं । यह लोग मिल कर के हिन्दुस्तान अमन के माहौल को खराब करते हैं में एक तरफ हाऊसिंग के लिये करोड़ों अरबों रुपयों की स्कीमें बनती हैं दूसरी तर

आबाद घरों को जलाया जाता है। एक तरफ बैंक नेशनलाइजेशन करके करोड़ों रुपये लोगों को रोजी-रोटी के लिये दिये गये दूसरी तरफ करोड़ों अरबों रुपयों की दुकानें और संपत्ति जलाई जा रही है। दिलों को तोड़ा जा रहा है। नफरत के शोलों को बढ़ाया जा रहे हैं। अगर नफरतों के शोले इस तरह से बढ़ते रहे तो सैकड़ों सालों की हमारी यह मेहनत खाक में मिल जायेगी। गलतफहमियां हो रही है। मैं आपको बताऊं राम के नाम पर जो बातें हो रही हैं। राम तो हिन्दुस्तान के कल्चर के नुमाइंदे हैं। आपको पता है इस्लाम में कुछ बातें कहने की हैं, कुछ नहीं कहने की हैं। किसी की तारीफ की जा सकती है और किसी की नहीं की जा सकती है। डा. इकबाल जिनकी कविता आप जानते हैं, सारे जहांसे अच्छा, हिन्दोस्तां, हमारा यह बहुत बड़े मुस्लिम स्कालर थे और यह कोई ऐसी बात नहीं कह सकते है जो कि इस्लामिक बिलीफ के खिलाफ हो उनकी एक बड़ी कविता है जिसमें उन्होंने भगवान राम, लार्ड रामा को श्रद्धांजली अर्पित की हैं। उनके तीन शेर में आपको सुनाना चाहता हूं—

है राम के बजूद पे हिन्दुसतां को नाज।
अहले नजर समझते हैं इसको ईमामे हिन्द ।।

डू यू नो मीनिंग आफ इमामे हिन्द? अहले नजर का मतलब यह है कि जिनको बहुत अभ्यास है अन्तर्यामी है और जो अन्दर की चीजें आत्मा से देख सकते हैं, वह समझते हैं कि राम हिन्दुस्तान के इमाम हैं। यह गड़बड़ करने वाले इमाम लोग नहीं हैं।

रौशन तर अज सिहर है जमाने में शामहिन्द

यह राम का मिरेकल है कि हिन्दुस्तान की शाम भी सुबह से ज्यादा चमकीली है।

तलवार का धनी था, शुजाअत में फर्द था।
पाकीजगी में जोश मुहब्बत में फर्द था ।।

इकबाल जैसे शायर ने इन लफजों में राम को अकीदत पेश की है। अखबारों में यह खबर आई कि टी वी पर जितने सीरियल चल रहे हैं मुस्लिम घरानों में सबसे ज्यादा रामायण सीरियल पापुलर है और मुस्लिम औरतें बड़े शोक से रामायण सीरियल देख रही हैं। लोग उस दिन बहुत खुश थे जब राम अयोध्या वापस आ रहे थे। जब राम का कारवां अयोध्या वापस आ रहा था उस अयोध्या के दिलों में भावनायें पैदा हुई थीं, राम के लिये दिलों में भावनायें पैदा हुई थीं। तुमने उस भावना को शोलों में जला दिया। अयोध्या पहुंचने के नाम से इस मुल्क का कमजोर तबका कांपने लगता है। जिस राम के लिये इतनी अकीदत पेश की गई, तजुर्बाती ताल्लुक थे, जिस राम के नाम पर मुस्लिम घरानों के बच्चे खुशी से झूम उठते थे आज रात के सन्नाटे में जब चन्द आवाजें जय श्री राम की सुनते हैं तो बच्चे अपनी मां की गोद में जा छिपते हैं। लोग तो अपने अपने हीरोज को पापुलर बनाते हैं, लोग उनको हरदिल अजीज बनाते हैं, तुम तो दूसरी कौमों की हरदिलअजीजी को भी तोड़ रहे हो। अपने लोगों से भी तोड़ रहे हो। कहां ले जा रहे हो? हमने दुनियां में आज तक किसी भक्त को ऐसा नहीं देखा था जैसा कि आज कल देख रहे हैं। एक बहुत बड़े शायर हैं आप नाम जानते होंगे डा. जगन्नाथ आजाद, इंटरनेशनल फेम के शायर हैं। तीन चार दिन पीछे गालिब आडीटोरियम में एक मुशायरा हुआ हम ही प्रेसाइड कर रहे थे वे अभी तीन महीने अमेरिका से घूमकर आये थे, कहने लगे मैं अमेरिका में हिंदुस्तान के फसाद की खबरें पढ़ रहा था। एक नज्म लिखी है दयारे गैर, यानी विदेश में इन खबरों को सुनकर क्या तासुर हो रहा था। हमने थोड़ा नोट कर लिया।

"मगर अजीजे वतन मुझको जिस्मों जां से अजीज हरेक यकीं से अजीज और हर गुमां से अजीज, जहां जहां तेरी रफत के गीत गाता रहा"

रफत माने ऊंचाई बुलंदी, शिखर

[श्री शमीम हाशमी]

"जहां जहां तेरी रफत के गीत गाता रहा, वहीं-वहीं तेरी बस्ती की दास्तां पहुंची" यह विदेश में हिन्दुस्तानी आपस में एक दूसरे को कहते रहे।

"जहां-जहां भी गया मैंने किया तेरा जिक्रे बहार, वहीं-वहीं तेरी आवाज की खिजां पहुंची" यह नज्म पढ़ी। जो विदेश में हिंदुस्तानी हैं आप उन्हें दे तो कुछ सकते नहीं हो लेकिन शर्म से विदेश में उनके सिर को झुका रहे हो ऐसे लोगों।

फारसी में एक शेर है "काबा तो ईट का बना हुआ है वह भी टूटेगा तो बन जाएगा लेकिन इन्सानी दिल टूट गये तो सदियों में नहीं जुड़ते, नस्लों में नहीं जुड़ते" बात क्या कर रहे हो "सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा"। लेकिन यह शेर आज कोई पढ़ता है तो व्यंग्य से देखते हैं, मखौल हो गया है, आज जिस तरीके से साजिशें चल रही हैं।

अलीगढ़ युनिवर्सिटी के बारे में एक खबर "जागरण" में छाप दी कि इतने लोग अस्पतालों में मारे गये, इतने लोग फलांनी जगह मारे गये, सिर्फ उस एक खबर ने वह आग लगायी कि सन्डे मेल ने लिखा कि पूरा एडमिनिस्ट्रेशन पैरेलाइज्ज हो गया। अखबार में यह जो कुछ लोग लिखते है उनको जिम्मेदारी समझनी चाहिए उनके ऊपर राष्ट्र की जिम्मदारी है, मुल्क की जिम्मदारी है। अगर आज हम नफरतों के चिरागों को जलाते रहेंगे तो आप यकीन करो आने वाली नस्लें हमें माफ नहीं करेंगी। हम वे गुनाहगार नस्लें हैं जो आने वाली नस्ल से आंख नहीं मिला सकेंगे और बुढ़ापे में शर्मिदगी से सिर झुका लेंगें। आप गौर करो इस तरह की दरिंदगी अलीगढ़ के अंदर हुई है। कुछ दिन पीछे हमने कहा था कि हम लोग वह डरे हुए लोग है जो गाड़ियों में चलने से डरते है ... (व्यवधान) आप जानते हैं, वह अखबारों की खबर है—मुझे वक्त नहीं दिया गया है, कहना मुझे था लेकिन मुझे तो सबसे आखिर में आप ही लोगों ने प्लेस कर दिया तो ठीक ही किया—कि मां की गोद से खींचकर उसके तीन मासूम बच्चों को फेंका दिया गया। अखबार में खबर है कि सूरत जाते हुए लोगों को उठाकर पटक दिया। कहा जाता है कार सेवा बड़ी शांतिपूर्ण हो रही है। ये कार सेवक हैं जो यात्रा में जहां मुस्लिम पैसेंजर्स मिलते हैं उन्हें बेइज्जत करते हैं, लड़कियों को मारते हैं उनकी वर्दी फाड़ देते है, बच्चे मिलते हैं तो ट्रेन के बाहर फेंक देते हैं। 6 तारीख को जो कार सेवा हुई इसमें 18 दुकानें केवल अयोध्या में जला दी गयीं। सियासत की बाजीगरी तो यह है। हिन्दुस्तान के तमाम अखबारों में खबर आई है कि बिजनौर के फसाद में अजीत सिंह के दाहिने हाथ जो बिजनौर के एम०एल०ए० हैं वे ही माब को लीड कर रहे थे और फसाद करा रहे थे पुलिस फोर्स के साथ। क्या आपकी पार्टी ने उनको शोकाज नोटिस दिया। क्या आपकी पार्टी ने उनको निकाल बाहर किया। मुलायम सिंह यादव को निकालना है, सौ तरीकों से निकाल दें। मुलायम सिंह को निकालने के लिए मेरी शोहर को क्यों काट रहे हो, मेरी बहनों को क्यों यतीम कर रहे हो, मेरे बच्चों का साया क्यों छीन रहे हो। सियासत के इस गंदे खेल के लिए ये सब काम क्यों कर रहे हो। एक बात है, कांग्रेस ने भी यह कर दिखाया कि जहां जहां फसाद हुए वहां वहां के—लोग तो अफसर नहीं बदलते हैं—कांग्रेस ने चीफ मिनिस्टर्स को बदल दिया, चाहे वे गुजरात के चीफ मिनिस्टर हों या बिहार में फसाद चल रहे हों तो वहां के चीफ मिनिस्टर हों, या उत्तर प्रदेश के चीफ मिनिस्टर हों। अखलाकी तौर पर लोगों का फर्ज हो जाता है कि कांग्रेस ने नक्शे कदम पर चलते हुए, कांग्रेस के चीफ मिनिस्टर्स के नक्शे कदम पर चलते हुए इन्हें छोड़कर एक ऐसा माहौल बनायें एक ऐसी तब्दीली लायें और जो सब लोगों को मिलकर लानी चाहिए कि मुल्क के अंदर अमन, सुकुन और एकयकजहदी हो और यह अगर हम बहुत जल्द समझ जायें तो अपने गुनाहों का हम कफारा अदा करेंगे अच्छे माहौल को बनाकर। जयहिंद।

† [شری شمیم ہاشمی (بہار):
وائس چیئرمین صاحب اس ملک میں
جو سامپردائکتا کا ماحول ہے۔ اس پر
کل سے بحث ہو رہی ہے۔ مختلف قسم کے
خیالات آئے ہیں ایک دو اپواد کو چھوڑ
کر سب نے گہرے کنسرن کا اظہار کیا ہے
بہت سے فیگرس آ چکے ہیں۔ بہت سے
مرنے والوں کے نام آ چکے ہیں۔ ہم کوشش
کریں گے کہ کم سے کم وقت میں ان باتوں
کا ذکر نہ کریں جن باتوں کا ذکر دو دن سے
چل رہا ہے۔ لیکن ہم تقریر کرنے کیلئے
بنیادی طور پر کھڑے ہوئے ہیں۔ ہماری
تقریر ماتم کی شکل اختیار کر سکتی ہے جیسے
کوئی کی شکل اختیار کر سکتی ہے۔ نوحہ
کی بات کہہ سکتے ہیں۔ نالہ یا بندو کے بین
ہیں۔ ہم کو بنیادی طور پر فریاد کرنی ہے
اس بات کیلئے آج ہم دیکھ رہے ہیں۔
کہ ہمیں زیادہ صدمہ اس بات کا ہے کہ
تاریخ میں بہت سی قوموں نے بڑی ترقی
کی ہے۔ قدیم ہندوستان میں انڈس ویلی
کی تہذیب۔ بے بی لون کی تہذیب۔ روم
اور یونان کی تہذیب رہی ہے۔ جن لوگوں
نے اونچے اونچے مکان بنائے تھے۔ بڑے
بڑے بھون بنائے تھے۔ انہوں نے خواب میں
بھی نہ سوچا ہوگا کہ آنے والے کسی زمانے
میں ہم پراتتو وبھاگ کے ادھین کا وشئے
بننے والے ہیں۔ ان لوگوں نے اپنی بربادی
کے اس راستے کو مختلف کیا تھا جو اس
صدی میں آکر ہم ہندوستانیوں نے اپنی
بربادی کیلئے جب راستے کا انتخاب کیا
ہے۔ ہمیں لگتا ہے ہم بربادی کے اس راستے
پر چل کر ہم اسے تباہی کی اور لے جا رہے ہیں۔
جس پر آنے والی نسل تعجب کرے گی۔ کہ کیوں
دنیا میں ایک اعلیٰ جمہوریت تھی اس
میں پڑھے لکھے لوگوں نے بیٹھ کر ملک
کے مستقبل کے بارے میں غور کیا۔ شاید
انہیں یقین نہ آئے کہ جس راستے پر ہم چل
رہے ہیں وہ ہمیں بربادی کے کگار پر لاکر
دھکیل رہا ہے۔

دوسری بات یہ ہے کہ جو فرقہ وارانہ
ماحول ہے دیکھئے تو یہ تاریخ کی دین ہے۔
لیکن ہندوستان میں جو ہم بات کر رہے ہیں
اس کے علاج کے لئے اپنے گریبان میں جھانک
کر دیکھنا ہوگا۔ اس کی وجہ کو جاننا ہوگا۔
ابھی کچھ دن پہلے اٹل بہاری واجپئی جی سے
ہم میں سے کچھ مسلمان ایم پیز ملے تھے۔
کچھ بات کہنا چاہتے تھے۔ انہوں نے ہمیں
یہ کہا کہ ہاشمی صاحب ایک زمانہ تھا کہ
ہندو مہا سبھا اور جن سنگھ کے لوگ اکا
دکا ہوا کرتے تھے۔ کوئی لو پوچھنے والا
نہیں ہوتا تھا۔ لیکن آج فرقہ وارانہ ماحول
اس طرح بنا ہوا ہے۔ آپ ابھی مت
بات کہئے۔ ابھی خاموش رہئے۔ وہ کبیر
میں کمل جیسے آدمی ہیں۔ جذباتی آدمی ہیں
جذبات کی رو میں آکر سبھی بات بتا
دی۔ جس کا آنے والے دنوں میں پتہ
چلے گا۔ کہ اٹل جی نے صحیح لشماندھی حالات
کی کی۔ لیکن فرقہ پرست طاقتیں جو بڑی
کمزور طاقتیں تھیں۔ جو ان طاقتوں نے آج
طاقت پکڑی ہے۔ آج جو لوگ کنڈمنیٹ
ہو رہے ہیں وہ کانگریس سیکولر جماعتیں۔
بی۔ جے۔ پی۔ جن سنگھ۔ وشو ہندو پریشد
آر۔ ایس۔ ایس کو کنڈمنیٹ کر رہے ہیں
وہ بھی ذمہ دار ہیں۔ اصل میں ان لوگوں

لوگوں نے ناگ کو دودھ پلایا ہے۔ جنتا پارٹی راج کو طاقتور بنایا ہے۔ پہلی جب نئی سیاست کا انتخاب ہو رہا تھا۔ کانگریس واد کے نام پر کمیونسٹ پارٹی سوشلسٹ پارٹی اور دوسری غیر کانگریسی سیکولر پارٹیز نے مل کر جن سنگھ سے۔ جو پہلے جن سنگھ کہلاتی تھی کے ساتھ مل کر سمجھوتہ کیا اور حکومت بنائی۔ حکومت میں کمیونسٹ اور سوشلسٹ ان کے ساتھ بیٹھے۔ اس سے فرقہ پرست طاقتوں کو سوسائٹی میں مقام مل گیا۔ ان کا ایکسٹینشن ہو گیا۔ لوگوں نے سمجھا یہ راشٹریہ لوگ ہیں یہ حکومت چلا سکتے ہیں کمیونسٹ ان کے ساتھ بیٹھ کر حکومت کر رہے ہیں۔ سوشلسٹ ان کے ساتھ بیٹھ کر حکومت کر رہے ہیں۔ اس طریقے سے یہ لوگ ذمہ دار ہیں اپنی کوتاہی سے اس ملک میں فرقہ وارانہ طاقتیں دیں۔

جب ۱۹۶۷ میں بہار اور اتر پردیش میں اور دوسری راجیوں میں سنود کی سرکاریں بنیں تو تمام سوشلسٹ اور کمیونسٹ کہنے لگے کہ جن سنگھ فرقہ پرست ہے۔ لیکن ۱۹۶۹ اور ۱۹۷۱ کے راجیوں کے مدھیہ اودھی چناؤں میں ان لوگوں نے پھر جن سنگھ کے ساتھ بیٹھ کر کے سرکار بنائی لیکن اور تب کمیونسٹ اور سوشلسٹ اور دوسرے غیر کانگریسی جماعتیں جن سنگھ کو غیر سیکولر کہنے لگیں۔ وہ اس بات کو بھول گئے کہ وہ اس کی تائید کرتے تھے۔ جب بھی غیر کانگریسی سرکاریں بنیں اور فرقہ پرست طاقتیں حکومت میں آئیں۔ جن سنگھ والے کے ساتھ رہا۔ تو کہیں جمشید پور میں۔ تو کہیں رانچی میں اور علی گڑھ میں خونریز فساد ہوئے۔ حکومت ٹوٹنے کے بعد سوشلسٹ اور کمیونسٹ جن سنگھ کی تنقید کرنے لگے۔

سنہ ۱۹۷۷ کے بعد تمام اپوزیشن پارٹیاں چاہے سیکولر سوشلسٹ ہوں یا کمیونسٹ گروپس ہوں ان لوگوں نے پھر جن سنگھ کے ساتھ مل کر سرکار بنائی اور وہ بالکل سیکولر جماعت ہو گئی۔ ۱۹۷۷ کی سرکار ٹوٹی تو بڑے بڑے کتاب چھاپے گئے۔

اور دوہرے ممبرشپ کا معاملہ اٹھایا گیا اور جن سنگھ کو فرقہ پرست جماعت کہا گیا۔ آج پولیس فورس کی نندا کی جاتی ہے۔ لیکن آپ بھول گئے کہ ۱۹۷۰ سے ۱۰ جنوری تک علیگڑھ میں پی۔ اے۔ سی۔ کی مرمت سلطنت آئی تو وہ ملیانہ سے ہو کر بجنور تک ہو گئی۔ ۱۹۶۷ میں سنود کی سرکاریں بنیں تو سرکار میں کیڈر بیسڈ لوگ آ گئے۔ ایسی پارٹی سے لوگ آئے جن کے ورکر تھے جو ٹریننگ کرتے تھے۔ ان لوگوں کی پولیس فورس میں ۳۰ سے ۴۰ پرسنٹ تک بھرتی ہوئی۔ ۱۹۷۷ میں کیا ہوا۔ ۳۰ سے ۴۰ پرسنٹ ٹرینڈ لوگوں کی بھرتی ہو گئی۔ آج آپ کو شکایت ہے کہ میڈیا ہمارے خلاف بولتا ہے۔ الیکٹرونک میڈیا پر آپ کو پتہ ہے کہ ۱۹۷۷ سے ۸۰ تک کس کا قبضہ تھا۔ انہوں نے اپنے تمام لوگوں کو میڈیا میں بھر دیا۔ پولیس فورس میں بھرا۔ پہلے ۱۹۶۷ میں اور پھر ۱۹۷۷ میں سے ۱۹۸۰ تک سب محکموں پر ان کو بھر آیا۔ آج آپ ماتم کرتے ہیں۔

بات اتنی ہی نہیں ہے۔ سمجھوتا ان کو ایڈجسٹ کیا گیا۔ جب بھی ملک میں چناؤ کا وقت آتا ہے۔ تو سیکولر کہنے والی پارٹیاں بھی غیر کانگریسی جماعتوں کے ساتھ ہو جاتی ہیں۔ اور ان کے ساتھ ہو جاتے ہیں جن کی ہمارے کمیونسٹ اور سوشلسٹ دوست نندا کرتے ہیں۔ کیا جنتا دل کی حمایت کرنے والے مسلم نیتاؤں کو معلوم نہیں تھا۔ جو مسلم نیتا آج واویلا کر رہے ہیں۔ کیا ان مسلم نیتاؤں کو معلوم نہیں تھا۔ کیا کمیونسٹوں کو معلوم نہیں تھا۔ کیا سوشلسٹوں کو معلوم نہیں تھا کہ سوا دو سو سیٹوں پر لڑنے والا جنتا دل بی۔ جے۔ پی۔ کے سہارے سرکار نہیں بنا سکتا ہے۔ کیا جنتا دل کے مسلم نیتاؤں کو اور کمیونسٹوں کو یہ پتہ نہیں تھا کہ بی۔ جے۔ پی۔ نے "جے شری رام" کے نام پر ووٹ مانگے ہیں۔ کیا ان کو معلوم نہیں تھا کہ اڈوانی جی جیتنے کے بعد مندر بنائیں گے۔ یا جامع مسجد میں نماز پڑھنے جائیں گے۔ آپ کا فرمان آیا کہ جہاں جنتا دل ہے وہاں جنتا دل کو ووٹ دو اور جہاں جنتا دل نہیں ہے وہاں جو بھی غیر کانگریسی دل ہے اس کو ووٹ دو اور آج آدھے سے زیادہ بی۔ جے۔ پی۔ کے لوگ وہاں سے جیتے ہیں۔ جہاں ایک لاکھ سے زیادہ مسلم آبادی ہے۔ وہاں سے آدھے سے زیادہ سیٹیں آئی ہیں۔ ان ووٹوں کا ۶۰ پرسنٹ بھی کانگریس کو ملا ہوتا تو آج بھی کانگریس کی سرکار ہوتی۔ آپ کو سوچنا چاہیئے کہ [illegible]

[illegible] کے آج یہاں سے [illegible] ہیں۔ آپ نے گناہ کیا ہے۔ غلطی کی ہے۔ کیا کمیونسٹوں کو معلوم نہیں تھا۔ بی۔ جے۔ پی۔ ایک مسلم دشمن پارٹی ہے۔ وہ سنیاسی پارٹی ہے۔ وہ [illegible] کے بعد مندر نہیں بنائیں گے تو کیا بنائیں گے؟ آپ نے چیلنج اور [illegible] نہیں کیا۔ آج کمیونسٹ لڑتے ہیں۔ لیکن جب کانگریس کی بحالی ہو رہی تھی تو کیا کمیونسٹوں کو معلوم نہیں تھا کہ کانگریس کون ہے۔ [illegible] کیا جنتا دل کو ووٹ کرنے والے مسلم نیتاؤں کو سوشلسٹوں کو اور کمیونسٹوں کو معلوم نہیں تھا کہ ارون شوری جو [illegible] کی شان کے خلاف گستاخی کرتا ہے۔ مسلم دشمنی کیلئے مشہور ہے [illegible] اور پدم [illegible] کیا اس بات کی کبھی ان لوگوں نے کبھی تصدیق کی ہے۔ کیا کشمیر میں جا کر جگموہن نے [illegible] کا کام نہیں کیا۔ آتنک وادیوں کے ساتھ جیسا برتاؤ کرنا چاہیے تھا لیکن جنتا کا۔ وہاں کی آبادی کا قتل عام ہو [illegible] کی کوشش ہو۔ [illegible] کے سامنے بیٹی کا۔ باپ کے سامنے بہن کا۔ بھائی کے سامنے بہن کا۔ شوہر کے سامنے بیوی کا [illegible] اور [illegible] ہوا [illegible] ہندوستان کے [illegible] اخباروں نے لکھا ہے۔ [illegible] لوگوں نے [illegible] لکھا ہے۔ مسلمانوں نے [illegible] لکھا ہے۔

*Expunged as order by the Chair

یہ بات ہاؤس میں ڈسکس ہو چکی ہے
اور یہ سب لوگ جانتے ہیں۔ تو اس
وقت آپ نے تنقید نہیں کی بلکہ آپ
نے انعام دیا۔ اس سے کشمیر کے
تمام لوگوں کو ہندوستان کے خلاف کر دیا۔
جس نے وہاں پر یہ کام کیا .... **
لیکن اس وقت بھی کسی ہوم منسٹر یا
کسی پرائم منسٹر نے اس بارے میں نہیں
کہا۔ فسادات سے ہمدردی رکھنے والے
کسی بھی مسلمان نے نہیں کہا۔ کسی نے کچھ
نہیں کہا۔ اگر ایسا ہے تو آج یہاں پر
آپ لوگ باتیں کیوں کرتے ہو۔ اور انہوں
مسلمانوں کو دھوکا دیتے ہو۔ اس طرح
سے اس دیش کا معاملہ چلنے والا نہیں
ہے۔ ہم جانتے ہیں کہ [illegible] دور میں
فسادات کیوں ہوتے ہیں۔ بہت سے اہم
[illegible] ہیں۔ [illegible] پاس [illegible] میں انہوں
[illegible] گجرات سے لے کر
راجستھان تک [illegible] خون کی ہولی کھیلی
گئی۔ خون کے دریا بہائے گئے۔ اس کو روکا
جا سکتا تھا۔ جب رتھ یاترا کو اسی وقت
سے [illegible] کیوں نہیں
روکا۔ آج وہ بھاجپا اور مسلمانوں کے
علمبردار بنتے ہیں۔ ان کو روکنا چاہئے
تھا اور کہنا چاہئے تھا کہ رتھ نہیں
چلے گا۔ اس رتھ کے پہیے کے نیچے
مسلمانوں کی ہڈیاں پستی رہیں۔ اس
رتھ کے پہیے کے نیچے مسلمانوں کی
عزت لٹتی رہی۔ اس رتھ کے پہیے
کے نیچے معصوم بچوں کی جانیں جاتی
رہیں۔ جن چیزوں کو بنانے میں پوری
زندگی لگ جاتی ہے۔ ان کو ہزاروں کی
سنکھیا میں جلا ڈالا گیا۔ مکانوں کو

جلا دیا گیا۔ دکانوں کو جلا دیا گیا۔ کیا
ہندوستان [illegible] سکھ اور عیسائی [illegible]
کے لوگ [illegible] سی۔ پی۔
آئی اور سی۔ پی۔ ایم کے لوگ بڑے
[illegible] کے لوگ [illegible] ہیں۔
کیا انہوں نے اس وقت اعلان کیا کہ
[illegible] ہم سپورٹ
واپس لیتے ہیں۔ لیکن انہوں نے ایسا
نہیں کیا۔ آپ اس [illegible] تک
ہندوستان کے مسلمانوں کو بیوقوف
بنا سکتے ہیں۔ [illegible] باتیں نہ
کرو۔ یہ بند ہونا چاہئے۔ جب رتھ
دہلی کے اندر تھا تو ملائم سنگھ یادو
اور لالو پرساد یادو نے [illegible]
[illegible] کی [illegible]
کر کے [illegible] رتھ کو روکا لیکن
آپ نے رتھ نہیں روکا اور آپ نے رتھ
کو چلنے دیا۔ [illegible] پارلیمنٹ
میں کہا کہ [illegible]
[illegible] آپ [illegible] ہم
[illegible] شامل ہونے جا رہے
ہیں۔ [illegible] انہوں نے
کہا اور [illegible] نے [illegible]
[illegible] انہوں نے ایسا کوئی
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
کہ آخری [illegible]
کی [illegible]
[illegible]
الہ آباد [illegible]

*Expunged as ordered by the Chair

کو وہ مانیں گے اور فیصلہ کا انتظار کریں گے۔ اور جو فیصلہ ہوگا وہ اسکی پابندی کریں گے۔ یہ ایگریمنٹ کانگریس نے کیا تھا۔ لیکن آپ نے اسکو نہیں مانا۔ جب گورنمنٹ کا فیصلہ موجود تھا۔ حکومت بدلنے سے گورنمنٹ کے فیصلے نہیں بدل جاتے ہیں۔ جب فیصلہ موجود تھا تو کس بنیاد پر آپ نے چار مہینے کی صلح دی۔ آپ نے پچھلے ایگریمنٹ کو ردی کی ٹوکری میں ڈال دیا۔ یہ اسلئے کہ حقیقت سامنے آجائے گی۔ تو یہ غلط فہمی مسلمانوں کے دماغ سے دور ہو جائیگی۔ جو کہ آپ نے کانگریس کے خلاف پروپیگنڈہ کرکے پیدا کی تھی۔ کانگریس کا انکے ساتھ صلح نامہ ہو چکا تھا کہ مسجد رہے گی اور عدالت کا جو بھی فیصلہ ہوگا۔ اسے وشو ہندو پریشد مانے گی۔ وشو ہندو پریشد کے سنگھل اسکو مان گئے تھے۔ دوسرے ان کے جو لوگ ہیں وہ اسکو مان گئے تھے۔ یہ شری نارائن دت تیواری جب وہاں چیف منسٹر تھے تب ہوا تھا۔ لیکن اسکو نہیں مانا اور چار مہینے کی صلح کر لی۔ اسکا مطلب یہ ہے کہ ارون شوری صحیح کہتے ہیں کہ چناؤ سے پہلے انکا سمجھوتا ہو گیا تھا اور اسی سمجھوتے میں انہوں نے انکو ۴ مہینے کا ٹائم دیا اور کانگریس کے ساتھ جو سمجھوتا ہوا تھا اسکو ردی کی ٹوکری میں ڈال دیا۔ لیکن جب پانی سر سے اونچا ہو گیا تو آخر میں انکو یہ سب کرنا پڑا۔ میں یہاں پر آپ سے یہ جاننا چاہتا ہوں کہ ہندوستان آزادی کے بعد امریکہ سے پی۔ ایل ۴۸۰ کے اناج منگاتا تھا۔ لیکن بعد میں اپنے کھیتی کا پروڈکشن بڑھا کر اپنے پاؤں پر کھڑا ہو گیا۔ پھر وہ ٹکنالوجی ٹکنالوجی میں سیلف سفیشینٹ ہو گیا۔ واٹر ٹیکنالوجی میں وہ سیلف سفیشنٹ ہو گیا۔

دونوں لڑائیاں اپنے ہتھیاروں سے لڑیں۔ سمندر کی گہرائیوں میں جاکر اپنی چند بیسے گڑگڑاہٹ کی۔ آکاش کی بلندیوں کے اندر راجیو گاندھی نے اگنی پرکشیا کرکے اس دنیا سے ملٹی نیشنلز پاور کو ختم کر دیا اور ملٹی نیشنلز طاقتوں میں ہاہاکار پڑ گیا۔ کہ یدی ہندوستان اس طرح سے ۸۰ کروڑ جنتا کے ساتھ ترقی کرتا گیا تو وہ ورلڈ کا سپر پاور بن جائے گا۔ اسلئے ملٹی نیشنل طاقتوں نے ایک شڈینتر رچا۔ سازش رچی ہندوستان کو ڈسٹیبلائز کرنے کیلئے۔ میں یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ ۱۹۸۲ کے چناؤ میں

میں یہ مندر مسجد کا جھگڑا کیوں پیدا ہوا ۱۹۸۴ کے چناؤ میں کیوں نہیں آیا لیکن اس دفعہ ایک ماسٹر پلان تیار کیا گیا۔ ایسا ماسٹر پلان تیار کیا گیا مداری کی طرح سے ایک طرف جھولے میں سانپ ڈالا اور ایک طرف جھولے میں نیولا ڈالا۔ جتنے مسلم فرقہ پرست تھے انکو ایک طرف جھولے میں بٹھا دیا گیا جنہوں نے جھوٹ بول کر کے کانگریس کا مسلم ووٹ توڑا اور دوسری طرف بی۔جے۔پی کی طرف سے کانگریس کے ہندو ووٹ توڑنے کی کوشش کی گئی۔ یہ دونوں ووٹ مداری کے جھولے کی طرح سے [illegible] تقریباً [illegible] میں چلے گئے۔ [illegible] دونوں کی وجہ سے انہوں نے راج کیا۔ سوچئے آج تک ہندوستان میں ایسا نہیں ہوا تھا۔ یہ ملٹی نیشنل پاور کا ہی ہوا ایک نقشہ تھا جس میں اس دفعہ انکو کامیابی ہوئی اور آج ہندوستان ایک سال کے اندر اندر پیچھے دھکیل دیا کہ کوئی بھی سیکولر ڈیموکریٹک پارٹی مضبوطی کے ساتھ نہیں آ سکی اگر آ سکی تب بھی جو نقصان ہوا اسکی ریپیئر کرنے کیلئے ہندوستان کو پچاس سال لگ جائیں گے۔ (وقت کی گھنٹی) جناب والا [illegible] شروع کیا ہے۔

یہ سارے لوگ ملٹی نیشنل پاور کے سیدھے ایجنٹ ہیں۔ اس کے بہت سارے ثبوت ہیں۔ یہ لوگ مل کر کے ہندوستان کے امن کے ماحول کو خراب کرتے ہیں۔ ایک طرف ٹاڈا سنگھ کے لئے کروڑوں اربوں روپے کی اسکیمیں بنتی ہیں۔ دوسری طرف آباد گھروں کو جلایا جاتا ہے۔ ایک طرف بینک نیشنلائزیشن کر کے کروڑوں روپے لوگوں کو روزی روٹی کیلئے دیئے گئے۔ دوسری طرف کروڑوں اربوں روپے کی سمپتی جلائی جا رہی ہے۔ دلوں کو توڑا جا رہا ہے۔ نفرت کے شعلوں کو بڑھایا جا رہا ہے۔ اگر نفرت کے شعلے اسی طرح سے بڑھتے رہے تو سینکڑوں سالوں کی ہماری یہ کمٹمنٹ خاک میں مل جائیگی۔ غلطیاں ہو رہی ہیں۔ میں آپ کو بتاؤں رام کے نام پر باتیں ہو رہی ہیں۔ رام تو ہندوستان کے کلچر کے نمائندے ہیں۔ آپ کو پتہ ہے اسلام میں کچھ باتیں کہنے کی ہیں اور کچھ نہیں کہنے کی ہیں۔ کسی کی تعریف کی جا سکتی ہے اور کسی کی نہیں کی جا سکتی ہے۔ ڈاکٹر اقبال جن کو دنیا آپ جانتے ہیں سارے جہاں سے اچھا ہندوستاں ہمارا۔ یہ بہت بڑے مسلم اسکالر تھے اور یہ کوئی ایسی بات نہیں کہہ سکتے ہیں۔ جو کہ اسلامک

سکے خلاف ہو۔ انکی ایک بڑی کویتا ہے جس میں انہوں نے بھگوان رام۔ لارڈ راما کو شردھانجلی ارپت کی ہے ان کے تین شعر میں آپ کو سناتا ہوں

"ہے رام کے وجود پہ ہندوستاں کو ناز
اہل نظر سمجھتے ہیں اسکو امام ہند"

ٹو یو نو مینگ آف امام ہند۔ اہل نظر کا مطلب ہے کہ جو بہت اچھے صاحب ہیں۔ انتریامی ہیں۔ جو اندر کی چیزیں آنکھ سے دیکھ سکتے ہیں۔ وہ سمجھتے ہیں کہ رام ہندوستان کے امام ہیں۔ یہ لڑائی جھگڑا کرنے والے امام لوگ نہیں ہیں۔

روشن تر از سحر ہے
زمانے میں شام ہند

یہ رام کا کیریکٹر ہے کہ ہندوستان کی شام بھی چمکیلی صبح بھی چمکیلی ہے

"تلوار کا دھنی تھا۔ شجاعت میں فرد تھا
پاکیزگی میں جوش محبت میں فرد تھا"

اقبال جیسے شاعر نے ان لفظوں میں رام کو عقیدت پیش کی ہے۔ اخباروں میں خبر آئی کہ ٹی۔ وی۔ پر جتنے سیریل چل رہے ہیں مسلم گھرانوں میں سب سے زیادہ رامائن سیریل پاپولر ہے اور مسلم عورتیں بڑے شوق سے رامائن سیریل دیکھ رہی ہیں۔ لوگ اس دن بہت خوش تھے جب رام ایودھیا واپس آ رہے تھے۔ جب رام کا کارواں ایودھیا واپس آ رہا تھا اس وقت ایودھیا واسیوں کے دلوں میں بھاونائیں پیدا ہوئی تھیں۔ ہم نے اس بھاونا کو شعلوں میں جلا دیا۔ ایودھیا ہو، جینے کے نام سے اس ملک کا کمزور طبقہ کانپنے لگتا ہے۔ جس رام کیلئے اتنی عقیدت پیش کی گئی۔ جذباتی تعلق تھے۔ جس رام کے نام پر مسلم گھرانوں میں بچے خوشی سے جھوم اٹھتے تھے آج رات کے سناٹے میں جب چند آوازیں جے شری رام کی سنتے ہیں تو بچے اپنی ماں کی گود میں چھپ جاتے ہیں۔ لوگ تو اپنے ہیروز کو پاپولر بناتے ہیں۔ لوگ ان کو ہر دل عزیز بناتے ہیں۔ تم تو دوسری قوموں کی ہر دل عزیزی کو بھی توڑ رہے ہو۔ اپنے لوگوں سے بھی توڑ رہے ہو۔ کہاں لے جا رہے ہو۔ ہم نے دنیا میں آج تک کسی شخصیت کو ایسا نہیں دیکھا تھا جیسا کہ آجکل دیکھ رہے ہیں۔

ایک بہت بڑے شاعر ہیں۔ آپ نام جانتے ہونگے۔ ڈاکٹر جگن ناتھ آزاد۔ انٹرنیشنل فیم کے شاعر ہیں۔ تین چار دن پہلے غالب آڈیٹوریم میں ایک مشاعرہ ہوا ہم ہی پریسائڈ کر رہے تھے۔ وہ ابھی تین مہینے امریکہ میں گھوم

کر آئے ہیں۔ پہلے کلکتہ میں اخبار میں
ہندوستان کے فساد کی خبریں پڑھ رہا تھا
ایک نظم لکھی ہے دیار غیر یعنی ودیش
میں ان خبروں کو سنکر کیا تاثر ہوا
تھا۔ ہم نے تھوڑا نوٹ کر لیا

"مگر عزیز وطن تجھکو جسم و جاں
سے عزیز۔ ہر ایک یقین سے عزیز اور
ہر گمان سے عزیز۔
جہاں جہاں تیری رفعتوں کے
گیت گاتا رہا"

رفعت یعنی اونچائی۔ بلندی۔ شکوہ۔

جہاں جہاں تیری رفعت کے
گیت گاتا رہا وہیں وہیں تیری بستی
کی داستاں بھی ہوگی۔ یہ ودیش میں
ہندوستانی آپس میں ایک دوسرے کو
کہتے رہے۔

"جہاں جہاں بھی گیا میں نے کیا
تیرا ذکر بہار۔
وہیں وہیں تیری آواز کی ہنسی
بھی ہوگی۔" یہ نظم پڑھی۔ جو ودیش
میں ہندوستانی ہیں آپ انہیں دے تو
کچھ سکتے نہیں ہو۔ لیکن شرم سے ودیش
میں انکے سر جھکا رہے ہو۔ اے لوگوں
فارسی میں ایک شعر ہے
"کعبہ تو اینٹ کا ساہوا ہے وہ

بھی لوٹے گا تو بن جائے گا لیکن انسانی
دل ٹوٹ گیا تو صدیوں میں نہیں جڑتے
نسلوں میں نہیں جڑتے۔ بات کیا کر رہے
ہو۔" سارے جہاں سے اچھا ہندوستاں
ہمارا" لیکن یہ شعر آج کوئی پڑھتا ہے
تو ونیک سے دیکھتے ہیں۔ مشکل ہو گیا
ہے۔ آج جس طریقے سے سازشیں چل
رہی ہیں۔

علیگڑھ یونیورسٹی کے بارے میں
ایک خبر "ٹائمز" نے چھاپ دی کہ اتنے
لوگ اسپتالوں میں مارے گئے۔ اتنے لوگ
فلاں جگہ مارے گئے۔ صرف اس ایک خبر
نے وہ آگ لگائی کہ سنڈے میل نے لکھا کہ
پورا ایڈمنسٹریشن پیرالائزڈ ہو گیا۔
اخباروں میں یہ جو کچھ لوگ بھی لکھتے ہیں۔
انکو ذمہ داری بھی چاہیئے۔ انکے اوپر
راشٹر کی ذمہ داری ہے۔ ملک کی ذمہ
داری ہے۔ اگر آج ہم نفرتوں کے چراغ
کو جلاتے رہیں گے تو آپ یقین کرو آنے
والی نسلیں ہمیں معاف نہیں کر سکتی۔
ہم وہ گناہ گار نسلیں ہیں۔ جو آنے والی
نسلوں سے آنکھ نہیں ملا سکیں گے اور
بڑھاپے میں شرمندگی سے سر جھکالیں
گے۔ آپ غور کرو اس طرح کی درندگی
علیگڑھ سے اندر ہوئی ہے۔ کچھ دن پہلے

ہم نے کہا تھا کہ ہم لوگ وہ ڈرے ہوئے لوگ ہیں۔ جو گاڑیوں میں چلنے سے ڈرتے ہیں۔.... (مداخلت).... آپ جانتے ہیں کہ یہ اخباروں کی خبر ہے۔ مجھے وقت نہیں دیا گیا ہے کہنا مجھے تھا تو سب سے آخر میں آپ ہی لوگوں نے پلیس کر دیا تو ٹھیک ہی کیا۔ کہ ماں کی گود سے کھینچ کر اسکے تین معصوم بچوں کو پھینک دیا گیا۔ اخبار میں خبر ہے کہ سورت جلتے ہوئے لوگوں کو اٹھا کر پھینک دیا۔ کہا جاتا ہے کہ کار سیوا کی شانتی پورن ہو رہی ہے۔ یہ کار سیوک ہیں جو یاترا میں جہاں مسلم پیسنجرس ملتے ہیں انہیں بے عزت کرتے ہیں لڑکیوں کو مارتے ہیں انکی وردی پھاڑ دیتے ہیں۔ بچے ملتے ہیں تو ٹرین کے باہر پھینک دیتے ہیں۔ ۶ تاریخ کو جو کار سیوا شروع ہوئی اسمیں ۱۸ دکانیں کیول اجودھیا میں جلا دی گئیں۔ سیاست کی بازیگری تو یہ ہے۔ ہندوستان کے تمام اخباروں میں خبر آئی ہے۔ کہ بجنور کے فساد میں اجیت سنگھ کے داہنے ہاتھ جو بجنور میں ایم۔ ایل۔ اے۔ ہیں وہ ہی ماب کو لیڈ کر رہے تھے۔ اور فساد کرا رہے تھے۔ پولیس فورس کے ساتھ کیا آپکی پارٹی نے انکو شو کاز نوٹس دیا۔ کیا آپکی پارٹی نے انکو نکال باہر کیا۔ ملائم سنگھ یادو کو نکالنا ہے سو طریقوں سے نکال دو۔ ملائم سنگھ یادو کو نکالنے کے لئے میری شہہ رگ کیوں کاٹ رہے ہو میری بہنوں کو یتیم کیوں کر رہے ہو۔ میرے بچوں کا سایہ کیوں چھین رہے ہو۔ سیاست کے اس گندے کھیل کیلئے یہ سب کام کیوں کر رہے ہو۔ ایک بات ہے۔ کانگریس نے بھی یہ کر دکھایا کہ جہاں جہاں فساد ہوئے وہاں وہاں کے لوگ کو افسر بنا رہے ہیں۔ کانگریس نے چیف منسٹرس تک کو بدل دیا۔ چاہے وہ گجرات کے چیف منسٹر ہوں یا بہار کے۔ فساد ہو رہے ہوں تو وہاں کے چیف منسٹر ہوں یا اتر پردیش کے چیف منسٹر ہوں۔ اخلاقی طور پر لوگوں کا فرض ہو جاتا ہے کہ کانگریس کے نقش قدم پر چلتے ہوئے اپنی چھوڑ کر ایسا ماحول بنائیں ایک ایسی تبدیلی لائیں اور جو سب لوگوں کو مل کر لانی چاہیئے۔ کہ ملک کے اندر امن۔ سکون اور ایک یکجہتی ہو اور یہ اگر ہم بہت جلد سمجھ جائیں۔ تو اپنے گناہوں کا ہم کفارہ ادا کریں گے۔ اچھے ماحول کو بنا کر۔ شکریہ۔]

THE VICE-CHAIRMAN (DR NAG EN SAIKIA): Before I call the next speaker, I would like to know the sense of the House whether we shall si' beyond 6 o'clock because there are ten Members. Ten Members will have to speak. Therefore, I think, we have to sit. beyond 6 o'clock. Therefore, I want to know the sense of the House.

SOME HON. MEMBERS: Yes. we can sit beyond 6 o'clock.

DR. G. VIIAYA MOHAN REDDY (Andhra-Pradesh): We shall sit til! the debate is over.

THE VICE-CHAIRMAN (Dr. NAGEN SAIKIA).: Then, the House will sit beyond 6 o'clock.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: सर, यहां बार बार इस बात का जिक्र किया जा रहा है कि जहां फिसाद हुआ, कांग्रेस ने अपने चीफ मिनिस्टर को बदल दिया ।

क्या कांग्रेस पार्टी का यह आफिशल स्टेंड है ? क्या कोई कांग्रेस पार्टी के जम्मेदार यह बतायेंगे कि यह कांग्रेस पार्टी का आफिशल स्टेंड है कि जहां-जहां फिसाद होगा, वह अपने चीफ मिनिस्टर को बदल देंगे ?

कांग्रेस के कई जिम्मेदार लोगों ने यह बात कही है। इस हाउस को यह पता लगना चाहिए कि क्या यह कांग्रेस पार्टी का स्टेंड है कि जहां-जहां फिसादात होंगे और उनका चीफ मिनिस्टर होगा, उसे फौरन बदल दिया जाएगा ?

श्री सैयद सिब्ते रज़ी : सर, यह प्रापर दिया जाएगा ।

[شری محمد افضل عرف میم افضل: یہاں بار بار اس بات کا ذکر کیا جا رہا ہے کہ جہاں فساد ہوا کانگریس نے اپنے چیف منسٹر کو بدل دیا۔

کیا کانگریس پارٹی کا آفیشل اسٹینڈ ہے کیا کوئی کانگریس پارٹی کے ذمہ دار بتائیں گے کہ یہ کانگریس پارٹی کا آفیشل اسٹینڈ ہے کہ جہاں جہاں فساد ہوگا وہ اپنے چیف منسٹر بدل دیں گے کانگریس پارٹی کے کئی ذمہ دار لوگوں نے یہ بات کہی ہے اس ہاؤس کو یہ پتہ لگنا چاہیئے کہ کیا یہ کانگریس پارٹی کا اسٹینڈ ہے کہ جہاں جہاں فسادات ہوں گے اور انکا چیف منسٹر ہوگا اسے فوراً بدل دیا جائے گا۔]

डा रत्नाकर पाण्डेय: महोदय...**

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL:

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): These things will not go on record. *(Interruptions)* This will not go on record.

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: **

DR. RATNAKAR PANDEY: **

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: **

DR. JINENDRA KUMAR IAIN: **

DR. RATNAKAR PANDEY: **

SHRI MC/TAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: **

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); This is not going on record. Now the next speaker, Dr. Jain.

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: **

**Not recorded.

f[ ]Translation in Arabi script,

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): No, Mr. Afzal. You have already had **your time. That** is **enough. You** please take **your seat. Let Dr. Jain speak.**

(Interruptions).

एक माननीय सदस्य : माननीय सदस्य ने जो इतनी लम्बी तकरीर दी है, इससे यह बात समझ में नहीं आई कि करना क्या चाहिए ?

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): I am not allowing you to raise any point. Now Dr. Jain. *(Interruptions)* Dr. Jain, please be brief as much as you can, and conclude within ten minutes.

DR. JTNENDRA KUMAR JAIN: Mr. Vice-Chairman, Sir, at the outset, I wish to condemn the communal violence which is a matter of shame for all of us. At **the** same t' me. I wish to put on record my Whole-hearted support and my Party's all out support to the Government of the day in curbing the menace of crnmunalism in the country. 1 also wish to agree with the views expressed in the House by certain hon. Members that let no political party or person take political advantage of the present day unfortunate situation in the country. My Party does not believe in the politics of violence and... *(Interruptions)*

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondi-cherryl: Communal party speaking about secularism!

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Don't interrupt him.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Sir, there has been a lot of rhetoric, a lot of repetitions, a lot of abuses and a lot of baseless allegations. It will not help anybody. You split on the moon. It does not help... *(Interruptions)*

SHRI V. NARAYANASAMY: People in the country know who are communal. Da not preach all these things to us. *(Interruptions).*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Please go on.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Sir, many speakers have spoken. I have been listening to **the debate** since yesterday,

And I have been accused in **person *oi*** several counts. My Party has been **accused** on several counts. Let me first **deal with** the personal accusations which were **made;** against me. It was said by an hon **Mem-'** ber that I am a communalist. I **owe an** explanation. I am one of the younger or the junior or new Members of this **House** and **I** have the honour to present my cre dentials to the hon. Members **of this** House about my contributions to **anti-*** communalism in this country. I am **not** referring to those days when **I** was a **higb** school student. I had risked my life td save a burning mosque; but I refer tr> the 1984 riots in Delhi. And please refer to the resolutions. It is a matter of printed record. These resolutions were passed by the Singh Sabhas of several purudwaras in the city. The role played bj' me along with the BJP workers... *(Interruptions).*

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : यह बात बारबार मत सुनाइये. एक सिख विधवा के घर पर कब्जा करके आपने रखा हुआ है जब वह छुड़ाने के लिए जाती है तो उसको आप धमकाते हो । इस लिए बार-बार आप यह बात मत कहिए । एक सिख विडो के घर पर कब्जा कर के रखा हुआ है । इस लिए ऐसी बात मत कहिए ।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Mr. Ahluwalia, you have already had your say. Please don't interrupt

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: It is a mitter of reccsrd in the printed press that my Jain Medical Centre provided **free** service to the riot victims and, Sir, we and our party had risked the entire electoral State for the sake of defending Sikhs in the city of Delhi....

SHRI MD. SALIM (West bengal): What about the latest allegation made by Mr. Ahluwalia?

डा० रत्नाकर पाण्डेय: आपने किसी विधवा के मकान पर क्या कब्जा किया है ? माननीय उपसभाध्यक्ष जी, एक बहत ही आब्जेक्शनेबल

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Please don't interrupt. You have already had your say.

डा र नाफर पाण्डेय: मेरे कुलीग ने यह आरोप लगा था है, अहलुवालिया जी ने मैं... (व्यवधान)...

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Whe-^ther it is the Sikh or the Muslim, I have always fought for the civil liberties and human rights of the citizens in the country.

A reference was made la the morning about Maliana. There was no invitation ; o go there, and everybody knows that people who died in Maliana happened to be Muslims. I was one of those who went to Maliana, who made a documentation on the atrocities committed on the Muslims, not because they were Muslims but because they were Indians, We do not discrimir. Ue between the people of this country, whether one is a Hindu or a Muslim or a Sikh. We see them a Indian. We are opposed to preferential treatment to anybody; but we respect all. If I love my wilfe, you cannot say that I hate your wife, and if I love my mother, you cannot say I do not love your mother... *(Interruptions).*

SHRI V. NARAYANASAMY: That is right; that shows your character. *(Interruptions).*

श्री सिकन्दर बख्त (मध्य प्रदेश) : तुम्हें क्या खतरा हैं ?

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: The charge of being a communalist is a baseless charge, and my public conduct and personal conduct throughout does not substantiate these charges.

Sir, time is short. Some Members said that I am doing a business in cassettes, and by implication, as if I am trying to make money at the cost of national interest. I am sorry to say, the hon. Member made this allegation at a particular time.. *(Interruptions).*

SHRI V. NARAYANASAMY: Whether certification was given to these cissettes or not, 1 want to know. Why was it displayed before the public without a certification... *(Interruptions).* In Madhya Pradesh, you are displaying it without certification; your Government is assisting you in that... *(Interruptions).*

SHRI ASHIS SEN (West Bengal): I would like to know from the hon. Mem- --., ber whether there is an element of truth that he is associated with the business of this particular type.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I said in the morning that there is one ces-sette—I named the title of that cassettes—

which was produced by the studio of which I am the President. I invite the entire House. I invite the entire House to v/ilness that cassette.

SHRI V. NARAYANASAMY: Without certification, you want us to see it? *(Interrupions).*

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I want to inform hon. Members in this House... *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Reference to the cassette was made earlier. Now, he is speaking. Let him have his say.

SHRI S. S. AHLUWALIA: He is doing business at the cost of the nation.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Let me inform hon. Members.. *(Interruptions)* I am not selling this cassette. *(Interruptions)* Today, millions of copies of this cassette are being sold in the country. I am making a request to the hon. Home Minister. Please find out. It is the video pirates who are selling copies of this cassette, not me.

SHRI S. S. AHLUWALIA

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Part"" heard I am not here to say please protect my commercial interests.

(Interruptions)

*Expunged as ordered by the Chair.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Dr. Jain, will you yield for a minute? *(Interruptions')*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN -j| SAIKIA): He is not yielding. *(Interruptions)*

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West » Bengal): Mr. Vice-Chairman, Sir, it is an extremely important issue connected with law and order in the country. He admits that he has produced the cassette show-► ing the violence and also the inflammatory speech by a lady.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Please do not put words into my mouth.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: The • home Minister is here. I wish an enquiry is made. *(Interruptions)* I wish an enquiry is made and people are apprehended because this is a source of infecting communal Older in the country. It is for the Home Minister to take note of the admission mace by the hon. Member.

SHRI; S. S. AHLUWALIA: He has confessed.

SHRI V.. NARAYANASAMY: He has produced the banned cassette. He must be prosecuted first by the Home Ministry. *(Interruptions).*

— SHRI BHUVNESH CHATURVEDI (Rajasthan): He has said that he has a commercial interest in it. *(Interruptions)*

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Please listen to me. I said la the morning. Mr. Gurudas Das Gupta is misleading the House. That cassette which has ' been banned is not produced by me. My casselstte has not been banned. *(Interruptions)*

SHRI SUKOMAL SEN: You have said. ♦• Millions of copies are being made by the pirates. *(Interruptions)* He knows about it. *(Interruptions)*

SHRI MD. SALIM: He produced the cassette which, he says, is being pirated fey others. *(Interruptions).*

SHRI V. NARAYANASAMY: We want the Home Minister's reaction on this.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Mr. Vice-Chairman, Sir, we want the Home Minister to react on this particular point.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : सारे कैसेट्स इनके स्टूडियो में बने हैं और इन्होंने खुद एक्सेप्ट किया है । करोड़ों रुपए की . . . (व्यवधान) . . . इसकी इंक्वायरी होनी चाहिए . . . (व्यवधान) . . . दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं . . .

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Mr. Ahluwalia, please be patient.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : जैन स्टूडियो में जितनी भी मशीनरी आयी है, उसकी इंक्वायरी करने की जरूरत क्योंकि उस मशीनरी पर यहां सर्जिकल आपरेशन्स होते हैं, ओपन हार्ट सर्जरी होती है, उसके लिए लायी गयी . . .

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Sir, am I speaking, or, he is speaking?

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलूवालिया : ताकि उसकी वीडियो फिल्म बनायी जा सके और उसके ऊपर कस्टम और एक्साइज की छूट ली गयी है . . . (व्यवधान) . . . इसकी भी इंक्वायरी होनी चाहिए ।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Mr. Ahluwalia, you have had your say. Please take your seat. Please do not interrupt him.

SHRI SUKOMAL SEN: Sir, we want the Home Minister to react on this. *(Interruptions)*

6. 00 P. M.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Mr. Gandhi is going to speak.

SHRI RAJ MOHAN GANDHI: Mr. Vice-Chairman, I would just like to request the Government through you to take note of two facts. Firstly, Dr. Jain's statement urging everybody to please protect his commercial interest and secondly

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: You have not allowed me to complete my sentence.

SHRI RAJ MOHAN GANDHI: Secondly, the inference from this that in the widest dissemination of that cassette he has a commercial interest.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Sir, if you want to put his words in my mouth....

SHRI BHUVNESH CHATURVEDI: The Government should react.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: An allegation was made that I am making commercial interest.

SHRI V. NARAYANASAMY: This is what you have said. You said that. *(Interruptions)*

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I want to tell that there is no scops of any commercial interest for two reasons. Firstly, it is the large-scale video piracy that is going on. I am not selling those cassettes. I am not getting any commercial benefit out of it. Secondly.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : साहब, वह केसेट देखिए । केसेट में पहले इनका इन्टरव्यू शुरू होता है । इस केसेट में यह पूरा भाषण देते हैं, उस भाषण के साथ केसेट शुरू होता है और यह जय श्री राम कहकर और पूरा भाषण देकर फिर यह फिल्म शुरू करवाते हैं । उस केसेट को देखिए, उसमें इनका पूरा बिजनेस इंटरेस्ट है । महोदय, मैं दो चीजों की डिमांड करता हूं । एक तो इनका केसेट बनवाने का जो बिजनेस इंटरेस्ट है उसकी इंक्वायरी की जरूरत है और दूसरा जितनी मशीनें इम्पोर्ट की गई थीं, वे सारी मेडिकल रिसर्च के लिये वीडियो फिल्म बनाने के लिये—ओपन हार्ट सर्जरी, किडनी ट्रांसप्लान्टेशन वगैरह की फिल्म बनाने के लिए ये सारे इक्विपमेंट इम्पोर्ट किए गए थे और उसको कन्वर्ट करके कम्यूनल फ्लेअर अप करने के लिए एक्साइज और कस्टम का रिबेट लिया गया और आज वही यूनिट अस्पताल में काम नहीं कर रहा है . . . (व्यवधान) . . .

#Expunged as ordered by the Chair.

SHRI MOHAMMAD AFZAL *alias* MEEM AFZAL; Enquiry should be made.

SHRI S. S. AHLUWALIA: It is a misuse. *(Interruptions).*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): You have already made the point. Let him complete his speech.

DR. RATNAKAR PANDEY; The Finance Minister is here. He should declare that enquiry will be made.

डा० रत्नाकर पाण्डेय : जो कुछ कहा है माननीय सदस्य ने, वित्त मंत्री जी उस पर जांच बैठाने को तैयार है या नहीं ? यह सर्वोच्च सदन लोगों के व्यवसाय का अड्डा बनेगा ?

. . . (व्यवधान) . . .

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : जैन स्टूडियो की मशीनें किस परपज के लिए इम्पोर्ट की गई थी और कितना रिबेट दिया गया था और अभी क्या कर रही हैं, पूरी इन्क्वायरी कराने की जरूरत है (व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); Yes, please be brief and con-~ clude.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I am not being allowed to speak. The baseless allegations made against me... *(Interruptions)*. Untruthful, baseless allegations made by the political opponents have already created an ill-will and hatred against me. You all know that my studio today stands to^ tally gutted. I invite you to my studio. You are invited just now to the studio. 1 am not complaining because like others H am one of those many unfortunate, Innocent victims of the communal violence. I am in front of you being victimised by your political thoughts. Kindly have patience, listen to the opinion of others. This is the essence of true democracy. You may not like me.

डा रत्नाकर पाण्डेय : आप शिक्षा दे रहे हैं ...(व्यवधान)...

SHRI V. NARAYANASAMY: He is producing those video cassettes without *■ certification. He should be prosecuted.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): You have had enough.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; Sir, Jet tne...

PROF. SOURENDRA BHATTA-CHARJEIfi: I would advise you, most earnestly, to take your seat.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; Sir, let me elevate the standard of this debate from personal acrimony to ideological *r* differences that we may be having in thh House and let us talk of political ideology. An allegation has been made and many honourable Members have said that BJP wants to demolish a mosque and build a temple in its place. Sir, as we all exist in this country, I invite all the Members in this House to visit the present site and see for themselves whether it is a temple or a mosque.

SHRI S. S. AHLUWAUA: Who are you?... *(Interruptions)...*

DR. G. VIJAYA MOHAN REDDY; There are five thousand temples in Ayo-dhya. What are you talking?... *(Interrupt tions...*

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : सारे हाउस को बुलाने की बजाए आप अदालत में आ जाइए और वहां प्रूव कर दीजिए । ...(व्यवधान).. इस मुल्क में अदालतें हैं, आप अदालत में आकर प्रूव कर दीजिए · ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); Mr. Afzal, you cannot directly put questions to the Member. You should not do that.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; Sir, let me remind honourable Members of this House that there is continuous puja going on in this place since 1951, uninterrupted. That is also because of a court order. In 1951 the Faizabad District Court gave a judgment.

far.....

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); You will have your time.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Sir, may I have a glass of water?... *(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); You may come to **the** front bench.

कुमारी आलिया : डिप्टी चेयरमैन साहब मेरा ताल्लुक फैजाबाद डिस्ट्रिक्ट से है, जहां पर राम जैसे महापुरूष पैदा हुए और राम-रहीम दोनों मौजूद हैं । वहां के हिन्दू-मुस्लिम भाई यह चाहते हैं कि हम लोग बैठकर फैसला कर लें और अयोध्या में राम जैसे महापुरुष का मंदिर जरूर बनेगा, बनकर रहेगा, यह बनना जरूरी है । ...(व्यवधान). . मुसलमान यह नहीं कहते कि मंदिर न बने, यह गलत प्रचार किया जा रहा है ।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); You will have your time. Why are you taking his time? ________ *(Interrup tions)...*

SHRI MENTAY PADMANABHAM: Sir, I am on a point of order. I want to know whether the honourable gentleman is allowed to drink here in the House?... *(Interruptions)...*

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; Water!... *(Interruptions)...*

SHRI MENTAY PADMANABHAM; 1 pressume it is water only and nothing else!

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); Let him clear his throat.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Sir, I had not realized that my senior colleagues would be so much prejudiced that even the water that I drink in front of you, they take it as otherwise

[Dr. "Jinendra Kumar Jain]

Sir, I want to reassure this country through this House and through the honourable Members of this House that BJP does not believe in demolishing any place of worship even if a wrong was done in the past.

डा० रत्नाकर पाण्डेय : लास्ट टाइम, इनकी पार्टी के जो माथुर साहब हैं, उन्होंने कहा कि वहां पर मस्जिद है ही नहीं और यह कह रहे हैं कि हम एबॉलिश करना नहीं चाहते हैं। दोनों में कौन सही हैं, यह बताइए ?
. . (व्यवधान) . . .

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; Sir, what I am trying to say is this, that it is our confirmed belief which we have stated on the basis of facte and all that. Today in Ayodhya, the structure that stands is not a mosque at all; it is a temple.

SHRI S. S. AHLUWALIA: Who are you to say that?... *{Interruptions)*$..

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): You may not agree to it but it is his opinion.... *(Interruptions)...*

SHRI V. NARAYANASAMY; He is speaking without any basis.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); It is his opinion; let him express his opinion. Please go on, Dr. Jain.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : उपाध्यक्ष महोदय, यह गलत ओपीनियन हैं, यह गलत बात हैं और गलत प्रचार कर रहे हैं।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : इस को कार्यवाही से निकाला जाये।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Mr. Afzal, we have had enough. Please sit down; do not interrupt... *(Interruptions)...* You may not agree to it. It is his opinion.

डा० रत्नाकर पाण्डेय : कलकत्ता को दो कोठारी बंधु जो छत पर चढ़े, वे मारे गये।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : वह जो मंदिर के गुम्बद पर चढ़ा था. . . (व्यवधान)

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; I say this because it is our belief that it is a temple, because we consider that we have to... *(Interruptions)*

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: *

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); Mr. Afzal's interruption *will* not go on record. Why are you interrupting repeatedly? Dr. Jain please* go on.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; It has been said that we have tried to com-munalise the politics by linking the name of Ram With *rajneeti.*

SHRI V. NARAYANASAMY: Why did you go with your party symbol in the *rath? (Interruptions)*

श्री राम नरेश यादव : मंदिर वहीं बनाएंगे इसका क्या मतलब है ?

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं आप लोगों से निवेदन करूंगा कि जो बातें पहले बोली जा चुकी हैं आप लगभग वही बातें बोल रहे हैं।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : गलत बातें बोल रहे हैं. . . (व्यवधान) . .

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप इनकी बात तो सुन लीजिए बाद में जवाब दे दीजिएगा . . . (व्यवधान) . . .

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Will you yield, Dr. Jain ? m

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; I want to speak, Sir. You restore order ia the House so that I can speak.

*Not recorded.

SHRI S. S. AHLUWALIA: What order? You are giving a wrong impression to the House. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); Dr. Jain, are you yielding to Mr. Mathur?

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I am not yielding.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); Mr. Mathur, Dr. Jain is not yielding. Please take your seat. *(Interruptions)*

Dr. Jain, please go on. Don't try to invite trouble in the House. Please be brief.

DR. JINENDRA KUMAR JAEST: The linkage of Ram with *rajneeti* was started in this country by *poojniye* Mahatma Gandhi. There was no question of com. munalising the politics by Mahatma Oiandhi He said *"Ram rarva. "*

श्री सुरेन्द्रजीत सिह अहलुवालिया : राम का आदर कहां हो रहा है।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); Mr. Ahluwalia, please.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; Sir, when I say *"Ram rajya, "* I assure the Members of this House, I assure my countrymen that we use *"Ram rajya"* with the same reference, with the same reverence as Mahatma Gandhi did.

SHRI V. NARAYANASAMY: Your party is dividing the country in the name of religion.

THE VICE CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Please conclude. You are inviting *trouble.* Please make your point* and conclude. *(Interruptions)*

Mr. Ahluwalia, why are you interrupting So much? !!t is very bad.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; There is a lot of interruption, and I appreciate the reason is the amount of mass support that my party has received in the country by talking of positive secularism which is there. Tha real debate in this country, Sir, ...

SHRI V. NARAYANASAMY: You know how many riots were there after your *rathyatra* started.

SHRI S. S. AHLUWALIA; Communal riots were started. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): I will give you only one mi* nute more.

SHRI V. NARAYANASAMY; How many communal clashes took place .... *(Interruptions)*

"

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Please have patience. Mr Pandey, please have your patience.

श्री सुरेद्रजीत सिंह अहलुवालिया : अरे कितन राम का नाम लोंगे ?

श्री अनन्त राय देवशंकर दवे (गुजरात) : कटीन्युसली उनको बोलने नहीं दिया गया है। जब इन लोगों की बात हमने शांति से सुनी है तो इनको भी सुनना चाहिए। जो बात वह कह रहे हैं, उसे सूनें तो सही ....(व्यवधान).. वह उनका अपना ओपीनियन है। हाऊस में उनको भी बोलने का अधिकार है।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); You are losing your own time, I will not allow more time. Please maka your point in brief.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I am being interrupted. Every sentence of mine is being interrupted. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); I am giving you two minutes more. You shall have to make within this limited time.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: My humble submision is this to the hon. Members that we will have to rise abova certain petty, political, partisan considerations. We will have to talk in terms ot this nation. We will have to talk of nationalism *versus* communalism and

[Dr. Jinendra Kumar Jain]

partisan gains. It is the belief of our party that the debate today is not on Hindus versus Muslims. The debate today is nationalism versus pseudo-secularism which has put the country at the present juncture. The ideological perceptions ol what is secularism need to be debated. This is the right forum. Why are we not discussing this matter in a dispassionate inanner? You want to throttle my voice. You shall not succeed.

SHRI S. S. AHLUWALIA; What about Hindu Rashtra?

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: He is talking of Hindu Rashtra. There is a manifesto of my party. You can all refer to it. I have made categorical statements in this House, but you are not willing to listen to the stand of my party. The countrymen will believe what I say is the stand of my party is and not your distorted representation. So much mixing up is going on everywhere. What is the need for it? Here is a person belonging to a political party. He is making the standpoint of hte party clear in this House, but you don't want to listen to that. Is it that the truth seems to be bitter to you? It will not help. There is a question of evidence and there is a question of irrefutable evidence. The evidences are there in front of everybody. My friend was saying that BJP had thrown out thirteen members of a family out of a running train. I deny it. It is all untruth. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); Mr. Afzal, you cannot speak directly to a Member.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: 1 deny all these allegations which have been made on the floor of the House that any BJP member had any hand in the communal violence in this country. Let there be an inquiry. There have been many inquiries and these judicial inquiries have not been allowed to be published. Why?

DR. ABRAR AHMED (Raja'sthan): **

**Not recorded.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): I have not allowed you. It will not go on record. Please conclude. Otherwise I will call the next Member.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: So much has been said against me and against my party. *(Interruptions).* You should have decency to listen to me. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Let us complete the discussion. If every member speaks at one time, how can we con-■elude the discussion?

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: We are the Members of this august House -and it is our responsibility to maintain the standard of the House.

DR. ABRAR AHMED: But you don't misguide the House.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Future generations will see c. ir conduct. The press will see our conduct.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): You conclude now.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Sir, they are not allowing me to speak. You can help me by restoring order in the House. If every Member in the House has the liberty to speak, I too must have that liberty.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA: I have given you time.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: You gave me time, but these people did not allow me to use my time. In the morning when personal allegations were being made against me, the Deputy Chairman said that I would Be given an opportunity to make at least personal clarifications today in this House. *(Interruptions)* I have not done it.

SHRI SYED SIBTEY RAZI: Sir, you should look after the interest of other Members also.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Let him complete.

1 DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Suggestions have been made that we should have a special riot force in tha country. If you want to have a special riot force, I would say, for haven's sake, don't communalise even the law> maintaining agencies. I want to refer to the statistics. In UP today it is a composite police force. The Muslims' representation in that is 10 per cent Is it a matter of record or not? Is it a matter of fact or not?

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* r MEEM AFZAL: I do not agree with you.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); Mr. Afzal, I have asked you many times not to interrupt

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: "My point is, we may be Hindus, we may *Toe* Muslims, we may be Christians but the fact remains that we are all Indians. The debate, the ideological debate on a healthy footing should take place whether we should Be seen as separate nations or one nation. This is what is the core issue today; It is my party's clear conviction and we have courage to say that we deal with every citizen as equal and not discriminate against any one. We are opposed to the discrimination against minority and we are also opposed to the discrimination against majority. We are opposed to the atrocities if , they are committed against Muslims in Maliana and we are also opposed to the atrocities committed against Hindus in Kashmir. What kind of secularism, Sir you are preaching in this country that you only want to say if Mus- ""*"lims are affected, secularism is in danger. If Hindus are thrown out of their houses, nothing happens. It is this kind of naive politics that you are doing In this country. We are doing politics of principle. We are doing politics of truth and we are doing against the ciolent opposition by the Members of those parties who do not even have the tolerance t° let me speak.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); 1 cannot give you more time.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Now they are allowing me to speak but you are not allowing me to speak.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): We are running short of time. 1 cannot give you more time.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I will abide by your decision. But I request you to give some more time.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); Not now.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Okay, Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): shri Shabbir Ahmad Salaria. You have to complete your speech within four minutes.

SHRI SHABBIR AHMAD SALARIA; I shall be very brief and to the point.

The Communal riots have been taking place in our country even prior to partition. But that their intensity has increased after partition is a fact known to everybody. What havoc has been caused in the country throughout the length and breadth of India by the communal riots is known to everyone and has been explained by the hon. Members here. The question is where does the solution lie? The basic point is that when we gained independence, prior to that we had a certain policy and a certain manifesto on which we were acting. The manifesto was that religions does not make a nation. The manifesto was that all the people of India constitute a nation. The manifesto was that we shall work for the upliftment of the poorer sections *oi* the community that we will work for

[Shri Shabbir Ahmad Salaria]

the removal of unemployment in the country; that we will work for making India into a great country. That was what we started with. At that time nobody said that when India becomes independent, we will talk in terms of demolition of mosques or in terms of a Raj of a particular kind. But now a particular political party has started a Rath Yatra and is saying that in the old times a certain mosque was built which according to them was built at a place where there was a temple. That is a question of fact, a question of disputed fact which is before a court of law- We in India have a Constitution. We in India have laws. Nobody is above the law. Therefore, the matter should be decided by the forums which are capable of deciding this matter, that is, the court of law. When the matter is before a court of law, you cannot present the people with a *fait accompli* and say, "Whatever I have said is the truth" and thereby lead the nation to an abyss, lead the nation *to* a turmoil from where it cannot come out and create amongst the people alienation from the mainstream. If you continue with this policy, then, in that event what will happen to those States in North-East of India where there is majority of people belonging to a particular religion? What will happen to Kashmir where there is a majority •f people belonging to a particular religion? When people decided *to* have the present polity, the present Constitution, they were made to feel and they were given the assurance of the Constitution that the religion of every group would be protected, that the religious institutions would be protected. But if this sort of a thing is done with a view to get more of votes and to gat power and you move with the Rath on which there is your party symbol, the message is clear that this is being used for political purposes, for the purpose of gaining power and not for any other purpose. 'Ram' has been put up with a visw to use him as a sheild for political gain and this should not be allowed.

Secondly, I say that in order to get out of this situation, it has to be seen what we should do. The present forces in India, the security forces as well as the police, have b^en acting in such a manner that the minorities are^. feeling that they are not protected. (

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Please conclude.,.

SHRI SHABBIR AHMAD SALARIA: I am not taking much time. I will take only two minutes more.

The position is such that it will ultimately become a struggle a conflict, between the forces and the people. Therefore, I support the suggestion made that any force which is created for the purpose of suppressing rigfs. should be a secular force and should not belong to one community of the country.

Thirdly, I would say that Rath Yatras and communal parties should not be allowed to have anything to do with politics. We should, for that purpose, take care that such parties do not spoil the peaceful atmosphere in the country. In the present context, I have the following submissions to make. We should have peace committees. The condition in the country has been so much spoiled that the confidence of various communities has to be restored and their friendship «nrl*-brotherly relationship have also to be restored. Peace committees should exist right from the village level up.. to the district level *so* that the people in India can live a peaceful life. The people are largely secular, largely democratic. But they are instigated and some sections of the people are made to go on a rampage, go for violence though it is not the nature of the people. From the speeches in this august House it is quite clear that most of us are still dedicated to J: these Constitution, are still dedicated to secularism: and if that purpose is to be achieved we should do all in our power to bring about confidence amongst the people. It has been said here...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Please conclude now.

SHRI SHABBIR AHMAD SALA-RIA: i will just conclude. It has been said here—and that is a bad thing and a wrong thing; such a message is being spread by a political party for political purposes—that in Kashmir certain temples have been demolished. If they can name one temple which has been demolished, I will say they are right. But they are not able to do that. And they say that in Kashmir Hindus are being killed. If they can point out the number of Hindus killed as compared with that of Muslims, then I will know and say that they are right. have become so harsh...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): I will not be able to allow you more time. I am sorry.

SHRI SHABBIR AHMAD SALA-RIA: I am not taking much time.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Ilease conclude. Otherwise, I will call the next speaker.

SHRI SHABBIR AHMAD SAIA-RIA: I am finishing, Sir. Thank you. Last of all, I will say:

चिश्ती ने जिस जमीन में पैगामें हक सुनाया,
नानक ने जिस जमीन में बहदत्त का गीत गाया,
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।

कुमारी चन्द्रिका प्रेमजी केनिया (महाराष्ट्र): महोदय, मैं कम्युनल सिचुएशन इन दी कंट्री जैसे ग्रहम विषय पर बोलते हुए सबसे पहले अपने जहन में जो बात है उसको व्यक्त करना चाहूंगी, अपने दिल की भावनाओं का इजहार करना चाहूंगी और वह भावना है खेद की, वह भावना है दुःख की, वह भावना है अफसोस की। यह दुःख, खेद और अफसोस इस बात का है कि पिछले कुछ सालों से कम्युनल राइट्स की, जातीय दंगों की, भेदभाव की और फसादों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है।

यह बहुत ही गंभीर विषय है और यह हम सब के लिए चिंता का विषय है। बहुत ही जानमाल का नुकसान हुआ है। इसके फैक्ट्स और फिगर्स इस हाउस में बताये हुए हैं, मैं उस बात को दोहराना नहीं चाहूंगी। लेकिन मैं एक बात जरूर बताना चाहूंगी कि जिस भी नागरिक का खून बहा है वह भारतीय है। चाहे वह किसी हिन्दु का खून बहा हो या किसी मुसलमान का खून बहा हो वह भारतीय है। जितने भी लोग मरे हैं, जितने भी व्यक्ति मरे हैं, जितने लोगों की हत्या हुई है वे सब भारतीय हैं और हमारे लिये यह बहुत ही अफसोस की बात है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि :

किसको कसकर पत्थर मारें कौन पराया है,
शीश महल में हर एक चेहरा अपना लगता है।

मैं शिव सेना की भूमिका को यहां स्पष्ट करना चाहूंगी। इस बारे में बहुत सी गलतफहमियां हैं। महोदय, यह कहना गलत होगा कि हम मुसलामनों से नफरत करते हैं। हमें अब्दुल हमीद पसंद है, जिसने पाकिस्तान के साथ लड़ाई करते-करते अपनी जान कुर्बान कर दी और शहीद हो गया। इन्होंने अपनी जान इसलिए दी ताकि भारत की आजादी बरकरार रहे। हमें मुहम्मद अजरूद्दीन से लगाव है जो भारत की क्रिकेट टीम के कप्तान हैं। जिनका काम देश के नाम को रोशन करना है। ऐसे मुसलमानों को हम पसंद करते हैं लेकिन जो मुसलमान कश्मीर में पाकिस्तान का झंडा फहराते हैं उनको हम बिल्कुल पसंद नहीं करते हैं। हम इस बात को नागवार मानते हैं। जो इस धरती पर पैदा हुए हैं, जो इस धरती पर पले और बड़े हुए हैं, यहां जिनकी परवरिश हुई है, इस मिट्टी में जो पैदा हुए हैं इसी मिट्टी में उनको जाना है, अगर इस मिट्टी से उनको प्यार या लगाव नहीं है तो ऐसे मुसलमानों को हम पसंद नहीं करते हैं। जब पाकिस्तान और इंडिया का टैस्ट मैच होता है; मैं बंबई की रहने वाली हूं तो मुझे पता है कि जब पाकिस्तान की

[कुमारी चन्द्रिका प्रेमजी केनिया]

टीम जीत जाती है तो वहां भिंडी बाजार में पटाखे फूटते हैं। हम इस बात को पसंद नहीं करते हैं। महोदय, यह साम्प्रदायिक बात नहीं है, यह राष्ट्रीयता की बात है। इन दोनों के बीच में भेद करना चाहूंगी। हम फिरकापरस्त मुसलमानों को पसंद नहीं करते हैं तो हम यह कहना चाहते हैं कि हम राष्ट्रीयता की भावना जगाना चाहते हैं। हमारे गृह मंत्री यहां पर विराजमान हैं। मैं चाहती थी कि प्रधान मंत्री जी भी यहां पर रहते। हम एक बहुत ही अहम विषय "कम्युनल सिचुयेशन इन दि कंट्री" पर हम चर्चा कर रहे हैं, तो मैं चाहती थी कि वे हम सब की राय जानें और हम यहां इस विषय पर जो विचार रखें, जो प्वाइंट दें उनके ऊपर वे गौर करें। गृह मंत्री जी बहुत अच्छी तरह से अपना खाता निभा रहे हैं, बड़ी कुशलता से निभा रहे हैं, बड़े निष्ठावान तरीके से अपना खाता निभा रहे हैं। मैं यहां यह बताना चाहूंगी कि जो भी दंगे फसाद हुए, वे चाहे यू पी में हुए हों, चाहे बिहार में हुए हों, चाहे गुजरात में हुए हों, चाहे पंजाब में हुए हों और चाहे कश्मीर में हुए हों, ये सारे दंगे फसाद पाकिस्तान की प्रेरणा से हो रहे हैं। पूरे फसाद की जड़ पाकिस्तान है। उनका इरादा देश को कमजोर करना है। इसके लिये वे साम्प्रदायिक माहौल को बिगाड़ना चाहते हैं जिससे यहां दंगे-फसाद बढ़ें और इस देश की एकता और अखंडता पर आंच आये। चाहे पंजाब का मसला हो, चाहे कश्मीर का मसला हो, इसमें पाकिस्तान का हाथ साफ दिखाई देता है। जब मैं पंजाब के मसले की बात करती हूं तो कुछ ही दिन पहले सिमरनजीत सिंह मान साहब ने हमारे प्रधान मंत्री श्री चंद्रशेखर जी से मुलाकात की, उनसे बातचीत की और उन्होंने एक मेमोरेंडम प्रधान मंत्री को दिया। उन्होंने उस मेमोरेंडम के सेल्फ-डिटरमिनेशन की भाषा का इस्तेमाल किया। यह एक बहुत ही खतरनाक बात उन्होंने की है। इससे हमें चौकन्ना रहना चाहिए क्योंकि जहां तक भारत की सार्वभौमिकता का सवाल है उसके साथ हम कोई समझौता नहीं कर सकते हैं और न प्रधान मंत्री ही कर सकते हैं। कश्मीर की बात मैं आपसे बताना चाहूंगी . . .

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): No, no. I cannot give you more time. You shall have to complete within one minute.

KUMARI CHANDRIKA PREMJI KENIA; Just give me two minutes.

जगमोहन जी जो हमारे सदन के सदस्य हैं, उन्होंने जब अपनी पहली तकरीर दी थी तो उसमें उन्होंने जो कहा था। वे शब्द आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब मैं गवर्नर बनकर गया तो "Kashmir was captured by Pakistan and I retrieved Kashmir from Pakistan."

उसके बाद वे खामोश होकर बैठ गये, उनको बोलने का मौका नहीं मिला। यह बात मैं कभी भी नहीं भूल सकती। यह बात मेरे कानों में अभी भी गूंजती है कि पाकिस्तान ने कश्मीर का कब्जा ले लिया था। मैं चाहूंगी कि आर्टिकल 370 जो संविधान में मौजूद है उसको हटाया जाय ताकि कश्मीर देश की मेनस्ट्रीम में आ जाय। साथ ही वहां पर जो कमांडो कैंप लगे हुए हैं, चाहे वे कश्मीर में हों चाहे पाकिस्तान में हों, जहां पर मासूम नौजवानों को ट्रेनिंग दी जाती है, टैरोरिज्म की ट्रेनिंग दी जाती है, उन ट्रेनिंग कैंपों को आप खत्म करें और पाकिस्तान को मुंह तोड़ जवाब दें। हमारा एक एक शिव सैनिक इस काम पर आपका सहयोगी होगा।

अंत में मैं कहना चाहूंगी कि :

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,

देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।

महोदय, मैंने कैंप्स को विजिट किया है। यहां पंजाब के बहुत सारे लोग अपनी मातृभूमि को छोड़कर बसे हुए हैं। मैं

गृह मंत्री जी से यह कहना चाहूंगी कि उनकी हालत बहुत खराब है, कैंपों में खाने-पीने को कोई व्यवस्था नहीं है। मैं यह चाहूंगी कि गृह मंत्री जी थोड़ा समय निकालें और वहां स्वयं जा कर के देखें कि किस हालत में लोग रह रहे हैं। इसी तरह से जम्मू में बहुत सारे कैंप्स लगे हुए हैं। मैं यह गुजारिश करना चाहूंगी कि दो लाख के करीब परिवार हैं जो अपने मादरे वतन को छोड़कर अपने घर जमीन जायदाद को छोड़कर अपनी मां बहनों की इज्जत बचाने के लिए आए हुए हैं, जम्मू में बसे हुए हैं। उनकी भी ठीक तरह से निगरानी की जाए। आखिर में मैं बाबा साहब अम्बेदकर जी ने जो बात कही वह मैं दोहरा कर अपना छोटा सा वक्तव्य समाप्त करना चाहूंगी। संविधान में हमने सार्वभौम, समाजवादी, सेकुलर लोकशाही राष्ट्र दिया है। संविधान में यह बात कही गई है। इस बुनियादी बात का हमें रक्षण करना है। इसके लिए आपस में तालमेल, भाईचारा, समानता कायम करना हम सब की जिम्मेदारी रहती हैं। डा० बाबा साहब अम्बेदकर ने कहा था: and I quote:

"Without fraternity, equality and liberty will be no deeper than chorus of paeans. For the maintenance of India's independence and continuance of democratic structure establishment of equality and fraternity is a *sine qua non* in all spheres of life. "

बंकिम चन्द्र चटर्जी ने भारत को बताया था सुजलाम्, सुफलाम्, मातरम्, मैं आज यही भावना फिर से जागृत करना चाहूंगी कि हम ऐसा भारत बनाएं कि हम बड़े गर्व से कह सकें कि हम सुजलाम्, सुफलाम्, इस देश में रह रहे हैं। यही वचन दे कर हम इस कम्युनल सिचुयेशन पर चर्चा करें। धन्यवाद।

श्री सैयद सिब्ते रज़ी : जनाब वाइस चेयरमैन साहब, आज जिन परिस्थितियों में हम देश के अन्दर साम्प्रदायिक तनाव और जो दंगे हो रहे हैं और जो हमारी अखण्डता और एकता को बहुत बड़ा खतरा है उस पर चर्चा कर रहे हैं, वह बहुत खतरनाक सूरतेहाल है। आज हमारा सब कुछ दांव पर लगा हुआ है—हमारी सालमियत, हमारी एकता और अखण्डता, हमारी जम्हूरियत, हमारा लोकतन्त्र, हमारी तहज़ीब और हमारा तमद्दुन, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान। मैं इस पूरे मसले को सिर्फ इस नजरिये से नहीं देखता कि सिर्फ अक्कलियतें खतरे में हैं बल्कि हिन्दुस्तान के अन्दर जो फसादात की बवा फूटी है उससे हमारे सारे शहर, हमारे गांव और हमारे कस्बे तक मुत्तासिर हो रहे हैं। जब एक घर में आग लगती है तो उसकी आंच निश्चित रूप से दूसरे घरों तक पहुंचती है। माल और जान का बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है लेकिन इसी के साथ-साथ दिलों के बीच में जो कड़वाहट पैदा हुई है, दिलों के बीच में जो दरार आई है वह हमारे देश के भविष्य के लिए बहुत खतरनाक है। सन् 1947 के आजादी के बाद जिस तरह से हमने पूरे देश को धर्म निरपेक्षता के सहारे जोड़ने की कोशिश की और हिन्दुस्तान के तमाम लोगों को बराबर के अधिकार दे कर उनकी सारी शक्ति को हमने खेतों में खलिहानों में लगाया, कारखानों में लगाया और उद्योगों में लगाया और इस तरह से देश को बहुमुखी तरक्की मिली आज वह सब कुछ खतरे में है। हमारी ज़बान, हमारे मूल्य और जो सब से बड़ी बात है हमारी जो इन्सानी कदरें हैं, जो हमारे मानवीय मूल्य हैं उनको भी आज खतरा खड़ा हो गया है। हमारे सदन में हमारे भारतीय जनता पार्टी के माननीय सदस्य ने जो तकरार की अगर उनकी तकरीर का सारांश, सार देखने का आप प्रयास करें तो उससे पता चलता है कि साम्प्रदायिकता से भी और इन दंगों से भी बढ़कर एक बहुत बड़ा खतरा जो हमारे देश के सामने खड़ा हुआ है वह फासिज्म का है, झूठ बोलने का और इस तरह से बोलने का है कि एक दिन यह सच लगने लगेगा। जर्मनी में क्या हुआ ? हिटलर ने बहुत बड़ी रणनीति अपनाई और एक ऐसा तरीका अपनाया जिसमें उसने कहा कि अगर एक

[श्री सैयद सिब्ते रजी]

झूठ को सौ बार बोला जाए तो लोग उसको सच समझने लगेंगे । मस्जिद के मामले में कभी कहा गया यहां मस्जिद थी, मन्दिर बनना चाहिए कभी कहा गया मस्जिद थी ही नहीं, कभी कहा गया 49 से पहले यहां मस्जिद थी । तो एक बात को कई तरह से उनकी पार्टी के लीडर कहते रहते हैं । लोगों के मन में भ्रम फैलाने की कोशिश करते रहते हैं । इस में कोई शक नहीं कि यह जो कुछ भी हालात हुए हैं और आज हमारी मिली-जुली संस्कृति और तहजीब खतरे में पड़ी हुई है उसको बहुत ज्यादा ताकत 1989 के चुनावों से मिली । जबकि भारतीय जनता पार्टी के साथ जनता दल ने न सिर्फ सीटों का एड-जस्टमेंट किया पर उनके नेता विश्वनाथ प्रताप सिंह ने चुनाव के जमाने में न जाने कितने मंचों को जनता को दिखाने के लिये छोड़ दिया कि यहां पर भारतीय जनता पार्टी का झंडा लगा हुआ है, वहां पर दूसरी और पार्टियों के कुछ कैंडिडेट्स हैं, इसलिए हम उस मंच से नहीं बोलेंगे । लेकिन इलेक्शन के तुरंत बाद सरकार बनाने के लिये उन्होंने भारतीय जनता पार्टी से सहारा ले लिया । आज इस मौके पर मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहूंगा वाइस चेयरमैन साहब क्योंकि आपने कई मरतबा इशारा किया है लेकिन इतना जरूर कहना चाहूंगा कि आज राजनीति के दायरे में हमें मस्जिदों, मंदिरों, गिरजाओं और गुरुद्वारों के बीच से निकलना होगा । मौजूदा इतिहास देखिये, हमारे टेम्पुल्स, मस्जिदों और गुरुद्वारों का कभी-कभी बड़ा गलत इस्तेमाल हुआ है । अगर हम हिन्दू साम्प्रदायिकता को इल्जाम लगाते हैं तो उसी के साथ-साथ हमें उन नाम निहाद मुस्लिम लीडरों को अवाम के सामने लाना होगा जो वक्तन फवक्तन मुस्लिम जमात के लोगों के अक्लियत के लोगों के जज्बात का फायदा उठाने की कोशिश करते हैं जैसा कि जनता दल की हिमायत के लिये इमाम बुखारी साहब ने पिछले 1989 के इलेक्शन में फतवा जारी कर दिया जबकि कोई ऐसा मजहबी मामला खड़ा नहीं हो रहा था । कभी-कभी इस तरह की नाम निहाद मुस्लिम लीडर-शिप जज्बात में आकर कुछ भी नारा दे देती है जिससे अक्लियत और अक्सरियत के फिरकों के बीच में गलतफहमी पैदा हो जाती है, उनमें दूरी आने लगती है । जैसे कुछ समय पहले हमारे एक मुस्लिम लीडर ने कहा कि हम गणतंत्र दिवस का बहिष्कार करेंगे, हम कौमे जम्हूरिया में हिस्सा नहीं लेंगे । इससे एक गलत मैसेज लोगों को गया । अभी-अभी इमाम बुखारी साहब ने (समय की घंटी) एक स्टेटमेंट दिया कि यहां पर जो दंगे हो रहे हैं उनकी रोकथाम के लिये जो संयुक्त राष्ट्र संघ की फौजें हैं वे यहां पर आनी चाहियें । इससे कुछ लोगों को यह कहने का मौका मिलता है कि जो हमारे मुल्क का कानून है, जो हमारे मुल्क की व्यवस्था है, जो हमारे मुल्क का आइन है उसमें हमारे मुल्क की अक्लियतों को विश्वास नहीं है । जब हम एक तरफ यह कहते हैं कि कुछ फासिस्ट ताकतें ऐसी हैं जो किसी तरह की कोई बात मानने के लिये तैयार नहीं हैं, कानून की बात वे मानना नहीं चाहते, इतिहास की बात वे नहीं मानना चाहते और किसी ऐसे मामले को, किसी ऐसे फोरम में नहीं देना चाहते जहां रीजन और जेहन का इस्तेमाल करके अमन और आश्ती के जरिये कोई रास्ता निकाला जा सके तो ऐसी सूरत में हमें हर उस पहलू को देखना होगा जिससे ये चीजें बढ़ती हैं । आज जो घटना चक्र हमारे मुल्क के सामने है इसमें बहुत सारे लोग खुलकर सामने आये हैं । इसमें कहीं-कहीं प्रशासन के लोग भी दिखे हैं, पुलिस के लोग भी दिखे हैं और खास तौर से हमारे अखबारों का जो रवैया रहा है, खासतौर से हिन्दी अखबारों का जो कुछ उत्तर प्रदेश से निकलते हैं उसने आग में तेल डालने की कोशिश की है जिससे बहुत ज्यादा रिएक्शन हुआ है । आज अखबारों को खास तौर पर अपनी आचार संहिता के सिलसिले में विचार करना चाहिये और ऐसे हालात में जबकि मुल्क को आग लग रही हो, जब मुल्क की सालमियत को. . . (समय की घंटी) मैं दो मिनट और लूंगा । मान्यवर, आपने लोगों को बहुत समय

दिया है । यह आप मेरे साथ इनजस्टिस न करें . . . (व्यवधान) मुझे यह नहीं मालूम था कि आप शुरू से ही घंटी बजा देंगे. . . .

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); You have already taken five minutes.

SHRI SYED SIBTEY RAZI; I am not casting any aspersions but you have listened to speakers for 40, 45, 50 minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): There are many more speakers to be called. Please take one minute and conclude.

■ SHRI SYED SIBTEY RAZI: I know there are many speakers. But let me conclude my speech in my own way.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); No, you have taken six minutes already.

SHRI SYED SIBTEY RAZI: You have become so harsh...

THE VICE-CHAIRMAN DR. NAGEN SAIKIA); No, it is not me; it is the time. Please conclude.

श्री सैयद सिब्ते रज़ी : बुद्धिजीवी जो हमारा वर्ग है उसको भी थोड़ा ऊपर उठना होगा सांप्रदायिक तनावों में और उन्हें आगे आकर लोगों को, समाज को, अवाम को इस आग से दूर रहने की तलकीम करनी होगी ।

मैं आखिर में यह कहना चाहूंगा कि शिक्षा के अन्दर आज एक तनाव है, एक दूरी पैदा करने का प्रयास किया गया है । बहुत सी किताबों के अन्दर जो अकलियतें हैं, जो अल्पसंख्यक हैं उनके बारे में बहुत गलत बातें कही गयी हैं नको भी देखा जाना चाहिये ।

पी०ए०सी० के बारे में जैसा कहा गया है, निश्चित रूप से कहीं कहीं पी०ए०सी० का रोल अच्छा नहीं रहा है । और ऐसी प्रशासन व्यवस्था के ऊपर जिस पर लोगों का विश्वास न हो उसके बारे में विचार करना होगा । एंटी रायट फोर्स के सिलसिले में सरकार जो विचार कर रही है उस पर जल्दी अमल दरामद होना चाहिये । राजीव गांधी ने इस सिलसिले में एक फार्मूला दिया है । मैं समझता हूं कि वह बहुत मुनासिब फार्मूला है । सरकार को उस सिलसिले में जल्द से जल्द कदम उठाना चाहिये और कोई एक ऐसी सूरत निकालनी चाहिये, जिससे जो मौजूदा माहौल है, उसको अच्छे रास्ते पर हम ले जा सकें ।

मैं यह भी चाहूंगा क्योंकि हमारे गृह मंत्री जो हैं, उनके पास इनफर्मेशन का भी चार्ज है, टेलीविजन का ज्यादा से ज्यादा सांप्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता के सिलसिले में प्रयोग किया जाना चाहिये । सांग एंड ड्रामा डिवीजन का भी आप प्रयोग करें और वह नुक्कड़ नाटक करके लोगों को आपस में जोड़ने की कोशिश करें ।

इस वक्त ज्यादा गुस्सा करने की, तैश दिखाने की जरूरत नहीं है, बल्कि हम सब को मिलकर एक बहुत बड़ा मसला जो मुल्क के सामने है, सिरों को जोड़ कर आजजी के साथ इस झगड़े से उभरने की, इस झगड़े से ऊपर उठने की, लोगों के जज्बात का ख्याल रखने की, लोगों के अकायद के ख्याल रखने की कोशिश करनी चाहिये और मसलों का हल किसी भी सूरत से निकालने की कोशिश की जानी चाहिये ।

लेकिन अगर कुछ ताकतें मसले का हल नहीं निकालतीं, तो सरकार को बहुत मजबूत इरादों के साथ, फौलादी इरादों के साथ ऐसी ताकतों का, जो मुल्क-दुश्मन ताकतें हैं, जो हमारे मुल्क की सालमियत के लिये खतरा बन गई हैं वह, चाहे किसी पार्टी की सूरत में आ रही हों, जिस ग्रुप की सूरत में आ रही हों, अगर उन पर बैन लगाने की जरूरत पड़े, तो उन पर बैन भी लगाया जाय । तभी यह मुमकिन होगा कि हम अपने

[श्री सैयद सिब्ते रजी]

हिन्दुस्तान को बचा सकेंगे, मुल्क की जम्हूरियत को बचा सकेंगे, लोकतंत्र को बचा सकेंगे ।

ALLOCATION OF TEKE[T] FOR DISPOSAL OF GOVERNMENT LEGISLATIVE BUSINESS

THE VICErCHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Before I call the next speaker, I have to make an announcement.

I have to inform Members that the Business Advisory Committee, at its meeting held today, the 3rd January 1991, allotted time for Government legislative business as follows: —

Business	Tim e Allotted
1. Consideration and passing of'hi following; ill after these are passed by the Lck Sabha:	
(a) Til- public Liability Insurance Bill, 1990.	lhr.
(b) The jute Manufactures Dsvel pmmt Council (Amendment) Bill, 1990.	2 hts.

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—COMMUNAL. SITUATION IN THE COUNTRY—(contd.)

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA); Yes, Mr. Raflque Alam.

श्री रफीक आलम (बिहार) : उपसभाध्यक्ष जी, मैं ज्यादा वक्त नहीं लेना चाहता क्योंकि मैं बहुत दुखी हूं। आंख जो कुछ देखती हैं, लब पर आ सकता नहीं । खून, कत्ल, गारतगिरी के वाक्यात जो हुये हैं पूरे हिन्दुस्तान के ज्यादातर हिस्से में, वह इंतहाई शर्मनाक हैं और यही नहीं, मारने वाला कोई दूसरी कंट्री का नहीं– मारने वाले भी हिन्दुस्तानी, मारे जाने वाले भी हिन्दुस्तानी और करोड़ों की जायदाद का नुकसान जो हुआ, क्या यह पाकिस्तान का नुकसान हुआ या चीन का नुकसान हुआ ? यह तो आखिर भारत का ही नुकसान हुआ ।

आजादी के 43 साल के बाद हमारे हिन्दुस्तानी अपने को हिन्दुस्तानी नहीं समझे, तो इससे बढ़ कर शर्म की बात कुछ हो नहीं सकती । मुझे इस बात का दुख है कि जितने फि ि विराना फिसाद अब तक हुये एक मुहज्जब मुल्क हिन्दुस्तान में, किसी को आज तक सजा नहीं हुई । अगर सजा होती, तो यह वाक्यात नहीं होते ।

आप जानते है कि ऐसे मामले में क्रिमिनल्ज ज है, जि का कोई धर्म हीं —न वह मुसलमान है, न हिंदू, न सिख और न ईसाई है, इनका एक ह काम रहता है लूटना । इन लोगों को यह काम मिल जाता है जब ला एण्ड आर्डर खराब होता है और यह लूटते है और जलाते हैं ।

अब इस तरह से मासूम बच्चों का कत्ल करना, औरतों को जिंदा जला देना यह इन्तहाई शर्मनाक है कि आजाद हिंदुस्तान में इस तरह के वाक्यात हो रहे हैं । पता नहीं बाहर के लोग क्या समझेंगे । अभी हमारे हाशमी साहब ने कहा भी कि वह अमरीका में गये थे—हालांकि जगन्नाथ आजाद जी बहुत बड़े शायर हैं, उन्होंने कहा कि हमें शर्म महसूस हुई जब वहां के लोगों ने कहा पता नहीं सियासी ताकत को हासिल करने के लिए मजहब और धर्म को अगर हथियार बनाया जाए, तो इससे बढ़ कर मुल्क के लिए कोई शर्मीदंगी नहीं हो सकती । मेरे पास अलफाज नहीं हैं कि मैं बताऊं कि आखिर इस मुल्क को क्या हो गया है । ठीक हैं वोटर्स वो देंगे । आप अपने मेनिफेस्टो दीजिए, लेकिन वोटर्स को खत्म करके, तब आप चाहते हैं